

किताब घर

गांधी नगर, दिल्ली-110031

मकबरा

मुद्राराक्षस

प्रकाशक : किताब घर
मेन बाजार, गांधीनगर दिल्ली-110031
प्रथम संस्करण : 1986
मूल्य : पच्चीस रुपये
मुद्रक : डिम्पल प्रिंटर्स गांधीनगर दिल्ली-110031

MAKBRA (HINDI NOVEL)
by MUDRARACKSHASH Price : Rs. 25/-

प्रिय वी०के० सिंह को

1

बहुत खालीपन लगता है विल्सन को अपने इस तनहा कमरे में —इसी-लिए मन करता है कि कमरे की हवा किसी तरह वह धकेल कर कमरे से बाहर कर दे और ये दीवारें किसी खाली गुब्बारे की खाल की तरह उस से आकर चिपट जाएं !

रात की खामोशी काफी घनी हो आई। फाटक के दूसरे छोर के कमरे से अलसाती हुई, बेचैनी भरी पियानो की आवाज आ रही है। पियानो की इस सुरीली उदासी को सुनता हुआ विल्सन अन्दाज लगाता है कि मिस मेडोरा अभी जग रही है।

मैंडेलीन भी लौट आई है। वह किसी से बातें कर रही है। उस के कमरे का दरवाजा खुला, रोशनी हुई और उसका एक वाक्य सुन पड़ा: "मुझे अच्छा लगा यह जान कर कि तुम अभी जाग रहे थे, और वह भी मेरे लिए !"

जवाब आया, "नहीं लीना, मुझे आज दफ्तर का काफी काम निबटाना था, फर्म दूसरी जगह जा रही है।"

विल्सन यह आवाज पहचानता है। यह राबर्ट एल्स्टन था।

मैंडेलीन बोली: "मुझे मालूम है कि तुम मेरे लिए नहीं, काम के लिए जाग रहे थे, लेकिन फिर भी काम करते हुए तुम मुझे—मेरे बारे में जरूर सोचते रहे होगे।"

"लीना···!"

"राबर्ट तुम मुझे बहुत ज्यादा प्यार करते हो। सच राबर्ट, मुझे कुछ कम प्यार किया करो, इससे कुछ कम ! यह बहुत ज्यादा है, आखिर मैं

तो इसे निभा सकूं, तुम यह क्यों नहीं समझते ?"

"लीनी मुझे तुमसे कुछ पूछना है ! ..."

मैं जानती हूं कि तुम क्या पूछोगे ! पर फिर भी पूछो...मैं थकी हूं, कुछ सुनना चाहती हूं। नया कुछ न हो तो पुरानी बात को ही दुहरा कर काम चला लो, जैसे मैं कोई गीत गुनगुनाती हूं—बार-बार एक ही धुन-वाला गीत !"

"तुम आज भी वहां गई थी ?"

"कल भी गई थी और तुमने यही पूछा था, परसों भी गई थी और तुमने यही पूछा था और कल भी जाऊंगी और तुम यही पूछोगे और परसों भी—प्यारे एली, इस सवाल को अनन्त क्यों नहीं हो जाने देते ?"

"लेकिन क्यों लीनी ?"

"श्श्...जवाब नहीं मांगा करते ! सवाल का कौमार्य टूट जाता है।"

"लीनी...!"

"अच्छा राबर्ट, तुमने मुझे एक धमकी दी थी न ?"

एक क्षण का मौन और फिर मैडेलीन की ही हसरत भरी आवाज सुन पड़ती है : "तुमने कहा था, अगर इस बार भी तुम्हारी बात न मानी और वहां चली ही गई, तो...तो..."

"तो फिर मेरा मुंह दुबारा नहीं देखने पाओगी, यह कहा था न मैंने? —और मेरी वह बात झूठी साबित हुई ! —" राबर्ट ने घुटी आवाज में कहा।

"तुम अबोध हो एली, बहुत कमसिन !"—शब्दों ने खत्म होने के साथ ही यों झटका खाया, जैसे राबर्ट ने मैडेलीन को खींच लिया हो !

बाहर हवा हल्के-हल्के झुरझुरी लेती है। छज्जे पर फैली लता के नीले फूल कनफूलों की तरह झूलते हैं, बजते नहीं। नीली घंटियां, ब्लू बेल बजती नहीं...और हवा की झुरझुरी आती है !

विल्सन सोचता है, मैडेलीन में और कुछ नहीं, सिवा एक हल्की ऊंह के, सिवा एक उपेक्षा के, सिवा एक अनावश्यक...

मेडोरा के प्यानो बजाने की आवाज तेज हो जाती है। वह प्यानो ऐसे

बजाती है जैसे कुछ टाइप कर रही हो शायद एक कभी न लिखा गया प्रेम पत्र—

"ओ मेरे सपनों के राजकुमार !"

मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा, पर मुझे पता है कि तुम नीले घोड़े पर सवार बादलों के पार से उड़ कर आते हो ! तुम्हारे पहलू में लम्बी तलवार बजती रहती है। तुम्हारे घोड़े की जंजीर सोने की है। तुम आ जाओ, मेरे राजकुमार ! मैं मर चुकी हूं। मेरी लाश शीशे के एक ताबूत में बंद, इस जंगल में पड़ी हुई है। मैं सांस नहीं ले सकती, क्योंकि किसी ने जहरीला फल मुझे खिला दिया है। उसकी गर्मी से मेरी नस-नस सूज गई है। मेरा शव देख कर चिड़ियां सुबह-शाम रोती हैं।

"ओ राजकुमार ! यह सच है कि अगर तुम आ भर ही जाओगे, तो मेरी इस बेजान लाश में सांस लौट आएगी। इसलिए तुम आओ मेरे प्रिय !

"मेरी ऊंगलियां सर्द हो गई हैं, मुझ से और लिखा नहीं जाता।"

"तुम्हारी—
स्नोह्वाइट"

हम सब बौने हैं, विलसन सोचता है ! हम सब बौने हैं। जंगलों में रहते हैं और एक दिन देखते हैं कि हमारे बीच कोई बहुत खूबसूरत लड़की सोई हुई है, लेकिन हम बौने उसे रख नहीं पाते ! कोई चुड़ैल इसे जहर दे देती है या फिर कोई राजकुमार उसे अपने घोड़े पर बिठा ले जाता है और हम बौने हाथ मलते रह जाते हैं !

बच्चे उन्हें हम्टी-डम्टी कहते हैं और वे इस नाम से पुकारे जाने पर खुश भी होते हैं। मिसेज हम्टी-डम्टी रात को झाड़ू पर सवार होकर छज्जे पर टहलती है। उस का जिस्म बैलून की तरह फूला है। उस की नाक पर एक मस्सा भी उगा हुआ है। वह सारे दिन कपड़े धोया करती है या फिर नहाया करती है। क्योंकि उसे शक होता रहता है कि कोई छिपकली उस के ऊपर गिर गई है या फिर कोई बिल्ली उसके कपड़ों को गन्दा कर गई है।

गन्दी है—सारी दुनिया गन्दी है ! हर चीज पर झाड़ू देने की जरूरत है या फिर हर चीज गन्दगी का नमूना है और हर चीज को झाड़ू मारने की जरूरत है !

मिसेज हम्टी-डम्टी अपनी बेटी मेडोरा को भी इसी लायक समझती हैं क्योंकि उन्होंने चुरा-चुरा कर उसकी डायरी में टंकी बातें पढ़ी हैं और बार-बार अपनी नाक के मस्से को जोर-जोर से खुजाया है। उन्हें लगता है, जैसे मैडोरा प्रेम-पत्रों का एक पुराना पड़ गया बड़ल है। इसे झाड़ू मारे बगैर क्या घर में रहा जा सकता है ?

प्यानो की खिल-खिल थकती जाती है। हवा को झुरझुरी आती है। नीली घंटियां भी बहुत उकता जाती हैं। नीली घंटियां सोना चाहती हैं पर मेडोरा उन की नींद में खलल डालती है। मिस मेडोरा प्रेम-पत्रों का एक बण्डल है और प्रेम-पत्र नींद में खलल डालते हैं। यों मेडोरा का खुद भी यही खयाल है। फिर भी वह लिखती है। प्राय: जब कोई नहीं होता और अक्सर कभी कोई नहीं होता, जिसे कुछ लिखा जाय—तो मेडोरा अपनी डायरी को लिखती है, जैसे डायरी किसी स्नोह्वाइट की कहानी के राजकुमार का घोड़ा हो और मेडोरा राजकुमार की गैरहाजिरी में उसे घास खिलाती हो !

पर घोड़े को घास खिला कर जी नहीं बहलता; क्योंकि घोड़ा घास खाकर हिनहिना सकता है, प्रेम-पत्र नहीं पढ़ सकता। मेडोरा की घुटन इसलिए उसके नन्हें और मासूम-से दिल में मच्छरों की तरह जमा हो कर अण्डे पर अण्डे देती जाती है। मच्छरों के एक बड़े झुण्ड की तरह घुटन मेडोरा के ऊपर मंडराती है और जब मेडोरा अपनी डायरी सामने रखती है, तो देखती है कि घुटन भरी बातों के झुण्ड बना-बना कर मच्छर आते हैं और उसकी डायरी के पन्नों से चिपट जाते हैं।

मेडोरा का भाई राबर्ट एल्स्टन मैंडेलीन के लिए अब चाय बना रहा है और मेडोरा की मामा, मिसेज हम्टी-डम्टी को यह बेहद नागवार गुजरता है। विल्सन सुनता है कि वह छज्जे पर झाड़ू लिए हुए बड़बड़ा रही है कि जवान बहन होते हुए भी एली जरा-सा भी इस बात का खयाल नहीं करता कि उसकी बहन पर क्या असर पड़ेगा ! आखिर वह

भी समझती ही होगी कि उस का भाई क्यों उसके लिए चाय बना रहा है ?

मेडोरा लिखती है : "बड़ी घुटन है ! जैसे मैं किसी तंग कोठरी में कैद हूं। मेरे हाथ-पांव बांध कर किसी ने मेरे मुंह में कपड़ा ठूंस दिया है। बन्द कोठरी की दीवारें सीली हुई लकड़ी की आग की तरह धुआं दे रही हैं। धुंआ भरता जा रहा है···और कडवाहट से आंखों की पुतलियां छिलने लगती हैं !"

स्नोह्वाइट को बहुत घुटन लगती है, क्योंकि नीली घंटियों के बजने के बावजूद आवाज नहीं निकलती और घोड़ा घास खाकर भी प्रेम-पत्र पढ़ नहीं पाता। उस की मामा झाड़ू पर सवार घूमती है। मामा क्यों झाड़ू पर सवार घूमती है उसके पीछे ! मेडोरा तो बीमार भी रहती है। उसके स्तनों और पिडलियों में बेहद दर्द रहता है। मेडोरा को प्रायः पियानो बजाते-बजाते खांसी आ जाती है। मामा हठ करती है कि वह कफ-सिरप पिया करे। आखिर वह क्यों नहीं समझती कि सिरप से कुछ नहीं होगा, क्योंकि खांसी गले से नहीं उठती, वह हसरतों से उठा करती है !

मामा जानती है, मामा सब जानती है—क्योंकि वह अपनी बूढ़ी और अनुभवी आंखों से कभी धोखे की उम्मीद नहीं करती। लेकिन इसके बावजूद वह मेडोरा पर झाड़ू लेकर सवार रहती है; क्योंकि उसे खांसी से नफरत है। कफ में बीमारी के कीटाणु रहते हैं। मेडोरा खांसती है, तो ऐसे जैसे वह कोई जख्म पोंछी हुई रूई हो और चिपकती उड़ रही हो ! उन पर झाड़ू मारे बिना मामा से बैठा नहीं जा सकता।

"मुझे तेरा यह रवैया पसन्द नहीं है !"—मामा कहती है।

मेडोरा की डायरी बन्द हो जाती है। वह उठ कर मामा की तरफ पीठ किये खड़ी हो जाती है।

"मुझे यह कतई नापसन्द है ! बिल्कुल नापसन्द है कि तू मेरी बातों का जवाब न दे !"—मामा चिंघाड़ती है।

"आखिर कोई बात भी हो !"

"अच्छा ! तो तू जवान भी लड़ाएगी मुझ से ! इस कदर सिर-चढ़ी हो रही है तू ! हाय रे मेरा भाग्य ! कल की छोकरी और मुझे उलट कर जवाब दे रही है।"

मेडोरा मुंह में रूमाल दे कर सुबकना शुरू कर देती है। मामा इस बात से और ज्यादा चिढ़ती है । मामा सारे कमरे का चक्कर काटती हुई चिल्लाती है और जोर-जोर से घोषणा करती है कि मेडोरा जरूर किसी लफंगे के साथ भाग कर मुंह काला करना चाहती है। हाय, यह बेशरमी जमाने की !

मेडोरा रोती रहती है और मामा बाथ-रूम का दरवाजा बन्द कर टब में नंगधड़ंग नहाती है—खूब चौड़े-चौड़े कूल्हे रगड़-रगड़ कर, जैसे खांसी के कीटाणुओं ने उसके साथ जबर्दस्ती बाल-डान्स किया हो और उसके कूल्हों पर कीटाणुओं के पंजों की छाप पड़ गई हो ! नहाते-नहाते भी वह चीखती जाती है और गुस्से में टब में करवट लेती है, तो सारा पानी झमाके के साथ टब से बाहर आ जाता है।

मेडोरा डेस्क को छोड़ कर सोनेवाले कमरे में पलंग के तकिए पर मुंह देकर रोती है। एलस्टन उसे तसल्ली देने की कोशिश करता है। बाथ रूम की झिरी से हल्की चीख मामा की आती रहती है, जैसे नेपथ्य बोल रहा हो !

मेडोरा जूलिएट की तरह गमगीन है—लेकिन एलस्टन रोम्यो नहीं है !

शायद यह बात सही नहीं है; क्योंकि मैडेलीन के लिए एल्स्टन जब चाय बना रहा था तब वह रोम्यो ही था; लेकिन मेडोरा को जब वह अधूरी तसल्ली देने की कोशिश करता है, तो वह बेकार जाती है क्योंकि एल्स्टन ऐसा रोम्यो है जिसके लिए जूलिएट दूसरी है और मेडोरा ऐसी जूलिएट है, जिसके काम वह रोम्यो नहीं आ सकता।

डूप्लीकेट ! रोम्यो और जूलिएट के कितने ही डूप्लीकेट हो गये हैं और इसीलिए सब एक-दूसरे के लिए अजनबी हैं; क्योंकि हमशक्ल आपस में खो जाते हैं।

नीली घंटियां इसलिए बजती नहीं कि उन्हें हमशक्ल रोम्यो और

जूलियटों की भीड़ में सब कुछ असंवेद्य लगता है। निर्वेद में घंटियों की ध्वनि गूंजती नहीं।

नेपथ्य से मामा चीखती रहती है। नेपथ्य से ही विल्सन सुनता है कि एली मेडलिन को धमका रहा है। नेपथ्य के ही किसी राजकुमार के इन्तजार में मेडोरा खांसती है। नेपथ्य में ही विल्सन जगह की तंगी के अभाव का शिकवा करता है। सब नेपथ्य ही नेपथ्य सही है जैसे !

जैसे कोई विराट् रिहर्सल हो रही हो—कभी किसी मंच पर न आ पाने वाले नाटक की ! मेडोरा, मैंडेलीन, मामा, हम्टी-डम्टी, एल्स्टन, विल्सन—सब किसी नाटक की भूमिकाओं की रिहर्सलें हैं— जो गलत अभिनय और अशुद्ध संवादों के लिए एक-दूसरे को टोकते हैं···

नीली घंटियां हिलती हैं और एक जोरदार, चौंका देने वाली झनकार गूंजती है। मिस्टर हम्टी-डम्टी अपने कमरे से निकल कर छज्जे की तरफ भागते दीखते हैं। मेडोरा की मामा ने खाने की प्लेटें स्टेनलेस स्टील के बर्तनों के समेत उन पर फेंक मारीं। मिस्टर हम्टी-डम्टी बड़े क्षुब्ध हैं, पर वे मामा से बिना कुछ भी कहे बाहर निकल जाना चाहते है। मैंडेलीन का कमरा सामने देखकर वे चाहते हैं कि मैंडेलीन को अपने दिल की बात कहें और कोशिश करें कि मैंडेलीन उन के इस हाल पर सहानुभूति जाहिर करे।

दरअसल मिसेज हम्टी-डम्टी को पता चल गया कि उनका खाविन्द स्वर्गीय सौत का फोटो मढ़ाने के लिए ले गया था।

मिस्टर हम्टी-डम्टी अपनी पतलून की हिप पर चिपक गए सब्जी के शोरबे को पोंछते हुए सीधे मैंडेलीन के कमरे की ओर घूम पड़ते है। नीली घंटियों की लतर के बीच से अपनी गर्दन बचा कर धड़ समेत कमरे में प्रवेश करते हुए वे कहते हैं—"शाम मुबारक हो !"

मैंडेलीन जवाब देती है : "आपको भी··· आइए बड़ी खुशी हुई !"

"मुझे भी बड़ी खुशी हुई !"—मिस्टर हम्टी-डम्टी ने इधर-उधर देख कर कहा—"आपके कमरे में आ कर न जाने क्यों लगता है कि जैसे मैं साक्षात संस्कृति के घर ही आ गया हूं !"

"आपकी उदारता है ··चाय लेंगे ? आप खड़े क्यों हैं ? बैठिए !"

"जी हां, जी हां, धन्यवाद ! और अब मैं इसके लिए क्या कहूं कि आप की चाय के स्वाद ने तो मुझे बांध ही लिया है।"

"इसे तो मैं यहीं नीचे से खरीदती हूं।"

"खरीदता तो मैं भी वहीं से हूं, पर बनाने वाले हाथ में भी तो अन्तर होता है। सच कहता हूं, न जाने क्यों मेडोरा की मामा की चाय बड़ी कड़वी लगती है !"

मैडेलीन चेहरे से अफसोस जाहिर करती है।

हो भी क्या सकता है इसके अलावा ! चाय पीने के बाद थोड़ी देर बैठ कर वे उठ जाते हैं। मैडेलीन देखती है कि उन की पतलून पर लगी सब्जी के शोरबे का पीला निशान उस के सोफे पर छप गया है। वह पूछना चाहती है, पर तभी वे हकबका कर एक खोखली दयनीयता दिखाते हुए मांफी मांगते हैं और एकबारगी ही उसके कमरे से बाहर चले जाते हैं !

2

विलास मोहन दत्तो—यानी विल्सन दत्तो ! विल्सन का वावा गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर का पड़ोसी था। रवीन्द्रनाथ जब स्कूल में पढ़ते थे तब भी विल्सन का वावा रजनी वगान के तालाव में केंकड़े पकड़ा करता था; और जब रवि वावू पोएट हो गए तब भी विल्सन का वावा वही करता था। विल्सन अपने छुटपन से लेकर कलकत्ता चल खड़े होने तक दिन में कम से कम तीन वार वावा की इस वात को स्वीकार करता रहा है कि उसका वावा ' ।

वावा ने रवि ठाकुर जैसे महान उद्यमी और महत्वाकांक्षी के जीवन का परिणाम देखा है; पर उन का अपना जीवन वेहद द्वन्द्वहीन और शान्त वीता, लेकिन इससे होता क्या है ? रजनी वगान के पोखर को रजनी वावू ने प्रोटेक्टेड पौंड वना दिया, तो वावा ने मां-काली का छापा ओढ़कर दक्षिणेश्वर की राह ली। वोले —“जीवन निष्कलंक वीता है, अव अन्तिम दिन मां के चरणों में पुण्य कमाएंगे !”

दीखने लगा, गोकि उसका पति तीन साल से जो हिन्दुस्तान से गया तो चिट्ठी तक नहीं आयी। खोखा बिल्कुल गावदी निकला। बोऊ मां चार-पांच हजार के जेवर के साथ उसे लेकर कलकत्ता चलना चाहती थी—पर खोखा ऐन मौके पर अकेला खिसक लिया।

लेकिन यह अकेला हो कर भागना ही उस के लिए सबसे बड़ा दुर्भाग्य बन गया। अकेलापन उस के जीवन की परछाईं बन गया। कलकत्ता आने के सालों बाद तक वह यों भटका जैसे राजस्थान में हिरन पानी के लिए भाग रहा हो, लेकिन पानी·· !

किसी तलाश में ही वह ईसाई हुआ था। उस वक्त वह वेलिंगटन के एक रेस्तरां में बिल की पर्चियां बनाने लगा था और वहीं उसकी नजर से लारा चार्ली गुजरी थी। एक दिन बात हुई, दूसरे दिन शादी तय हो गयी और तीसरे दिन वह ईसाई हो गया और चौथे दिन—चौथे दिन से फिर पांचवें, फिर छठे, फिर सातवें और तब से बराबर वह पानी की तलाश में भटकता रहा; क्योंकि लारा चार्ली शाम-बाजार की बिकाऊ लड़की थी जो चौथे दिन सुबह ही किसी चाय के बगान में आसाम चली गयी। विलास मोहन दत्तो विल्सन दत्तो होकर भी सिर्फ रेगिस्तान में भटकता रहा।

मगर फिर विल्सन को यह भी लगा कि बिलू खोखा का यह संस्कार होने के बाद उसके बुरे सपने समाप्त हो गए हैं। हो सकता है कि यह उम्र का तकाजा हो, पर विल्सन को अब पहले से ज्यादा सुकून हैं। अब वह सोता है, तो उसे नहीं लगता कि उसके शरीर पर असंख्य केकड़े चिपट गये हैं। अब रात को उसे यह नहीं दीखता कि घोषाल बाड़ी की बोऊ मां का पेट बैलून की तरह भयानक रूप से फूल कर फट गया है और बोऊ मां की आंत उसके गले में सांप की तरह लिपट कर उस का दम घोट रही है, इसीलिए विल्सन अब कुछ ज्यादा शान्त है; इसीलिए वह कभी-कभी जब शाम की शिफ्ट में रेस्तरां से छुट्टी पाता है, तो एलिफन्टन में या कभी-कभी लाइटहाउस में ह्विस्की पीता है। पर विल्सन पीता कम है पीने का एहसास ज्यादा करता है। कभी-कभी वह महज रम का एक पेग पीता है—फिर लौट कर हर आदमी से बात करने की कोशिश करता है, बात करते वक्त

आंखें चढ़ा लेता है, आवाज कंपाता है और जबरन जाहिर करता है कि वह नशे में है !

विल्सन महसूस करता है कि जैसे बोतलें भी नशे में हैं। अर्द्ध गोलाकार काउण्टर पर रखी बोतलें नशे में बेतहाशा डूब गयी हैं।

नशा बहुत बुरी चीज है। वह बोतलों को पागल कर देता है और रूबाई को कोई पाइप में तम्बाकू की तरह भर कर पी जाता है, एक खर-खराते गले का गीत मकड़ी के लिबलिबे तार की तरह उड़ता है, जिसमें चिपक-चिपक कर बोतलें गिल-बिलाती हैं। मकड़ी का तार रबाब की तरह ठुनकियां देकर बजता है और बोतलें लड़खड़ाने लगती है—जलतरंग की तरह खन् खन् खन्···!

यह धुन बड़ी अच्छी है—

'किस मी क्विक् एण्ड गो !'

स्प्रिंगदार दरवाजा खुलता है और धपाक से बन्द हो जाता है। चारों तरफ जड़े शीशों में एक सुर्ख पोशक पहने सुनहले बालों वाली औरत की तस्वीरें झलक जाती हैं। वह मैंडेलीन है।

मेज पर झुका हुआ नाटा बूढ़ा उमस कर मैंडलीन को देखता है और ग्लास की पीली शराब का एक घूंट लेकर फिर मेज पर औंघ जाता है। मैंडेलीन थकी-थकी-सी विल्सन की मेज की तरफ आती है और एक कुरसी खींच कर बैठ जाती है।

वह थकी है और पता नहीं क्यों उसकी यह थकावट विल्सन को गलत लगती है, जैसे किसी बच्चे ने किसी आदमी की शक्ल बनायी हो और सिर सीधे रानों के ऊपर ही जोड़ दिया गया हो और हाथों में पांच की जगह आठ-आठ उंगलियां बना दी हों। थकावट गलत है ! या तो मैंडेलीन को रबाब के साथ नाचना चाहिए या प्रार्थना करनी चाहिए—'आया है, ईशू आया है !'

अधेड़ बेयरा काउण्टर पर झुका हुआ नीग्रो बार्टन की बात कर रहा है, जिसने नशे में दीवाल पर बने शेर पर बाक्सिंग करके अपनी उंगलियां तोड़ लीं आज ! बार्टन अफसोस के साथ कह रहा था कि वह लड़ाई पसंद

नहीं करता "इसीलिए शेर को सबक देना चाहता था और यह अफसोस की बात है कि शान्ति के लिए बॉक्सिंग करने पर उसकी उंगलियां टूट गयीं मैडेलीन चुपचाप बेयरे की बात सुनती है। विल्सन के पीने के निमन्त्रण से राजी नहीं। वह कहती है कि वह बहुत पी चुकी है।

विल्सन सोचता है कि उसे बात करनी चाहिए, क्योंकि इस वक्त और कुछ नहीं किया जा सकता। चूंकि यह काम करने का वक्त नहीं है इसीलिए वह कुछ निष्काम चर्चा करना चाहता है। विल्सन ने कहा—"तुम सुन्दर हो!"

मैडेलीन बोली—"हां और गर्भवती भी!"

विल्सन ने पूछा—"अपने बच्चे का क्या नाम रखोगी?"

उसने कहा—"अगर वह लड़का हुआ तो चाहती हूं कि मैं उसे पारफीरो नाम दूं! तुमने कीट्स की कविता 'ईव् आव् सेण्ट ऐग्नीस' पढ़ी है?"

"नहीं"—विल्सन ने बड़ी स्वाभाविकता से कहा।

"उस से कोई फर्क नहीं पड़ता। पारफीरो मैडेलीन का प्रेमी था। मैडेलीन भी उसे प्यार करती थी। इसीलिए कि मैं अपने बच्चे को प्यार कर सकूं और मेरा बच्चा मुझे, मैं उसका नाम पारफीरो रखूंगी, मेरा नाम मैडेलीन जो है!"

उस के गुलाबी होंठ भिच आये। उसने मेज पर अपनी कुहनियां टिका लीं। उन की नीली आंखों के पोटे भारी हो गये। वह एक हसरत की कंदील की तरह जैसे छत की कडी से झूलने लगी। फिर एक हसरत भरी उसांस लेकर वह बोली—"मैं चाहती हूं, मैं चाहती हूं बस मैं चाहती हूं!"

वह खामोश हो गयी। बूढ़ा आदमी अपने को धोखा देने के लिए अपने ग्लास में सोडा मिला रहा था। बोतलों को अब जैसे किसी इलहाम का इन्तजार हो।

मैडेलीन चुप हो गयी। ठहर कर उसने एक पेग रम मांगी। विल्सन ने कहा—"तुम बहुत पीती हो!"

वह बोली—"हां यह बुरा है!"

विल्सन ने पूछा—"तब क्यों इतना पीती हो?"

वह चुप हो रही। विल्सन ने फिर पूछा, तो बोली —"क्या बात कह डालना ही काफी नहीं है ? बात के जवाब का इन्तजार किसलिए ? पूछो नहीं, बात करो।"

विल्सन चुप हो गया। थोड़ी देर बाद जैसे अनजाने ही वह बोला— "मेरी भी कभी हसरत थी कि मुझे एक मैडेलीन मिले !"

वह बोली—"हां, मैं पारफीरो चाहती थी, जो मुझे मिल गया। मैं गर्भवती हो गयी तो मैंने यह भी जानने की कोशिश न की कि उन में से वह कौन-सा था···क्योंकि पारफीरो मैं पा गयी थी। मां बच्चे को अपनी कल्पना के अनुसार बना सकती है न ? वे सब तो मेरी कल्पना के पारफीरो नहीं थे। शिशु को मैं अब अपना सही पारफीरो बना सकूंगी, इसीलिए तो मैं उन्हें भूल गयी। अब मेरा पारफीरो जो मुझे मिल गया।"

विल्सन ने मुस्करा कर कहा—"पर यह तुम्हारा बच्चा लड़की भी हो सकता है।"

उसने अपने हाथ सीने पर कस लिए। आवाज जरा नम हो आयी। बोली "मैं चाहती हूं,···मैं चाहती हूं, पर—अगर वह लड़की हुई, तो मैं उसे मैडेलीन ही कहूंगी और उसके लिए मैं वह बुढ़िया बन जाऊंगी, जो उसके पारफीरो को सुरक्षित उसके कमरे तक पहुंचा दे।"

"यह व्यभिचार कहा जाता है !" विल्सन ने बड़े अफसोस के साथ सम्मति जाहिर की।

रम का एक पेग और सोडे की खुली बोतल बेयरा रख गया। बोतल की तली से बुलबुले वमन से उफनते रहे। उसने बिना सोडा मिलाये एक सांस में ग्लास की शराब पी डाली। ग्लास रख दिया। रम के कतरे रेंग-रेंग कर तल पर इकट्ठे होने लगे। वह बोली—"हां यह व्यभिचार है ! मुझे अफसोस है कि मैडेलीन और पारफीरो से सहानुभूति रखना व्यभिचार है, मुझे अफसोस है, मुझे अफसोस है, मुझे अफसोस है···!" वह गुनगुनाती रही, फिर सहसा बोली—"मैं तुम्हें मैडेलीन की कहानी सुनाऊं ?"

"सुनाओ !"—विल्सन ने कहा। इसी वक्त हाल में नये सिरे से 'आन नेवर स्माइल्स' वाला गीत बजने लगा। विल्सन कुछ कहने जा

रहा था, पर मैडेलीन ने जोर से श्‌···कह कर उसे रोक दिया। अपनी हथेलियों को ठोड़ी के बीच दबा कर वह ज्यादा से ज्यादा टेबल पर झुक आयी। शायद उसके सीने की धड़कन से मेज में स्पन्दन हुआ हो! उस की मुलायम गर्दन की पेशियां कांपने लगीं। वह गुनगुनाई—"आल नेचर स्माइल्स···!"

फिर वह चौंक कर बोली—"अच्छा तुम्हें मालूम है सारी दुनिया क्यों मुस्कराती है और किस बात पर मुस्काती है?"

विल्सन उल्लुओं जैसी निगाह से निरुत्तर उसे देखता रहा। वह बोली—"दुनिया सिर्फ यह जांचने के लिए मुस्कराती है कि कहीं वह मुस्कराना भूल तो नहीं गयी! अच्छा क्या तुम मुझसे नाचने के सौभाग्य की याचना नहीं करोगे?"

"मुझे खुशी होगी—"

"मुझे भी खुशी होगी—" मैडेलीन ने कहा—"क्योंकि तुम से मेरा परिचय भर ही है, मित्रता नहीं। मित्रों के साथ नाचना मुझे नहीं आता। तुम जानते हो मैं किसी पारफीरो की तलाश करती रही हूं, लेकिन नाचते-नाचते मैं उसे अपने दिल पर दबता महसूस करना चाहती हूं, अपनी कमर और पेड़ू पर नहीं!"

जीने पर चढ़ते हुए विल्सन ने पूछा—"पर तुमने अपनी वह पारफीरो वाली कहानी नहीं सुनायी।"

वह बोली—"मेरा हाथ पकड़ो!" फिर वह किसी फिल्म की धुन गुनगुनाती हुई विल्सन के कन्धे से टिक गयी, ऐसी निस्संग जैसे वह विल्सन नहीं कोई बैसाखी हो, और वह उस पर टिक कर भी उसके लिए स्पर्शातीत हो। वह एक बैसाखी की तरह विल्सन को टेकती हुई जीने पर चढ़ती रही।

विल्सन ने पूछा—"तुमने वह कहानी तो फिर भी नहीं सुनायी?"

वह रुक गयी। उसकी ओर देखकर मुस्करायी। अंगूर के दानों जैसे होंठों में एक सन्धि फूट आयी। नीली आंखों से एक अधूरी, अलसायी-सी झपकी लेकर उसने विल्सन की आंखों में देखा—ऐसे जैसे तनहा कमरे में

कोई बिस्तरे के किसी दबे हुए शिकन भरे तकिए को देख कर किसी की याद में मुस्कराता है! उसने विल्सन को यों देखा, जैसे वह तनहा बिस्तर पर पड़ा एक तकिया भर ही हो, जिस पर किसी पारफीरो की नींद का निशान हो। पारफीरो कहीं चला गया, मैडेलीन तकिए को देखकर मुस्करायी। विल्सन सहसा उद्वेलित हो उठा, अपने को साधने के लिए उसने फिर पूछा—"तुमने वह कहानी नहीं सुनायी?"

वह सहसा उसके कन्धे पर अपना चमकीला नाखून मार कर बोली—"मान लो कहानी मैंने तुम्हें सुना दी। अब तुम वही कुछ करो, जो कहानी सुनने के बाद करते।"

विल्सन को लगता है कि जैसे सहसा वह किसी गलत सांचे में उतर आया। किसी प्रेम-कथा को सुन कर क्या करना चाहिए? वह प्रेम-कथा अगर कोई मैडेलीन सुना रही हो, तो उस का क्या अर्थ होता है? एकबारगी ही विल्सन जैसे भीतर-ही-भीतर शिथिल-सा हो गया। उसके व्यक्तित्व की सीप में कोई दरार झांकने लगी। विल्सन—विलास बाबू—और फिर सहसा बिनू खोखा···उसकी सीप में केंकड़े की तरह घुस कर पैठ गया! केंकड़े बड़ी सीपों के अन्दर जबरदस्ती अपना घर बना लेते हैं और बिनू खोखा के अवांछित प्रत्यागमन ने विल्सन के अन्दर में एक टीस जगा दी—बोऊ मां—पोखान वाड़ी की बोऊ मां, जिन्होंने उसे पहले-पहल चण्डीदास की प्रेम-कथा सुनायी थी; और···और बिनू खोखा ने देखा था कि बोऊ मां के आंचल के नीचे कोई नशीला बादल जैसा उमड़ रहा है और उसी बादल के नशे में बोऊ मां खोखा के लिए एकान्त में बोऊ दी हो गयी और उसी बादल की चमकती हुई बिजली की कड़क से डर कर बिनू खोखा न जाने कैसे रोने लगा! शायद उसे मां की याद आयी हो, शायद उसके पिता का अकाल वैराग्य उसे सता गया हो, शायद—बिनू खोखा की कोई चिर-उदासी ही रुलाई बन गई हो और बोऊ दी ने आखिर क्यों उसे इस तरह सीने से लगा कर चुप कराया था? वह चण्डीदास की कहानी सुन कर उन लोगों को क्व याद करना चाहता था, जो उसने अपने अन्दर में घुल-घुल कर···!

किसने बोऊ मां को बताया कि वह इन सब बातों को जानता नहीं था ! वह एक-एक बात जानता था पर बोऊ मां ने जब उसे तमाम गोपनीय कामों से परिचित करा दिया, तो बिलू खोखा को लगा कि वह सब कुछ भूल गया। जो हुआ सिर्फ वही उसके लिए अनिर्वचनीय नहीं हो गया, बल्कि जो वह पहले जानता था वह भी भूल गया। बोऊ मां ने जिस रात उसे रांधना-घर में ले जा कर कांपते हुए हाथों से दो पन्तुए दिये, उस रात वे कैसी बुरी तरह महज बाबू की बैठक से आयी खांसी की आवाज से डर कर भागी थीं और फिर वह पुकुर के किनारे सियारों की आवाज से सहमता हुआ, कितनी देर अन्धेरे में छुपा रहा था—कितनी देर—शायद उस पहले भय ने उसकी याददाश्त का एक हिस्सा भूत की तरह खसोट कर खा डाला था ! फिर हर रोज उसके बढ़ते जाने वाले भय और घोपाल बाबू की लाल-लाल आंखों ने धीरे-धीरे उसके जेहन को बुरी तरह नोंच कर खा डाला। उसकी सारी संवेदनाएं हड्डियों के ढांचे की तरह डरावनी हो गयीं। वह खुद अपनी संवेदनाओं से भूत की तरह डरने लगा।

इसके बाद बिलू खोखा डर कर सहसा भाग खड़ा हुआ। बोऊ मां अपने जेवरात सहेजती रही और खोखा के आने का इन्तजार करती रही, और बिलू खोखा कलकत्ता भाग आया। पर बिलू खोखा को अरसे तक इसीलिए नाइटमेयर आते रहे और बिलू खोखा कंकाल वाले भूत से डरता रहा। बिलू खोखा का कंकाल, कंकाल ही रहा, उस पर मांस कभी नहीं चढ़ा। उसे यह भी निश्चित नहीं मालूम था कि वह अपने उसी भय की गुफाओं में अपना पुंसत्व हार गया है क्योंकि उसकी संवेदनाएं उसी के लिए मांसहीन पिंजर हो गयी थीं। इसीलिए तो वह फिर प्यासा भटकता रहा, उसे कौन बताए ? वह खुद यह बात नहीं जानता और बराबर भटकता रहा है। भटकन से कभी वह ऊबता है, तो अपने पांवों में खुद ही अपने पंजे जकड़ कर अपने को रोकने की कोशिश करता है। वह अनाप-शनाप जगहों पर बैठा रहता है, ऊटपटांग बातें सोचता-बोलता है और थोड़ी-सी शराब पीकर बहुत-से नशे का अभिनय करता है।

मैंडेलीन इसीलिए शायद उसे लकड़ी की बैसाखी अथवा रूई का तकिया भर समझ कर मुस्कराई हो ! हाल में गाना बदल गया है—

'ड्रीम्स काल मी ओवर ए रोज टिंटेड सी'—सपने मुझे गुलाबी सागर के ऊपर बुलाते हैं !

सपने बुलाते हैं—नहीं, कोई दहशत बुलाती है। मैंडेलीन ने कहा था —"मान लो मैंने तुम्हें वह कहानी सुना दी। अब तुम वही करो जो कहानी सुनने के बाद करते !"

क्या करता वह कहानी सुनने के बाद? वह क्या करता? करने का मौका उसे कब मिला? जो कुछ हुआ वह बोऊ मां ने ही कहानी सुनाने के बाद किया और उस के बाद से खोखा सब कुछ भूल गया। जो कुछ भी करने की जिज्ञासा व्यक्त होती है, वह सब दहशत ने नोच कर खा डाली। बिलू खोखा ने अपने टूटे हुए घोंघे की मरम्मत की। घोंघा फिर तैयार हो गया—वह विल्सन दत्तो हो गया पर क्या वह इस योग्य हो सका कि उस घोंघे में रहने वाले जीव पर मांस चढ़ा सके? तब! बिना मांस-पेशियों के हड्डियां खिचेंगी कैसे? कैसे वह कुछ करेगा?

नाचते-नाचते विल्सन मैंडेलीन से पूछता है—मैं तुम्हें दो हफ्ते से देख रहा हूं। तुम बहुत पीती हो। तुम्हारी वह सुर्ख हो उठने वाली उदासी मुझे बड़ी हसीन लगती है।"

"हां, मेरी इच्छा रही है कि मैं यह दर्द किसी अंगूठी में जड़ कर किसी को भेंट कर दूं।"

"मैं वह अंगूठी पाता, काश!"—विल्सन लम्बी सांस लेकर कह उठता है।

"अपने पदन्यास का ख्याल रखो!" मैंडेलीन एक व्यंग्यभरी चेतावनी देती है। विल्सन दोबारा उस कीड़े की तरह गिर जाता है, जो किसी खूबसूरत शीशे पर चढ़ने की कोशिश कर रहा हो!

सहसा मैंडेलीन जैसे किसी सनकी की तरह चौंकी और बोली: "यह सब व्यर्थ है! नीचे चलो (बैठकर मैंडेलीन और पारफीरो की कहानी का मजा लिया जाय।"

बार से बूढ़ा उठकर जा चुका है। बोतलों को शायद नींद आ रही है और मैंडेलीन पारफीरो की कहानी ऐसे सुना रही है, जैसे बस में सफर करते या किचेन में सूप तैयार करते हुए स्वेटर बुने जा रही हो। शब्दों के

अनायास फंदे एक घटना से दूसरी घटना की तीलियों पर उतरते-चढ़ते जाते हैं। विल्सन प्लास्टिक की तीली की तरह अपने को महसूस करता है। कहानी का ऊन उंगली के खिचाव से खुल-खुल जाता है और शब्दों के फंदे उस पर चढ़ते हैं, उतर जाते हैं—

"चारों तरफ बर्फ गिर रही थी। पूजा करते हुए बूढ़े की उंगलियां माला की गुरियों पर जमी जा रही थीं, ठिठुर कर। चारों ओर धुंधली नीली रोशनी में पेड़ों की काली ठिठुरी छायाएं और किले की नीचे की मंजिल की खिड़कियों से छनती हुई पीली रोशनी! पारफीरो सहमता हुआ किले के करीब खड़ा था। अन्दर दावत चल रही थी, गाना-बजाना हो रहा था। मैंडेलीन की बूढ़ी आया पारफीरो को देख कर डर गयी। उसने पारफीरो से भाग जाने को कहा, पर पारफीरो ने जवाब दिया कि वह मैंडेलीन को देखे बिना मर जाना पसन्द करेगा। पारफीरो के परिवार से मैंडेलीन के परिवार की खूनी दुश्मनी थी।

"वह रात थी सेण्ट-एग्नीस की। कहते हैं कि सेण्ट एग्नीस की रात अगर कोई कुमारी प्रेमिका एकान्त कमरे में उपवास करके लेटे, तो आधी रात को उसे अपने प्रियतम की छवि दीखती है! मैंडेलीन उस रात जलसे में अधिक न ठहर सकी। लोगों के नाचने के निमन्त्रण को शिष्टता के प्रतिकूल अस्वीकार करती हुई वह जल्दी से जल्दी अपने कमरे में आकर लेट गयी।

"फिर—फिर कुछ नहीं हुआ। बुढ़िया पारफीरो को छुपा कर मैंडेलीन के पास ले गयी और उसी बर्फीली, तूफानी रात में वे झरोखे से कूद कर कहीं भाग गए! बुढ़िया ने सर्द उंगलियों से आंसू पोंछते हुए कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया···!"

फिर मैंडेलीन एक झटके से रुक गयी, जैसे चींटियों की कतार रेंग रही हो और अचानक उसके बीच कोई एक बूंद फिनायल डाल कर उस पंक्ति को तोड़ दे। उसने कहा—"जानते हो ये कहानियां क्यों सुनायी जाती हैं?"

विल्सन ने निरुद्देश्य ही सहमति में सिर हिला दिया!

"लेकिन यही मूर्खता है! प्रेम-कहानियां इसलिए नहीं दुहरायी

जातीं कि उन्हें सुन-सुन कर लोग मुहब्बत करने पर आमादा हो जायं, बल्कि इसलिए कि मुहब्बत के ये जज्बात बार-बार दुहराये जाकर ज्यादा चले हुए पुरजे की तरह घिस जायं और इन्सान को राहत···"

फिर वह खुद ही अपनी बात काट कर बोली—"पर···पर किसी कहानी का मतलब ही क्यों खोजा जाय ? कहानियां महज वक्त काटने का तरीका होती हैं, वक्त—जो जिन्दगी की लम्बाई होती है···"

"तुम फिर भी कहानियों को तर्कसिद्ध करती जा रहीहो !" विल्सन ने काफी देर के बाद खामोशी तोड़ी।

मैडलीन ठठा कर हंस पड़ी ! और हंसती गयी। डगमगाते पैरों से उठी और कांपते हाथों से उसने अपने सुर्ख फ्राक की शिकनें ठीक कीं और बोली—"अच्छा गुडनाइट !"

मैडलीन चली गयी और उसी के साथ लगा उसकी हंसी ने कहानी के स्वेटर का कोई फन्दा उड़घे दिया ! और सारा स्वेटर धीर-धीरे खुलने लगा। अलसा कर विल्सन उठा, तो अल्मीरे की तरफ लौटती बोतलें उसे बहुत मायूस लगीं और हॉल से धीरे-धीरे उतरती-चढ़ती लोगों की छायाएं बहुत गंभीर, बहुत गंभीर जैसे युक्लिड का चेहरा या जैसे समंन की किताब, या जैसे—लेकिन विल्सन को और कोई उपमा नहीं सूझती—वह नशे में जो है !

3

मेडोरा बहुत सवेरे उठ कर दूध लेने डेयरी गयी, तो एक घंटे से ऊपर हो रहा था और वह अभी नहीं लौटी थी। मामा छज्जे पर झाड़ू दे रही थी और उस छः हाथ के छज्जे पर करीब पौन घंटे से फिर-फर कर झाड़ू दिये जा रही थी। डेयरी का दूध मकबरे के पीछे वाले चबूतरे पर बिकता था और वहां से दूध लाने में पन्द्रह मिनट से ज़्यादा नहीं लगते थे। मिस्टर हम्टी-डम्टी बेंत की कुर्सी पर टिके हुए अखबार के पीछे अपना पूरा चेहरा छुपाये एक ही पेज पर आधे घण्टे से व्यर्थ घूरे जा रहे थे। दरअसल उनके कान मामा की आहट ले रहे थे। आखिर जब उन्होंने समझा कि मामा नैपकिन उतार कर हाथ झाड़ती हुई अब खुद डेयरी तक जा कर मेडोरा की तलाश करने को आमादा हो गयी है, तो वे चुप-चाप अखबार रख लोहे वाली घुमावदार सीढ़ी से गली में उतर कर पार्क की तरफ चल दिये। उन्हें भय था कि इस वक्त मामा मेडोरा के साथ जो करेंगी, वह तो करेंगी ही, उन पर भी जो कहर ढाया जायगा—उसे वे कैसे झेलेंगे।

इधर एक हफ्ते से मेडोरा की स्थिति उसके दफ्तर में बड़ी विषम होती जा रही थी। उस के डिपार्टमेण्ट का असिटेंट मैनेजर रघुपतिलाल बागड़ी इस कदर डरपोक आदमी था कि उसे जब अपनी नयी व्याहता बीवी को फ्रांसीसी डिजाइन के नायलोन के पारदर्शी गाउन में देखने की इच्छा हुई, तो उसने मेडोरा को बुला कर अपनी जेब से रुपए दिये और हिदायत की कि एक बहुत खूबसूरत गाउन खरीद कर मेडोरा खुद बागड़ी के घर जाकर शादी के तोहफे के तौर पर दे आये। बाद में उसे मालूम

हुआ कि बागड़ी की बीवी सारा दिन तो ओढ़नी का चार हाथ का घूंघट मार कोने में बैठी रहती है और जब बागड़ी घर पहुंचता है, तो सोते वक्त चोगी से वह बीवी को वही गाउन पहना कर रखता है।

मेडोरा की नियुक्ति उसी ने अपने विभाग में की थी और जिस दिन वह पहली बार दफ्तर के टाइप राइटर पर बैठी, उसने पाया कि उसके आस-पास का प्रत्येक कर्मचारी किसी रहस्य भरी नजर से उसे देख रहा है। दर-असल रहस्य की कोई खास बात नहीं थी; लोगों को यह जिज्ञासा जरूर थी कि किस खास अफसर की कृपा पाकर मेडोरा जैसी खूबसूरत लड़की दफ्तर में आ बैठी है? कुछ यह भी खयाल था कि अगर बिना किसी अफसर के सीधे लगाव के ही वह आयी हो, तो कुछ आगे बढ़ कर मेडोरा से आपसाना किया जाय; पर लोगों को तुरन्त ही पता लग गया कि मेडोरा बागड़ी साहब की विशेष कृपा पर नियुक्ति हुई है और यह बात साफ हो गयी गाउन वाली घटना से। इसमें शक नहीं कि बागड़ी ने हर अफसर की देखा-देखी अपनी साहबी शान में चार-चांद लगाने के लिए मेडोरा को देखते ही आनन-फानन नियुक्त कर लिया था; लेकिन धीरे-धीरे बागड़ी को लगा कि मेडोरा की नियुक्ति उसे गरां गुजरेगी। दो-चार हमउम्र लोगों ने जब बागड़ी को उसके चुनाव के लिए दाद दी, तो वह मन ही मन बेहद खुश हो गया; लेकिन धीरे-धीरे एक आध बार जब बड़ी उम्र के दलालों ने खास किस्म की खीसें निपोर कर उसकी तरफ इशारा किया तो वह मेडोरा को लेकर कुछ परेशान-सा होने लगा। और फिर उस दिन तो हद ही हो गयी, जब बागड़ी की वर्षगांठ पर एक दलाल ने एक सूट का कपड़ा उसे प्रेजेंट किया और एक काश्मीरी काम की कैप मेडोरा की मेज पर भिजवा दी। मेडोरा को दलाल ने जो कुछ कह-लाया, वही बागड़ी को भी सूचित कर दिया। बागड़ी बुरी तरह इस नयी घटना से डरा कि उसने फौरन टेलीफोन किया आफिस सुपरिंटेण्डेण्ट को और मेडोरा को एक घंटे के अन्दर ही अन्दर टेलीप्रिण्टर डिपार्टमेण्ट में भिजवा दिया।

मेडोरा को लगा—जैसे उसे देश-निकाला दे दिया गया हो! दर-असल वह खुद भी बागड़ी से बहुत-कुछ अपेक्षा करने लगी थी। यह बात

सही है कि मेडोरा की कल्पनाएं ज्यादा स्पष्ट कभी नहीं हुईं, लेकिन मेडोरा का उस वातावरण में पहुंचना और लोगों द्वारा यह अनुमान लगाया जाना कि मेडोरा कहीं परोक्ष रूप से नौजवान बागड़ी की विशेष कृपा पा चुकी है, मेडोरा को एक प्रकार की मानसिक शांति देता था; लेकिन टेलीप्रिण्टर डिपार्टमेण्ट में उस का तबादला···

सारा दिन टेलीप्रिण्टर की गनगनाहट और खड़खड़ और काम करने वाली साथिनों की कतरनी जैसी जबानें और बीच-बीच में टेलीफोनों पर लम्बी-लम्बी बात-चीतें—मेडोरा बेहद उकता जाती थी शाम तक ! बगल के पार्टीशन के उस पार बिल्डिंग का अपना टेलीफोन एक्सचेंज था और एक्सचेंज पर बैठने वाली लड़की हर पन्द्रहवें मिनट पर अपनी लिप्स्टिक संवारती थी, गोया फोन खुद भी उसके लबों की सुर्खी से प्रभावित होता हो। रेकार्ड-फाइलों की कीपर जो गंजे सर पर नकली बाल लगाती थी और भोंडी मरदानी उंगलियों पर बनावटी नाखून, प्रायः उस की कुर्सी के हत्थे पर जम कर आधे-आधे घंटे तक किसी से फोन पर गप किया करती थी। मेडोरा को हैरत होती थी कि हर समय असमय कौन उस नकली लड़की से इतनी-इतनी देर तक बातें करने को आमादा रहता था। कभी-कभी फोन बजता, तो मेडोरा किसी खयाल में डूबी हुई सहसा यों चौंकती जैसे कहीं से इस बार उसका ही फोन आया हो और फिर जब वही नकली नाखूनों वाली लड़की फोन पर चहकने लगती, तो वह अपनी मायूसी पर खीझती, टाइप राइटर को जोर-जोर से टकराती।

सभी लड़कियों को पता था कि मेडोरा के लिए कभी कोई फोन नहीं आता और शायद मेडोरा का प्रेमी भी कोई नहीं है, इसलिए वे सहानुभूति भी जाहिर करतीं। टेलीप्रिण्टर वाली लड़की मेडोरा को छेड़ कर कहती—"गरीब बच्ची ! क्यों नहीं तू हम में से किसी का प्रेमी उधार ले लेती ?"

टेलीफोन-ऑपरेटर इस पर आहिस्ता से कहती—"फिलहाल तुम मिस्टर बागड़ी से ही क्यों नहीं कहतीं कि हमारे डिपार्टमेंट में एक हीरो भेज दें। तुम पचपन की हिस्सेदार रहना, हम लोग पैंतालिस में सब संतोष कर लेंगी।"

मेडोरा को मजाक सहन नहीं होता। वह दांत भींचकर अपनी नोट-बुक उलटती रहती है। लड़कियों के मजाक में हठ के तत्व आ जाते हैं और मेडोरा की चिड़चिड़ाहट तीखी होती जाती है; लेकिन इस बीच किसी के प्रेमी का फोन आ जाता है। विभाग का तेजाबी वातावरण एक बार फिर महकने लगता है; लेकिन मेडोरा—मेडोरा की तिक्तता को कोई राहत नहीं मिलती !

आज एक हफ्ते से मेडोरा को लगता है कि उसके सीने का दर्द उसकी पसलियों को चटखा देगा। लेकिन इसके दर्द का इलाज क्या हो सकता है ? मेडोरा को याद आया, थर्ड रो में जो उसकी आण्टी रोजी रहती है, उसके सीने में भी इसी तरह दर्द हुआ करता था। मगर इधर मामा से उस की कोई बात-चीत नहीं होती थी क्योंकि मामा ने अभी कुछ महीने पहले उसको कमरे में बैठा कर एक घंटे तक मुतवातिर गालियां दी थीं। आण्टी रोजी का जुर्म महज इतना था कि उन्होंने हम्टी-डम्टी को फिट्‌जेराल्ड-वाला रूबाइयातें उमरखय्याम भेंट कर दिया था, जिस में बहुत-सी गंदी तस्वीरें बनी थीं।

आंटी रोजी एक ब्रिटिश बुकसेलर की दूकान में काम करती थी। उस के पति की मृत्यु चार साल पहिले हुई थी। वह नगर पालिका का मोटर-ड्राइवर था। पति के साथ रोजी के महज चार साल बीते थे, लेकिन वे चार साल···!

रोजी का खयाल था कि वह शादी होने के वक्त बहुत अबोध थी और उस के पति का विचार था कि वह संवेदनाहीन थी। शादी के बाद एक साल तक उसका युवा पति जितना ज्यादा रोजी को विरक्त पाता, उतनी ही अधिक उसकी अपनी कामना भड़कती जाती। दूसरे साल से रोजी को लगा कि वह अपने को जबरदस्ती भी पति को काम-भावना में हिस्सा लेने को मजबूर नहीं करती, तो शायद विवाहित जीवन कटु हो जाय। तीसरे साल उसकी मजबूरी ही स्वभाव बन गयी। जहां पिछले दिनों उसे पति की कामना के साथ जबरदस्ती अपने को उत्तेजित दिखाना पड़ता था, वहां अब वह अनायास ही रुचि लेने लगी। चौथा साल—इसी साल रोजी को सीने का दर्द शुरू हुआ। रोजी ने सेक्स की किताबें खरीदनी

शुरू कीं; फिर कहीं से वह कुछ ब्लूप्रिण्ट भी खरीद लायी, लेकिन उसका पति अब उस पर महज उतना ही ध्यान देता था, जितना अपनी लॉरी पर। रोजी के सीने पर का दर्द बढ़ने लगा और फिर सहसा एक दिन करीब दो बजे उसे खबर मिली कि अस्पताल जाते-जाते उस के पति की मृत्यु हो गयी! लारी का एक्सीडेण्ट हो गया था।

रोजी एक अच्छे बुकसेलर की दूकान पर काम करती है और उस के अपने फ्लैट में पूरी एक अलमीरा रंग-बिरंगी दवाओं से भरी हुई है, जिन्हें रोजी न जाने कब किन मर्जों के लिए इस्तेमाल करती है। यों तो आई-लोशन या टिंचर आयोडीन की जरूरत पड़ने पर करीब-करीब सारा मुहल्ला उसी के यहां आता है।

मेडोरा की मामा का कहना है कि उसकी अलमीरा में ज्यादातर दवाएं सिर्फ दो कामों के लिए हैं—एक तो पेट में बच्चा आ जाने की घटना को रोकने वाली और दूसरा बच्चा आ जाने पर उस से मुक्ति दिलाने वाली। मामा का मत है कि रोजी बड़ी धूर्त हो गयी है। लेकिन मेडोरा को रोजी बहुत अच्छी लगती है। आण्टी रोजी जब मेडोरो से बात करती है, तो मेडोरा के पहलू में गुदगुदी होती है जैसे आण्टी फूलों की छड़ी से उसे छू रही हो! फिर मेडोरा के लिए मामा ही क्या करती है? मामा ने यह कब समझा कि मेडोरा के सीने का दर्द कितना तीखा होता है!

हाल-चाल पूछने के बाद आण्टी ने देखा कि मेडोरा के हाथ में दूध की बोतल है, तो आण्टी रोजी ने चिन्ता प्रकट की, कहा—"तुम्हें दूध पहिले घर दे आना चाहिए था!"

मेडोरा ने झेंप कर कहा "फिर मामा किसी काम में फसा लेती। छुट्टी के दिन तो मैं घर में सबसे ज्यादा व्यस्त हो जाती हूं, क्योंकि मामा मुझे फुरसत में समझ कर काम पर काम देती जाती है।"

"लेकिन तुम्हारी मामा भी तो बेचारी बहुत काम करती है।"

रोजी हर बात कितने सहज और सरस लहजे में कहती है मेडोरा ने देखा। जिस बात को कह कर स्पष्ट व्यंग्य किया जा सकता था, उसी को रोजी ने कितने मीठे ढंग से कहा! मेडोरा ने आण्टी की क्यूरीयोवाली अलमीरा की तरफ देखते हुए पूछा—"आण्टी, आप उधर क्यों नहीं

आतीं ?"

आण्टी ने बहुत भोला-सा झूठ बोला: "बेबी, मुझे फुरसत जो नहीं मिलती !"

मेडोरा को आगे कोई विशेष बात नहीं सूझी। वह समझती थी कि आण्टी रोजी शायद मामा के नाम पर नाक-भौं चढ़ा कर उस की बुराइयां करने लगे, तो मेडोरा अपनी खीझ को व्यक्त कर डालेगी; पर आण्टी रोजी यह कैसे बात करने लगीं ?

मेडोरा ने बात बदलने की गरज से पूछा— "अच्छा आण्टी, आपकी दूकान में कैसी किताब रहती है ?"

रोजी ने मुस्करा कर कहा—"कैसी···मतलब ? बहुत तरह की किताबें रहती हैं। सभी तरह की।"

"आपकी अपनी पसन्द की वहां क्या किताबें हैं ?"

रोजी खिलखिलाने लगी; उसने कहा—"देखो मेरी पसन्द सिर्फ किताबों के जैकेट तक ही रहती है। उनमें लिखा क्या है इस पर ध्यान देने की मुझे जरूरत ही नहीं पड़ती।"

मेडोरा चुप हो गयी। फिर अचानक उसने दवाओं की तरफ इशारा करते हुए कहा : "आण्टी इतनी दवाएं आप क्या करती हैं ?"

"क्यों ? खाती हूं।"

"इतनी सारी दवाएं !"

"दवाएं इतनी कितनी हैं ! जितने मर्ज होते हैं उसकी चौथाई भी तो नहीं है।"

"तो क्या जितने मर्ज होते हैं वे सब आपको हैं ?"

आण्टी एक असमय दर्शन का फिकरा बोलीं : "जिन्दगी, जानती हो, हर मर्ज की एक खुराक से मिला कर बनायी गयी है।"

मेडोरा अच्छे बच्चों की तरह चुप होकर दवाएं देखती रही।

आण्टी चाय की उबलती हुई केतली को सभालने लगीं। मेडोरा ने जैसे इस बार साहस करके असली बात पर आने की कोशिश करते हुए रोजी से पूछा : "अच्छा आण्टी, हर एक इन्सान की जिन्दगी इन्हीं खुराकों से बनी होती है क्या ?"

राजी ने हंस कर कहा—"हां तुम्हारी भी।"

मेडोरा संकोच में पड़ गयी। फिर उसने कहा : "आण्टी हमें भी कोई दवा दीजिए न !"

"बच्चों को दवाओं के इस्तेमाल से बचना चाहिए।"

मेडोरा फिर चुप हो गयी। आण्टी ने फिर चायदानी भरी, पत्ती डाली और चायदानी को सावधानी से ट्रे में दूध, चीनी और खाली प्याले एक ओर खिसका कर विठा दिया। फिर उसने मेडोरा से कहा : "मेडोरा तुम्हारी मामा का कहना सही है। तुम कामचोर हो। देखो मैंने ट्रे सजा दी और तुमने उसे मेज तक ले चलने की तकलीफ भी न उठाई।"

मेडोरा शायद इस बात से खिन्न हो गयी; क्योंकि चाय की ट्रे आंटी को ही मेज तक लानी पड़ी। चाय रखकर आण्टी ने रेडियो खोल दिया। खुद ही प्यालों में चाय डाली। चाय पीते-पीते वातावरण में भारीपन आ गया। आण्टी ने उठकर रेडियो पर दो तीन स्टेशन बदले फिर पहला स्टेशन लगा कर वाल्यूम कम कर दिया। मेडोरा अब तक बिल्कुल खामोश हो चुकी थी। आण्टी धीरे-धीरे आकर उसकी कुर्सी के पीछे खड़ी हो गयीं। उन्होंने अपने दाहिने पंजे से धीरे-धीरे मेडोरा के बाल सहलाने शुरू किए। मेडोरा ने सहसा प्याला रख दिया, नीचे झुकी और खांसने लगी। खांसते-खांसते वह बुरी तरह दुहरी हो गयी। आण्टी उसकी रीढ़ सहलाती रहीं। मेडोरा की खांसी रुकी तो आण्टी उसकी कुर्सी के हत्थे पर आकर बैठ गयी। उन्होंने उसके कन्धे दबाते हुए आहिस्ता से पूछा : "तुम्हें कब से इतनी खांसी आती है ?"

मेडोरा ने कोई जवाब नहीं दिया। आंटी ने पूछा : "क्या तुम खांसी की ही दवा मांग रही थीं ?"

मेडोरा ने कहा : "नहीं, मेरे सीने में यहां बहुत दर्द होता है।" उसने अपनी दोनों हथेलियां पसलियों के बीचोबीच दबा लीं। आंटी चुप होकर उसके कंधे दबाती रहीं, फिर उन्होंने पूछा : "तुम्हारे पापा कहां हैं ?"

"घर पर !"

"मेडोरा, जब तुम बहुत छोटी-सी थीं न, तभी से मैं तुम्हें जानती हूं। तुम्हारी पसलियों में दर्द तो तभी से होता है और तुम्हें शायद न पता हो,

तुम्हारी मामी को भी तुम्हारी उम्र में यही शिकायत थी। मुझे भी ऐसे ही दर्द होता था। लेकिन मेडोरा, कोई भी दवा इस मर्ज को दूर नहीं कर सकती। मुझसे यह मर्ज छूटा तो मेरी कोलीना को लग गया। तुम जानती नहीं हो उसे, वह उसी बुक-शाप पर सेल्स में है। इससे छूटने की कोशिश दवा के जरिए बेकार है। सुन रही हो यह गाना—के सेरा-सेरा, ह्वाट एवर विल वी विल बी···"

रेडियो में गाने के साथ-साथ खड़खड़ाहट ज्यादा होने लगी।

आंटी ने कहा : "क्या तुम कह सकती हो कि रेडियो को भी यह खांसी नहीं आ रही है?" आंटी सूई को घुमाकर खड़खड़ाहट कम करने की कोशिश करने लगीं।

मेडोरा ने जान बूझ कर जैसे दूध का बहाना याद किया। आंटी ने देखा तो मुस्कराने लगीं, बोलीं : "मामा को मत बताना कि तुम यहां थीं।"

लेकिन मेडोरा के छुपाने की जरूरत नहीं पड़ी। आंटी के दरवाजे से निकलते ही मेडोरा की गर्दन पर एक पंजा कस गया। उसकी मामा दरवाजे पर ही उसका इंतजार कर रही थी। मामा उसे बिना एक शब्द बोले मुर्गी की तरह दबोचे चलती रही। यूकलिप्टस के नीचे पांच-छह बच्चे गेंद खेलना छोड़ कर शोर मचाने लगे और दायीं ओर डाक्टर चड्ढा के बंगले के दोनों हाउण्ड कुत्ते भूंकने लगे। मामा बगैर उनकी तरफ ध्यान दिये, मेडोरा को लिए हुए फाटक का जीना चढ गयीं।

विल्सन अपनी खिड़की पर ब्रश कर रहा था। यह दृश्य देखकर उसे अनायास ही हंसी आ गयी। ब्रश करता हुआ वह अपने कमरे में लौट गया। सहसा उसे कुछ ख्याल आया—उसे लगा, यह मेडोरा···यह मेडोरा जिंदगी की किस राह पर जा सकती है? उसने सोचा—मेडोरा ठीक रीता जैसी ही तो है।

जब वह पोदाल वाड़ी से भाग कर शहर आया तो भाग्य से ही जैसे उसकी भेंट गिब्बन साहब से हो गयी। साहब के यहां बेयरा का काम करते-करते वह कुछ का कुछ हो गया था। पूरे दस साल में उसने अंग्रेजी

जबान भी यों सीख ली जैसे वह जन्म का ही इसाई हो। गिब्बन साहब की ग्यारह बेटियां थीं, जिनमें से सात की शादी हो गयी थी, दो अपनी किसी आंटी के यहां रहती थीं और दो साहब के पास थीं। गिब्बन साहब उम्र से काफी बूढ़े हो गये थे लेकिन उन्हें लोग ब्वाय कहते थे। साहब इस बात की फिराक में रहते थे कि किसी तरह नये-नये परिवारों से उनका परिचय होता रहे। परिवारों में वे प्रायः महिलाओं की ही तरफ ज्यादा तवज्जह देते थे। वे प्रायः ऊंचे दामों की खूबसूरत किताबें या फाऊण्टेन पेन खरीदा करते थे और उन्हें मौके-बे-मौके महिलाओं को भेंट किया करते थे।

उनकी छोटी बेटी रीता बेहद शरीफ किस्म की थी और एक दिन उसके पापा सहसा जब टैक्सी से उतर कर अपनी तीसरी बीवी के साथ घर में घुसे तो रीता और नयी मम्मी में जमकर युद्ध हुआ। नयी मम्मी ने मिस्टर गिब्बन से क्यों शादी की, यह तो बाद में खुला, जब मिस्टर गिब्बन को उनकी नयी बीवी के दो यारों ने उन्हीं के ड्राइंगरूम में धुनक डाला और फिर मिस्टर गिब्बन दो महीने बाद अपना घर, अड़तालीस हजार फंड और अच्छा-खासा फर्नीचर नयी मम्मी के हाथों छोड़कर स्वर्गवासी हो गये पर रीता मम्मी के वश में नहीं आयी। रीता की बहन चुपचाप नयी मम्मी के किचन संभाले जा रही थी और जब एक दिन अपने यारों के सामने ही नयी मम्मी ने रीता को सैंडलों से पीटा, रीता उन्हीं के एक प्रेमी के साथ रात को भाग खड़ी हुई।

विल्सन पिछले न्यू-ईयर्स-डे को न्यू मार्केट टहल रहा था तब रीता उसे दिखायी दी। उसके तीन बच्चे हो चुके थे। उसके बाद दो-एक बार वह उसके होटल भी आयी।

मेडोरा शायद रीता से ज्यादा खूबसूरत है, लेकिन·· लेकिन विल्सन ने सोचा शायद वह अनावश्यक तुलना करने लगा है। महज किसी स्वभावगत कमजोरी के कारण वह कुछ जिंदगियां और कुछ नतीजे एक साथ जोड़ने लगता है। यों रीता और मेडोरा में उम्र का ही साम्य है। यह क्यों जरूरी हो जाय कि मेडोरा को देखकर उसे रीता की जिंदगी के परिणाम की तरफ बढ़ती हुई माने?

विल्सन अपनी इस मानसिक दशा से बहुत तकलीफ पाता है। बड़ी हल्की-फुल्की-सी चीज या घटना लेकर वह कुछ लम्बी-लम्बी बातें सोच जाता है और सहसा वे बातें बिना किसी सीमा पर आये ही यों मुरझा जाती हैं जैसे किसी पौधे को सहसा तेजाब से काट दिया जाय और वह असमय ही मुरझा पड़े। कल्पनाओं की यह मुरझाहट विल्सन के शरीर में बुखार पैदा कर देती है। एक बारगी ही उसकी कुण्ठा उसके शरीर में उत्तेजना की हरारत की तरह उभरती है और उसकी संवेदनाओं को छूने से पहले ही दब जाती है। उसे लगता है, जैसे उसकी संवेदनाओं का पुंस्त्व समाप्त हो गया है इसीलिए यों अचानक उसके मन में कोई ख्याल कौंधता है और अधपकी स्थितियों में ही मुरझा जाता है। बातें न उसे रस देती हैं न रुचि। अपनी विकृत रुची और पुंसत्वहीन संवेदना द्वारा अवश टूट गये मानसिक तारतम्य के लिए उकता कर जोर से कुल्ले करता है विल्सन।

मिस्टर हम्टी-डम्टी चाय के लिए सुबह से तरस रहे थे। वैसे सुबह से मामा का मूड देखकर उन्हें कुल्ला करने तक की हिम्मत नहीं हुई थी। गली में उतर कर वे दाएं हाथ मुड़ लिए। इस गली के अगले सिरे पर एक तरफ लाण्ड्री का रंगाई वाला कारखाना था; जिसके नाले से सतरंगा पानी बहता रहता और दूसरी तरफ एक छोटी सी टी-स्टाल जिसका मालिक डेविड आधा इसाई और आधा चिंपांजी लगता है। उसका विश्वास है कि उसकी मां खास मुगलिया खून की थी और उसका बाप शुद्ध ब्रिटिश, गोकि खुद उसका रंग चाय की लुगदी से ज्यादा साफ नहीं है। डेविड जब तब अपने गाहकों को ब्रिटिशर्स के समय के क़िस्से सुनाया करता है और उसकी दूकान पर बैठकर उधार चाय पीने वाले बूढ़े इसाई, जान स्टुअर्ट मिल का फलसफा बघारते हैं। मिस्टर हम्टी-डम्टी यहां रोज नहीं आते। बेहद दुबले रिटायर्ड रेलवे गार्ड हप्पू और बेटे के प्रिंसिपल हो जाने पर कालेज की मास्टरी छोड़ देने वाले पूरे साढ़े तीन मन वजन के ढील-ढाले चीनी के बस्ते जैसे दीखते ड्राइंग टीचर मिस्टर स्माल मिस्टर हम्टी-डम्टी के एकमात्र दोस्त हैं।

मिस्टर स्माल हम्टी-डम्टी को बहुत लम्बे अरसे से जानते हैं इसी-लिए वे हम्टी-डम्टी को डियर बॉय के नाम से पुकारते हैं। मिस्टर हम्टी-डम्टी ज्यों ही स्टाल के दरवाजे पर बरामद हुए, स्माल ने जोर से उछल-कर उनका स्वागत किया—"हैल्लो बॉय!"

मिस्टर हम्टी-डम्टी ज्योंही हाथ उठाकर आगे बढ़े, टीन के ऊपर चिपकी मकड़ी ने उनके चेहरे पर छलांग लगा दी।

डेविड पोच बनाने की तैयारी करते हुए छोकरे को बुरी तरह घुड़-कियां देने लगा। वह हम्टी-डम्टी की उधार चाय पीने की आदत से चिढ़ा हुआ था। मगर हम्टी-डम्टी मिस्टर स्माल के सामने वाली बेंच पर जम कर बैठ गये। स्माल ने डेविड को चाय के लिए कहा और बिना इस पर ध्यान दिए हुए कि डेविड चाय का आर्डर सुनने के बजाय अखबार पढ़ने में मशगूल हो गया। हम्टी-डम्टी की तरफ मुस्करा कर पूछा: "तुम्हारी पुलिस कैसी है? पुलिस ने स्माल का संकेत हम्टी-डम्टी की श्रीमती का था।

हम्टी-डम्टी ने गमगीन होकर कहा: "वही झाड़ू की सवारी!"

"बॉय, तुम्हें भई कुछ करना चाहिए।"

"क्या करूं? आप लोग भी तो कुछ नहीं बताते क्या किया जाय?"

"क्या किया जा, भई यही तो सवाल है। चार्ली को तुमने देखा होगा शायद, चाइनीज बार की सीढ़ियों पर बैठा गिटार बजाया करता है। जानते हो आज से कोई दस साल पहले वह गाड़ी पर चलता था। रिटायर होने के बाद जो फण्ड मिला उसकी बीवी ने शराब में उड़ा दिया और बाद में चम्मच लेकर चार्ली की खोपड़ी तोड़ दी कि वह कुछ कमाता-धमाता नहीं। और अब हज़रत कमाई क्या कर रहे है? मैं तो कहूंगा भई, अपना कोई हल सोचो…"

"हल सोचने की बात तो सभी कहते हैं लेकिन आखिर आप भी तो बता सकते हैं कि इसका यह हल हो सकता है!"

"सच पूछो तो यह मामला बड़ा नाज़ुक होता है। कोई अपनी बीवी से कैसे निबटे…"

स्माल की बात की भनक हप्पू-बप्पू के कान में पड़ी तो उन्होंने ऊंट

की गर्दन की तरह अपना पूरा जिस्म लम्बा करते हुए रमाल की तरफ झुक कर कहा : "अरे भई किसकी बीवी का जिक्र हो रहा है ? मैं समझता हूं कि रिटायर्ड जिन्दगी के लिए शैतान से राहत ढूंढने के बजाय बीवी से राहत ढूंढने की बात पादरियों को कहनी चाहिए।"

"अरे भई !"—हम्टी-डम्टी ने बेहद संजीदगी से कहा : "शैतान भी जिससे पनाह मांगे ऐसी बीवी के लिए तो शायद खुदा भी कुछ नहीं कर सकता।"

हप्पू रिटायर हो चुकने के बावजूद यही देखने के आदी थे कि अगर वे हरी झंडी दिखाएं तो बातों की गाड़ी चले, लाल दिखाएं तो रुक जाय। उन्होंने जब देखा कि हम्टी-डम्टी अपनी बातों की गाड़ी खुद ही हांकना चाहते हैं तो उन्होंने फौरन लाल झंडी दिखायी। बोले : "बीवियों के आतंक की बात मैंने बहुत सुनी है भई। लेकिन मेरा तो खयाल है कि इसमें दोष मियां का ही ज्यादा होता है बीवी का नहीं।"

मिस्टर हम्टी-डम्टी ने गाय की तरह बड़ी-बड़ी बेवकूफ निगाहों से हप्पू को घूरा। फिर गुन-गुनाकर बोला : "हो सकता, हो सकता है मेरा ही दोष हो ! मैं ही शैतान की औलाद होऊं···"

रमाल ने फौरन, हर बुद्धिमान आदमी की तरह परिस्थिति पर काबू किया, हप्पू से बोले : "भई तुम इनकी परिस्थिति नहीं जानते।"

"खूब जानता हूं !"—हप्पू गुर्राया : "तमाम दुनिया में जो शख्स सिर्फ यह ढिंढोरा पीटता फिरे कि उसकी बीवी ने उसे झाड़ से पीट दिया, वह आदमी नहीं गधा है।"

मिस्टर हम्टी-डम्टी महा-दीन चेहरा लटका कर धीरे से बोले : "ठीक है भई, दुनिया हर मुसीबतजुदा को इसी तरह से कहती है।"

"मुसीबतजुदा !"—हप्पू ने गिरगिट की तरह अपनी गर्दन पर झटका मारा और छिपकली जैसा पंजा बेंच पर पटक कर चिल्लाए : "मुसीबत जुदा दूसरे होते हैं। तुम तो खुद मुसीबत हो दुनिया के लिए।"

रमाल ने बात बदलने के लिए आवाज लगायी। "अरे डेविड, भई चाय नहीं आयी तुम्हारी।"

गनीमत की बात इस वक्त हप्पू के बेटे का बेटा उन्हें बुलाने आ पहुंचा

और हप्पू बाबू स्टाल खाली कर गये। मिस्टर हम्टी-डम्टी अभागों की तरह सिर लटकाए बैठे रहे, फिर उन्होंने स्माल से कहा : "भई दुनिया में उपदेश का धन्धा करने वालों की कमी नहीं। पर जिंदगी की सचाइयों से जिसे लड़ना पड़ता है वही जानता है !"

मिस्टर स्माल ने उन्हें धीरज बंधाया। बीच दीवाल के पास वाली बेंच पर बैठे लार्ड टेनिसन और जॉन मिल्टन पर बहस करने वाले तीनों बूढ़ों में से एक ने उठकर अपनी बगल के बूढ़े की कनपटी पर बाकायदा खींच-खींच कर तीन मुक्के मारे। मार खाने वाला पहले मुक्के में बेंच पर लुढ़क गया, दूसरे में उठ कर खड़ा हो गया, तीसरे मुक्के पर स्टाल छोड़कर एकदम बाहर भागा। मारने वाला इसके बाद मजे में बैठकर दूसरे आदमी से वही टेनिसन वाली बात फिर करने लगा।

मिस्टर स्माल होठों को खूब चौड़ा करके मुस्कराए, हम्टी-डम्टी से बोले : "तुमने देखा ?"

हम्टी-डम्टी ने हामी भरी।

स्माल बोले : "तुम्हारे लिए भी यह तरीका काफी मुफीद हो सकता है !"

"क्या मतलब ? यानी···"

"नहीं नहीं !"—स्माल हंस पड़े : "मतलब यह नहीं कि तुम्हारे ऊपर हाथ साफ कर दिया जाय। मेरा तो कहना यह है कि इस बूढ़े आदमी को देखो और अपनी मुसीबत से लड़ने का सबक लो।"

हम्टी-डम्टी घिघियाने लगे : "भई आदमी अपनी इज्जत भी तो कुछ देखता है। आप समझते नहीं। सख्ती अगर मैं जरा-सी भी करूं तो मेरी बीवी इस बुरी तरह सड़क पर खड़ी होकर चिल्लाएगी कि देखने वालों की भीड़ लग जाय। आखिर वह बेइज्जती भी तो मेरी ही होगी !"

स्माल ने अखबार किनारे फेंक दिया, अपनी भौंहें चढ़ा लीं, जिससे आंखों के कोए चौड़े हो गये और होठों के कोने सिकोड़ कर वे हम्टी-डम्टी से बोले···"और जब आप बीवी की झाड़ू खाकर मुहल्ले भर में दुहाइयां देते फिरते हैं, तब क्या आपकी इज्जत में चार चांद लग जाते हैं ?"

"हां, लेकिन मेरे स्वभाव में गुस्सा नहीं है आप जानते हैं। मैं सारे जीवन सहता रहा हूं, आगे भी सहूंगा। हां अगर किसी शांतिपूर्ण तरीके से मुझे इस मुसीबत से छुटकारा मिल पाता तो शायद..."

"छुटकारा ज्यादा जरूरी है या शांतिपूर्ण तरीका बॉय?

"भई मुझसे तो ऐसा कोई काम हो नहीं सकता जो मेरे किसी सिद्धान्त के खिलाफ जाता हो!"

रुमाल जोर से हंसे। हम्टी-डम्टी उनकी हंसी से बिना हतप्रभ हुए उसी लहजे में कहने लगे: "ठीक है आप भी हंस लीजिए!"

रुमाल ने डेविड को चाय के लिए फिर आवाज दी और डेविड छोकरे को टमाटर की फांकें मोटी काट डालने पर डांट पिलाने लगा। मिस्टर हम्टी-डम्टी ने देखा, समय काफी हो गया है तो उन्होंने उठने की इच्छा जाहिर की। रुमाल ने हंस कर कहा: "ठीक है बॉय! समय का इन्त-जार करो!"

मिस्टर हम्टी-हम्टी स्टाल से बाहर आये तो धूप में खासी चमक आ चुकी थी। वे इस बात से डर रहे थे कि देर हो जाने की वजह से मेडोरा की मामा शायद अब और ज्यादा ऊधम मचायें। लेकिन फिर उपाय भी और क्या हो सकता है? उन्होंने घर की तरफ कदम बढ़ाए और मन को धीरज बंधाया। वे हमेशा से यही करते आ रहे हैं। वैसे उनका हमेशा यही खयाल रहा है कि उन्होंने हर स्थिति सिर झुका कर झेली है और दुनिया उनके लिए हर कदम पर कांटे बोती रही है।

हम्टी-डम्टी का नाम दरअसल जार्ज नार्थ है। न जाने कब, कैसे किस सनक में आकर बच्चे हम्टी-डम्टी कहने लगे। नार्थ की शादी होने के बाद कोई सात-सात साल तक नार्थ ने इन्तजार किया पर उसकी बीवी के कोई बच्चा न हुआ। इस बीच नार्थ ने दूसरी शादी नहीं की, क्योंकि यह शादी उसकी मजबूरी से हुई थी। उसका पिता अण्डे बेचता था और एक मुर्गी पालने वाली औरत से उसने शादी की थी। नार्थ वास्तव में अपने उ[illegible] पिता का बेटा न होकर उस मुर्गी वाली का ही बेटा था जो अपने साथ [illegible] पति के लिए एक सौगात लेती आयी। जैसा कि हर मध्यम वर्ग के [illegible] की तमन्ना होती है, नार्थ की मां की भी यही इच्छा थी कि किसी त[illegible]

उसके हिन्दुस्तानीत्व में अधिक से अधिक शुद्ध योरपीय रक्त शामिल हो जाय और परिवार योरपीयता के नजदीक पहुंच जाय। इसी गरज से नार्थ की शादी उसकी मां ने एक अच्छी लड़की चुनकर कर डाली। गोकि उसके नाक पर भारी सा काला, भोंड़ा मस्सा था (जो मेडोरा की मामा की इस उम्र में भी ज्यों का त्यों वर्तमान है) और आंखें चिपड़ी थीं।

शादी के छह साल बीत जाने पर जब नार्थ की बीवी से कोई बच्चा न हुआ तो नार्थ समझने लगा कि उसकी बीवी बांझ है और उसकी बीवी को यकीन होने लगा कि नाथ खुद नपुंसक है। एक बार दोनों में इस बात पर बुरी तरह लड़ाई हुई कि डॉक्टर के यहां नार्थ को पहले जाना चाहिए या उसकी बीवी को। आखिरकार उनके साले साहब ने समझौता कराया कि दोनों को एक साथ अस्पताल जाना चाहिए। लेकिन दोनों में से कोई इस डर से अस्पताल नहीं गया कि कहीं उसी का दोष न निकले।

पर इसका नतीजा कुछ अजीब हुआ। नार्थ की मां ने जब उसके तलाक या दूसरी शादी की बात चलायी तो उसने शादी से साफ इन्कार कर दिया। हां अन्दर ही अन्दर उसके मन में भी एक विशेष योजना घर करने लगी और उसकी बीवी के अन्दर भी। जार्ज नार्थ के परिचितों का दायरा बढ़ने लगा। उधर उसकी पत्नी की मेजबानी में भी तत्परता ज्यादा होने लगी। देखते-देखते एक साल भी नहीं बीता था कि नार्थ को एक साथ डराने और खुश करने वाली सूचना मिली कि मिस ईसाबेला को उनसे बच्चा है और अब उससे शादी करना उनकी जिम्मेदारी है। और कोई मौका होता तो नर्सरी स्कूल में पढ़ाने वाली उस मिस ईसाबेला से वे यही कहकर छुट्टी पा सकते थे कि वह बच्चा उन्हीं का क्यों, किसी का भी हो सकता है। पर आज वे अपना पुंसत्व साबित करने का ठोस आधार पा रहे थे, इसलिए वे ईसाबेला को हंसी-खुशी चूमकर घर आ गये। मिसेज नार्थ इतने दिनों से परेशान थीं और तमाम मेजबानी के बावजूद उनकी यही समझ में नहीं आ रहा था कि वे अपने नाक पर उगे उस मस्से को क्या करें जिसे देखकर उनका हर शिकार भड़क गया।

जार्ज नार्थ के एक मूर्खतापूर्ण ईमानदारी बरतनी चाही। रात के वक्त बीवी से वही पुराना प्रसंग बांझपन वाला छेड़ा और बोले, अगर

उनकी बीवी इस वक्त भी उनके पुंसत्व को स्वीकार करके अपनी बात वापस ले ले तो वे ईसाबेला से शादी नहीं करेंगे। बीवी को उनकी बात मानने से कोई एतराज नहीं था, पर उसकी अपनी खीझ भी कम नहीं थी। इसलिए उसने दुबारा जार्ज नार्थ की पुंसत्वहीनता की ही तस्दीक नहीं की, बल्कि उनके विश्वास को भी यह कह कर चोट पहुंचायी कि जिसे वे अपना बच्चा समझ रहे हैं वह किसी और का ही होगा; क्योंकि जो लड़की बिना शादी किए गर्भवती हो सकती है वह नार्थ के अलावा भी किसी से सम्बन्ध रख सकती है।

जार्ज नार्थ ने अपने वाल्दैन से फरियाद की। पर वे लोग सबसे ज्यादा दकियानूस निकले। उन्होंने मिसेज नार्थ की बातों का समर्थन ही नहीं किया, बल्कि नार्थ को इस बेजा काम के लिए डांटा-फटकारा भी। नार्थ का दिल टूट गया। नार्थ को उसी दिन से लगने लगा कि सारी दुनिया गलत है और अपनी गलतियों को भोले नार्थ के मत्थे मढ़ना चाहती है। लेकिन नार्थ की हिम्मत अब इस बात के लिए जुट नहीं पाती थी कि कैसे वे खुले आम ईसाबेला से शादी कर डालें। वे तलाक के लिए बगलें झांकने लगे और एक दिन उनके किसी वकील दोस्त ने ही यह बात उनके घर में कह दी और पहली बार वे झाड़ूओं से चुपचाप पिटे। मिसेज नार्थ ने तीन दिन खाना नहीं खाया। नतीजा यह हुआ कि जार्ज नार्थ घर छोड़ कर भाग खड़े हुए।

लेकिन बाहर जाकर नार्थ को चैन नहीं मिला। एक साल उन्होंने सड़क पर अखबार बेचे और किसी जब्त हुई किताब का व्यापार करने के जुर्म में पुलिस ने बेंत लगा दिए। दूसरे साल एक दफ्तरी के यहां कागज पर लेई चुपड़नी शुरू की और दस-बारह किताबें रद्दी में बेच खाने के कारण दुकानदार की जूतियां झेलीं। तीसरे साल एक स्टेशनरी वाले के यहां स्टोरकीपरी की और रात में स्टोर का सारा सामान गायब हो जाने के कारण नार्थ जेल जाते-जाते बचे। चौथे साल एक प्रेस में क्लीनर हो गये और घर को लिखा कि अब वे एक प्रेस मैनेजर के तौर पर काम कर रहे हैं। लेकिन जवाब में सुना कि उनकी मां पिछले साल मर चुकी है, और पिता मरने वाले हैं। इधर प्रेस से उन्होंने आधे दर्जन स्याही के डिब्बे चुरा

गायब किये कि प्रेस वाले ने इन्हें सीधे गर्दनियां दे दी।

जार्ज नार्थ घर पहुंचे तो मालूम हुआ कि बाप ही नहीं मरने वाले हैं बल्कि उनकी प्रेयसी ईसाबेला भी सेनेटीरियम पहुंच चुकी है।

नार्थ का कहना बिल्कुल सच है। दुनिया ने हमेशा उन्हें अपनी मर्जी का काम करने में बाधा दी है। यही नहीं, अनावश्यक रूप से दुनिया ने उनके ऊपर जिंदगी के भार लादे हैं। ईसाबेला भी मर गयी और लोगों ने मजबूर किया कि वे ईसाबेला को न सही, अब उसके बच्चों को ही घर ले आयें। बच्चों! —जार्ज नार्थ का सिर जैसे पत्थर से टकरा गया। इन चार वर्षों में ईसाबेला एक बेटे ही नहीं, एक बेटी की मां भी बन चुकी थी!

नार्थ के मुंह से सिर्फ इतना निकला—"यह सब नाटकीय है, एकदम नाटकीय!"

एक गुनाह बहुत से गुनाहों की टोकरी लेकर चलता है। इसलिए जार्ज नार्थ ने अपने पिता की अन्तिम इच्छा भी नहीं मानी। उनके पिता ने कहा था कि नार्थ ईसाबेला के बच्चों से कोई सम्पर्क न रक्खे, पर नार्थ ने यह निश्चय कर लिया कि ईसाबेला के बच्चों को नहीं छोड़ेंगे। ईसाबेला के बच्चे उनके मन का सन्तोष थे। उन बच्चों को लेकर वे अपनी कर्कशा पत्नी के तानों के खिलाफ अपनी इज्जत बचा सकेंगे। हर किसी को यह यकीन हो जायगा कि कम से कम नार्थ नपुंसक नहीं है। और अपनी इसी नपुंसक मनःस्थिति को सहारा देने के लिए उन्होंने बाकायदा दोनों बच्चों को लाकर अपने घर पर स्थान दे दिया। पर मिसेज नार्थ इतनी साधारण नहीं थीं। उन्होंने उन बच्चों की खातिरदारी से ही इनकार नहीं किया; बल्कि नार्थ के लिए खाना तक बनाने से इन्कार कर दिया। नार्थ एक साल की बच्ची मेडोरा और चार साल के राबर्ट एल्स्टन को लेकर उमी मकान में यों रहने लगे जैसे किसी अस्तबल में चूहे रहा करते हैं और नार्थ इसीलिए अपने हर अनुभव में सच हैं।

4

नार्थ का खयाल सही है। मैडलीन सिर्फ 'किस मी क्विक' की एक शाख है जिसके सिरे पर सुर्ख, चटख, खूबसूरत फूल है और उसे छूने वाली हर उंगली में जलन पैदा हो सकती है।

उन दिनों दूसरा महायुद्ध अपनी अन्तिम चमक पर था। जापानी फौजें हरक्षण भारतीय सीमा पर खतरे बढ़ाती आ रही थीं। और सहसा एक रात कलकत्ते पर हमला हुआ। खिदिरपुर की सुरक्षावाली एन्टी-एयरक्राफ्ट गनें सिर्फ अपनी लम्बी-लम्बी सूंडें उठाकर जापानी जहाजों को डरे हुए हाथियों की तरह ताकती रह गयीं, सर्च-लाइटों में एक-आध बार रोशनी हुई और भयभीत आँखों की तरह उन्होंने अपनी पलकें बन्द कर लीं। सारा शहर काली, खामोशी वीरानी में स्तब्ध हो गया। सहसा जहाजों की गूंज बन्द हो गयी। बार में नाचते हुए वर्दीधारी सिपाहियों ने अपनी प्रेमिकाओं से फौरन अपने को छुड़ाया और कानों मे उंगली लगा कर तखत और मेजों के नीचे घुस पड़े। डरा हुआ ड्रमर अपने नगाड़े की आड़ में दुबकने लगा। लड़कियां सहसा कुछ समझ न सकीं इसलिए बेतहाशा जीने की तरफ दौड़ीं और जीने के रास्ते में अड़ गयीं।

दुड़ुम-दुड़ुम-दुड़ुम—जैसे ही बमों की आवाज हुई, लड़कियां दुबारा सीढ़ी से हॉल की तरफ भड़भड़ा कर डरी हुई बतखों की तरह टूट पड़ीं। दनाकों के साथ मलबे, कांच और तेज हवा की जैसी गूंज की आवाजों से जब फुरसत मिली तो सैनिकों ने कानों से उंगलियां निकाल लीं। पता चला, जहाजों की गनगनाहट फिर शुरू हो गयी है। सैनिक समझ गये कि दो-एक मिनट का समय अभी मिल सकेगा और सब के सब एक साथ,

प्रेमिकाओं, बैण्डवालों और शराब की बोतलों को छोड़कर किसी सेल्टर की तलाश में बार से निकल भागे।

प्रेमिकाएं उसके बाद करीब-करीब रात भर बतखों की तरह डरकर दुबकी रहीं और दुबारा बमबारी या सैनिकों की वापसी का इंतजार करती रहीं। पर जब जापानी जहाज भी नहीं लौटे और सिपाही भी नहीं, तो मैडे-लीन सबसे पहले बार से निकलकर बाहर आयी। बाहर घोर सुनसान और अंधेरा था। सारा शहर किसी खौफनाक कब्रिस्तान की तरह। सामने मेन रोड से दो काली-सी गाड़ियां चुपचाप बिना रोशनी जलाए तेजी से झप-टती हुई निकल गयीं। मैडेलीन बड़ी सड़कों पर नहीं निकली। अंधेरी गलियां पार करती हुई आगे बढ़ गयी।

मैडेलीन दुबारा अपने घर नहीं गयी। उसे पता था कि दूसरे दिन भी सैनिकों को उसकी जरूरत पड़ेगी। पिछले दो महीनों में उसका यह आठवां मौका था जब वह इन सैनिकों के आतिथ्य को मजबूर की गयी; क्योंकि वह अविवाहिता थी, ईसाई थी, गोरी थी और डान्स स्कूल में डान्स सिखाती थी और सैनिकों के आतिथ्य के लिए यह पर्याप्त था। नेटिव लड़कियों में अंग्रेजी तालीम का अभाव था और ऊंचे खयालात के महान् योरोपीय सैनिक उन्हें लेकर भले ही अपनी नफ्स को राहत दे सकें; पर यह वॉल, यह बार की रंगीनी, यह नसों को उत्तेजित करने वाला 'रॉक एन् रोल' नेटिव्स के साथ कैसे जमेगा? और हर ईसाई, गोरी, कुआंरी लड़की का यह सौभाग्य जरूरी हो गया कि वह इन गोरों के पूरे मनोरंजन का जिम्मा ले ले।

इस बार लौट कर मैडेलीन ने अपना मकान बदल लिया। वह मक-बरे के फाटक वाले कमरे में चली आयी जहां जार्ज नार्थ अपने बच्चों के साथ इस वक्त बिल्कुल अकेले रह रहे थे; क्योंकि मिसेज नार्थ खतरे के वक्त अपनी आंटी के शहर जा बसी थीं और जार्ज नार्थ के वहां पहुंचने पर वे इन्हें सूखी चाय को भी नहीं पूछते थे इसलिए जो कुछ होगा, होगा, ऐसा सोच कर वे वहीं जा रहे थे। वैसे बीवी के कुछ दिनों दूर चले जाने पर उन्हें सुकून ही नहीं था बल्कि एक और फायदा हो गया था। जार्ज नार्थ एक दिन उजड़ी हुई गलियों में बे-मतलब टहल रहे थे। सामने से चार-

पांच फौजी वर्दी के सैनिक बुरी तरह पिए हुए गुजरे। नार्थ को न जाने क्यों लगा कि उन्हें चुपचाप खिसक जाना चाहिए।

नार्थ को कतराता देखकर उनमें से एक चिल्लाया—"हाथ ऊपर उठाओ जासूस कुत्ते, वरना हम गोली मार देंगे।"

सैनिकों में से किसी के पास भी पिस्तौल या बन्दूक नहीं थी और वे भी जानते थे कि इस आदमी के जासूस होने की कोई सम्भावना नहीं, लेकिन जैसे कायर कुत्ता मक्खियों का शिकार भी ऐसे करता है, जैसे हिरन मार रहा हो। इसी तरह इन गोरे फौजियों को भी बे-जरूरत किसी को जासूस कहकर धर दबोचने में मजा आता था, क्योंकि उनमें से हर-एक जानता था कि फ्रण्ट पर जाने के बाद वे या तो बहादुरी के साथ पीछे हटते आने की घोषणा करते रहेंगे और या फिर खन्दकों में दुबक कर जापानियों के वापस चले जाने का इन्तजार करेंगे। इसीलिए उनकी मानसिक वीरता हर जार्ज नार्थ पर गोली चला बैठने का दावा करती थी।

नार्थ रुक गये। सैनिक उनके नजदीक आये। पांचों ने उन्हें घेर कर ऊपर से नीचे घूरना शुरू किया। फिर एक सैनिक ने आगे बढ़ कर उनकी बगलों और कमर आदि पर थापें मारनी शुरू कीं। एक बड़बड़ाया—"जरूर जासूस है वरना भागा क्यों नहीं।"

दूसरे ने कहा—"हां, और बहुत शातिर किस्म का जासूस है !"

इसी बीच थाप मारने वाले को महसूस हुआ कि कोट की भीतरी जेब में कुछ कागज जैसा है। वह चिल्लाया—"कागजात !"

कागजात का नाम सुनते ही पांचों ने उसे धर पकड़ा। दूसरा चिल्लाने लगा—"प्लान ! सीक्रेट !!"

कागज जेब से बरामद किए गये। खोलने वाले ने एक बार उन्हें देखा, फिर नार्थ पर नजर डाली, फिर कागज देखा और नार्थ को पहले से भी ज्यादा आंख फाड़ कर घूरा। बाकी चेहरों का सन्देह बढ़ गया। वे सभी एक साथ कागजों पर झुक पड़े।

"हुइया !" वे एक साथ चिल्लाए। कागज जिसने सबसे पहले देखा था, वह बोला—"ब्रॉय, सीक्रेट नहीं, प्राइवेट !" नार्थ की पाकेट से

नहाने वाली पोशाक पहने और कुछ नंगी-अधनंगी लड़कियों की तस्वीरें बरामद हुई थीं, जिन्हें नार्थ आजकल बड़ी लगन से पत्रिकाओं से कतर लिया करते थे।

अब वे नार्थ से बोले—"अच्छा तुम जासूस तो नहीं हो, पर दलाल जरूर हो!"

नार्थ की कुछ समझ में न आया, बोले—"मैं समझा नहीं!"

"लोमड़ी कहीं का! हमारा मतलब लड़कियों का दलाल!"

नार्थ को कोई जवाब ही न सूझा। पिए हुए सैनिकों को लड़कियों के नाम से नसों में उत्तेजना महसूस होने लगी थी। इसके अलावा जिसकी जेब के ऊपर रिबन की पट्टियां लगी हुई थीं, वह इससे पहले सिंगापुर में रह चुका था, जहां सैनिकों के लिए योरोपीय मनोरंजन जुटा सकने वाली जगहों पर बाकायदा अंग्रेजी बोलना और रम्बा को उल्टा-सीधा दुहरा सकने वाली ईसाई लडकियां मुहैया की गयी थीं। यहां कुछ ऊंचे अफसरों को छोड़ कर एक अरसे से उसे ऐसी एक भी लड़की नहीं मिल पायी थी जो उसकी वर्दी से खटमल की तरह चिपक कर मुहब्बत के वादे करे, रम्बा नाच कर युद्ध के बाद उससे शादी करने का यकीन दिलाए और रात भर उसकी अनाप-शनाप हरकतों पर हंस-हंसकर सुबह किसी दूसरे सिपाही की गोद मे बैठी मजे में चुइंगगम खाये।

उन्हें चुइंगगम खाने वाली ऐसी लड़कियों की जरूरत थी जो चियरियो कह सकें न कि वे जो सिर्फ उबला चावल खाकर रोना जानती हैं। नेटिव लडकियों से वे उकता चुके थे। पर जार्ज नार्थ दलाल नहीं थे और बिना दलाल बनाए सैनिक उन्हें छोड़ने वाले नहीं थे। अन्त में समझौता इस बात पर हुआ कि जार्ज नार्थ उन्हें कुछ ऐसी ही चुइंगगम खाने वाली लडकियों के पते देंगे और उन लड़कियों को हासिल करना सैनिकों की जिम्मेदारी होगी।

मालूम हुआ कि जगह की तंगी की वजह से तथा अन्य कुछ विशेष कारणों से ऐसी जगहें जहां नार्थ और लोगों के दिए हुए पते थे, सैनिकों के आश्रय का स्थान बनेंगी।

सैनिक गेस्ट! बहुत बड़ी इज्जत की बात साबित की गयी अगर

कोई किसी सैनिक गेस्ट को ठहरा कर एण्टरटेन करे।

लेकिन जार्ज नार्थ खुद इस योजना से क्या बच सकते थे ? किसी अतिथि की तलाश में निकले एक सैनिक को किसी ने बता दिया कि खुद नार्थ की लड़की मेडोरा भी जवान उम्र की है और नार्थ के पास रहने को खाली कमरा भी है। सैनिक वैसे कमरा खाली होने की समस्या पर गौर कम करते थे, क्योंकि एक ही कमरा होने पर अगर परिवार वाले खुद ही बेपर्दगी न करना चाहें तो सैनिक को परिवार की लड़की के साथ उसी एक कमरे मे भी रह जाने मे भी कोई एतराज नहीं होता था। मकबरे वाले फ्लैट में जिस दिन मैडेलीन पहुंची है उसके दूसरे दिन ही एक वर्दीवाला सैनिक नार्थ के मकान की सीढीयों पर अपना सामान गधे की तरह पीठ पर लादकर आ खड़ा हुआ। नार्थ के होश उड़ गये। सीढ़ियों पर अड़कर वे घिघियाने लगे।

सैनिक ने बड़े अन्दाज से उनके कन्धे पर अपनी एक बांह का बोझ लादते हुए कहा—"अच्छा भई, देखा जायेगा। तुम्हें मेरे लिए और कोई फिक्र करने की जरूरत नही। बोतल मेरे बस्ते में है, लड़की मैं ही खोज लूंगा। चलो ऊपर ले चलो।"

नार्थ बोझ लेकर भी सीढ़ीयों पर अड़े रहे। सैनिक ने उनकी पतलून का बेल्ट थामकर बिस्तर बन्द की तरह उन्हें सीढ़ीयों के ऊपर चढ़ाना शुरू किया। नार्थ सीढ़ियां चढ़-चढ़कर अटकते गये और रोने लगे।

मेडोरा बिल्कुल असहाय होकर मैडलीन के कमरे में जा घुसी। मैडेलीन दरवाजा बन्द करने के लिए आगे बढ़ी और ठीक इसी समय सीढ़ियों पर चढ़ते हुए सैनिक की नजर मैडेलीन के चेहरे पर पड़ी। सैनिक चिहुंक कर चिल्लाया—"हल्लो! बहुत खूब! दरवाजा खुला रहने दो प्रिय!"

मैडलीन दरवाजा बन्द कर चुकी थी। सैनिक दूसरे कन्धे का सामान भी नार्थ के कन्धे पर लाद कर झपटता हुआ दरवाजे पर आ भिड़ा। मेडोरा कांपती हुई मैडेलीन के कन्धे से सट गयी। मैडलीन को सहसा सूझ नहीं पडा कि क्या करे। सैनिक दरवाजा तेजी से खटखटाने लगा. मेडोरा की आशंका भयानक हो उठी। दरवाजे की खटखटाहट बढ़ने लगी।

बाहर से नार्थ के गिड़गिड़ाने की आवाज आ रही थी। मैडेलीन अनिश्चय की स्थिति में कुछ सोच ही रही थी कि मेडोरा ने उसे छोड़ दिया और छज्जे वाली खिड़की की तरफ लपकी। मैडेलीन की अपेक्षा उसकी किशोर बुद्धि ज्यादा तत्पर साबित हुई। मेडोरा फौरन खिड़की से बाहर छज्जे पर उतर कर दूसरी छत की तरफ जा निकली। मैडेलीन जब तक कुछ सोचे-सोचे, बराबर भड़भड़ाए जाने वाले दरवाजे की ऊपर वाली सिटकनी धीरे-धीरे सरक कर खुद-ब खुद खुल गयी। सैनिक अन्दर दाखिल होकर हंसने लगा। दरवाजे पर जार्ज नार्थ भी पीछे खड़े दिखे। शायद वे कमरे में मेडोरा को देख रहे थे। कमरे में मैडेलीन को अकेली देख कर उन्हें काफी सुकून हुआ क्योंकि उनके चेहरे का तनाव कुछ ढीला पड़ गया था।

लेकिन मैडेलीन, जैसा कि नार्थ ने सोचा था, उस सैनिक का शिकार नहीं हुई। दूसरे दिन सुबह जब वह सैनिक उसके कमरे से उतरा तो उसने मैडेलीन के दोनों हाथों को आहिस्ता से चूम कर बराबर खत लिखते रहने का वादा किया। जब तक वह दीखता रहा मैडेलीन छज्जे पर खड़ी उसे देखती रही।

मैडेलीन के कमरे में आने के बाद ही उस सैनिक को दौरा पड़ा। एक अरसे से वह हिस्टीरिया का मरीज था। मैडेलीन न चाहते हुए भी उस खूबसूरत नौजवान को यों कराहता न देख सकी। काफी रात गये जब वह ठीक हुआ तो उसने मैडेलीन के हाथों पर अपना गाल रख दिया। उसके बाद रात भर वह मैडेलीन से माफी मांगता रहा और अपनी जिंदगी के तमाम किस्से सुनाता रहा।

मेडोरा रात भर डरी बिल्ली की तरह छत पर चिपकी रही। जार्ज नार्थ ब्लू बेल के छज्जे पर टहलते रहे। एल्स्टन अपनी किशोरसुलभ उत्तेजना में भर-भर कर नार्थ से कहता रहा कि वह उसे जाने दें, ताकि वह उस सैनिक से निबट ले।

जब सुबह फूटी तो मैडेलीन सैनिक को बाकायदा विदा दे रही थी। नार्थ का अपना पुराना मर्ज उभर आया। वे सारा दिन मैडेलीन के बारे में तरह-तरह की बातें सोचते रहे। यहां तक कि कई दिन उन्हें मैडेलीन से आंख चुराने की जरूरत पड़ गयी। उनका मानसिक अपराध, उन्हें लगा,

जैसे उनके चेहरे पर मकड़ी की तरह रेंग रहा है या किसी गैंड़े के सींग की तरह उनकी नाक पर उग आया है जिसे मैंडेलीन पहचान लेगी।

नार्थ हर रात ब्लूबेल के किनारे टहलते हुए इन्तजार करते रहे; लेकिन सैनिक फिर नहीं आया। दरअसल सैनिकों ने एक दिन अपने कमाण्डिग आफिसर की प्रेमिका के घर ही धावा मार दिया था जिसके कारण नाराज होकर उसने शहर में सैनिकों की इस छूट पर रोक लगा दी।

नार्थ के मानसिक अपराध, जो उन्होंने मैंडेलीन को लेकर अपने नये रिश्ते बनाने के बारे में तजवीज किए थे, उनकी नाक पर सींग की तरह लम्बे होते गये और एक दिन जैसे जबरन उन्होंने मैंडेलीन से कुशल-मंगल पूछ डाला और फिर वे कुछ ऐसे घबराए से दिखे कि मैंडेलीन को पूछना पड़ा—"आपकी तबीयत तो ठीक है।"

नार्थ का खयाल सही है। मैंडेलीन महज एक 'किस मी क्विक्' की शाख है। नार्थ ने बड़े साहस के साथ जब पहले-पहल मैंडेलीन को अपने जीवन के इतिहास का परिचय दिया तो वह बोली—"आपकी पत्नी सचमुच काफी साहसी और सहनशील निकलीं।"

नार्थ को यह सुनकर लगा जैसे किसी ने उन्हीं की दुम उन्हीं के मुंह में चबाने के लिए घुसा दी हो। झल्लाकर वे बोले—"लेकिन ऐसी पत्नी की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है जो खुद अपने बांझपन पर गौर न करे और पति के नपुंसक होने की दवा करे।"

मैंडेलीन ने बहुत ही सहजढंग से कहा—"लेकिन विश्वास भी तो कोई चीज होती है। विश्वास, आप जानते हैं, अंधेपन की स्थिति का ही सहारा होता है। इस तरह उससे तो सहानूभुति ही करनी चाहिए।"

"सहानूभुति तो मैने की! इसीलिए मैंने दूसरी शादी नहीं की।"

"शादी नहीं की? छुपा कर भी नहीं?

"नहीं!"

"लेकिन फिर मेरी कल्पना से वाहर की वात है कि कोई लड़की विना शादी किए आपके दो बच्चों की मां वन गयी।"

"आपका क्या ऐसा खयाल है कि वह कोई फाहशा किस्म की लड़की थी।"

"हां हो सकता है, मेरी बात गलत हो, वह फाहशा न हो, महज उसे कुछ बच्चे पैदा करने का ही शौक हो।"

"माई गुडनेस!"—जार्ज नार्थ ने आगे वह बात बढ़ाने की हिम्मत अपने में नहीं पायी। मैडेलीन की बातों ने जैसे उन्हें छूकर 'किरा मी विदक' के कांटों की तरह जलन पैदा कर दी।

एल्स्टन ज्यादा प्रगतिशील खयालात का है, क्योंकि वह अभी किशोर है। इसीलिए वह मैडेलीन से महज सहानुभूति रखता रहा। उसका खयाल था कि मैडेलीन की मजबूरी ही उसकी मुस्कराहट थी। आज समय इतना किसे रहा कि अपनी चोट पर कराह सके। यह मजबूरी है कि जख्म पर टेप चिपकाकर हमें तुरन्त हंसना पड़ता है।

पर एल्स्टन इससे ज्यादा कुछ नहीं सोच सकता। समय ने कराहने की ही नहीं, सोच न पाने की मजबूरियां इन्सान पर लाद दी हैं। एल्स्टन की मां ने पहली बार कुछ सोचना शुरू किया था और कुछ सोच पाने से पहले ही वह एल्स्टन के जीवन को अनसोचा छोड़ कर मर गयी। जार्ज नार्थ ने एल्स्टन के भविष्य के लिए कुछ सोचना चाहा, पर वे खयाल चिड़चिड़ी मामा की नाक पर उगे मस्से के चारों तरफ मक्खियों की तरह भनभना कर डूब गये।

एल्स्टन कान्वेंट में पढ़ेगा फिर केम्ब्रिज सीनियर करेगा और वह हिन्दुस्तानियों से बेहतर अंग्रेजी तहजीब का दावेदार है इसलिए इंग्लैण्ड जाकर केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी का ग्रेजुएट होगा···सही-सही शायद एल्स्टन यही न सोचता हो, लेकिन इतना जरूर था कि वह···

लेकिन सिर्फ चर्च की घंटियां ही सफलता की घंटियां नहीं होतीं। हर साल मिलने वाले सेण्टाक्लाज के तोहफे में जिन्दगी का सपना मिलता नहीं। इसीलिए एल्स्टन भी मेडोरा की केरियर पर बैठकर उन्हीं स्कूलों में जाता रहा, जहां उसकी जबान दूसरों की जबान से बेहतर भली मानी जाती हो, पर औरों की देशी जबान की तुलना में अकेली पड़ती थी और एल्स्टन अपनी जुबान के साथ बिल्कुल असहाय। दर्जे के साथियों से कभी वह बोला तो उसे लगा कि वे उसके बड़प्पन को स्वीकार कर रहे हैं, पर इतना कभी न

हुआ कि कोई उसकी बात पर दिल खोलकर हंसा हो या खुद वह किसी की बात पर दिल खोलकर खिलखिलाया हो।

एक साथ जैसे-तैसे खींचने के बाद फिर दो साल वह घर पर बैठ कर मेडोरा के साथ राबिनहुड की कहानी याद करता रहा और तीसरे साल आटी रोज़ी की बहुत कोशिश से वह उस स्कूल में जाने लगा जहां पढ़ने वाला हर बच्चा किसी उम्दा नस्ल का योरोपीय खून था और किसी उम्दा भविष्य के लिए योरप जाने वाला था।

एल्स्टन ने कुछ ही दिनों में महसूस किया, जैसे उसका केम्ब्रिज का सपना शायद कोई डरावना खयाल था। जैसे बादलों में हंस देखते-देखते बच्चे को चुड़ल नजर आने लगे, ठीक उसी तरह केम्ब्रिज का ख्वाब देख-कर वह डरने लगा। लेकिन शायद उसका डरना भी जरूरी नहीं था क्योंकि सेण्टाक्लाज क्रिस्मस में उसके लिए टीन की रेलगाड़ी या फ्लेनेल की कमीज से ज्यादा मंहगी चीज कभी नहीं लाता था जबकि केम्ब्रिज की तैयारी करने वाले उसके उम्दा खून वाले साथियों के लिए वह जर्मनी की बनी खूबसूरत साइकिल से लेकर सुनहली दस जिल्दों वाली कीमती स्टूडेण्ट्स एन्साईक्लोपीडिया तक ले आता था। जहां उसकी जबान अकेली थी वहां वह उपेक्षित था और जहां उसे सिर्फ अपनी ही जुबान मिली वहां ··

नहीं, एल्स्टन कभी-कभी सोचने लगा कि वह दो में से कोई नहीं है और दो में से किसी के लिए भी नहीं है। कोई तीसरी जगह है जहां वह है और वह ऐसी किसी तीसरी जगह है जो किसी नाजायज औलाद की तरह है, जिसे समाज भी पसन्द न करे और मां भी टोकरे में रखकर वहा दे। वह शायद किसी चमगादड़ का हमनस्ल है जो कभी चूहों के साथ रहना चाहता है और कभी चिड़ियों के साथ; और दो में से किसी एक का भी वह हम-साया नहीं हो सकता।

कुछ नहीं होगा। उसका भविष्य भी शायद ऐसा ही एक धोखा है जैसा सेण्टाक्लाज द्वारा भूल से दिया वह डिब्बा जिसमें इत्तफाक से कोई भी सौगात रखी नहीं जा सकी। एल्स्टन को लगा, वह असहाय है, शायद हताश भी है, शायद यतीम जैसा भी है! लोग देखते थे कि प्राय: एल्स्टन

मेडोरा को अपने सामने दोनों बाहों से बांधे-बांधे ही पूरे मकबरे मे फिरा करता था। दूसरे बच्चों की गेंद जब कभी खेलते-खेलते दूर जा गिरती तो एल्स्टन उसे उठाकर चुपचाप उन्हीं की तरफ फेंक देता और मेडोरा की तरफ देखकर हल्के मुस्कुराता, पर कभी खेलों में शरीक नहीं होता है।

शिरकत उसे कहीं नसीब नही हुई और इसीलिए एल्स्टन चर्च जरूर जाता था। वह गुनाहों का इकबाल जरूर करता था। वह नहीं जानता था कि गुनाह क्या है, लेकिन फिर भी वह इकबाल करता था। महज इकबाल की गूंज ही ऐसी थी जो उसे मजबूर कर देती थी, बिना कोई अपना अर्थ उस तक पहुंचाए, जैसे चिड़िया अजदहे की आंखें देखकर मजबूर हो जाती है। उसका अकेलापन जैसे यहां आकर अपने को छू सकता था और अपने को छूकर ही इस बात का यकीन कर सकता था कि वह है, वह कहीं जीवित है। इकबाल का हर लमहा उसके इसी अकेलेपन में अपनी परछाइँ पहचानने का एहसास होता था। एल्स्टन जानता था कि उसके न जाने कितने परिचित चर्च नही जाते। खुद उसका पापा महज कुछ खास-खास मौकों पर ही चर्च जाता था। चच सिफ वे जाते थे जो किसी तरह अकेलेपन से सताए थे; मस्लन् बूढ़े जो प्रभु यीशु के सहारे भी भीख चाहते थे या वे नौजवान, जो फादर के सामने अपनी प्रेमिका का हाथ चाहते थे।

एल्स्टन अकेला था और असहाय था इसलिए चर्च में घुटने टेककर बिना अर्थ समझे भी बड़बड़ाने में सुकून पाता था—मुझे विश्वास है, सर्व शक्तिमान, पृथ्वी और स्वर्ग के रचयिता ईश्वर में मुझे विश्वास है और उसके एकमात्र पुत्र जेसस क्राइस्ट में मुझे विश्वास है जो पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ में आया था उस पर मुझे विश्वास है, कुमारी मेरी में मुझे विश्वास है···मुझे विश्वास है···

विचार और परीक्षा हमेशा तुलनाओं से जन्म लेती हैं। एल्स्टन अकेला था इसलिए तुलना की गुंजाइश नहीं थी, इसलिए एल्स्टन सिर्फ विश्वास करता था। लोगों का कहना था कि एल्स्टन भविष्य में अच्छा पादरी बन सकता है। लोगों का मत था उसमें अद्भुत धर्म-परायणता है। पर एल्स्टन के लिए ये सम्मतियां या तो टिटी की ग्रांड मां ने दी थीं या

फिर मोनो की ग्रांड मां ने। जबकि टिटी और मोनो उस पर सिर्फ हंसते थे और वह देखता था कि टिटो के पापा और मोनो के अंकल फादर के नाम का मजाक बनाया करते। पर एल्स्टन अनायास चर्च जाता था।

वह शायद यीशु की दया पा भी जाता, लेकिन परिस्थितियां एल्स्टन से ज्यादा चालाक हैं। एक बार उसके क्लास टीचर ने उसे मेडोरा को साइकिल पर बैठा कर स्कूल पहुंचाते देखा था। उस दिन उन्होंने एल्स्टन की कापी खास तौर से देखी। एल्स्टन से यह भी पूछा कि वह नाश्ता क्या करता है, घर से खाकर आता है या नहीं, उसके परिवार में कौन-कौन है और कुशल से हैं या नहीं। फिर दूसरे दिन से वह विशेष कृपा बढ़ने लगी और एल्स्टन को खास तौर से तेज कराने के लिए वे उसे घर पर भी बुलाने लगे। एक दिन उन्होंने यह भी कहा कि अगर एल्स्टन मेडोरा को भी ले आया करे तो वे उसे भी थोड़ा-बहुत पढ़ा देंगे। एल्स्टन बहुत खुश हुआ। दूसरे दिन जब वह मेडोरा को लेकर पहुंचा तो टीचर ने उन्हें ढेर सी टॉफियां खिलाईं। मेडोरा को उन्होंने बहुत ज्यादा प्यार किया, बोले—"बड़ी सुन्दर है, बड़ी भाग्यशाली!"

मेडोरा शर्मीली थी, वे उसे खींचते हुए बोले—"अरे, तुम इस तरह झेंपती हो तो पढ़ कैसे पाओगी?"

उस दिन मेडोरा को उन्होंने अपनी गोद में लेकर पढ़ाया। पढ़ाते वक्त वे उसके बाल सहला कर प्यार भी करते रहे। एल्स्टन को भी गिलवर्स ट्रैवेल्स की उम्दा-सी कहानी सुनायी। चलते वक्त मेडोरा को बहुत चूमकर प्यार किया। एल्स्टन उस दिन बड़ा खुश रहा। स्कूल में भी उसे लगा कि सहसा जैसे आंखों से किसी ने अन्धेपन की एक परत उतार ली हो।

दूसरे दिन मेडोरा जाने के वक्त एल्स्टन के अनुमान के विपरीत उत्साहित नहीं लगी। इस बार एल्स्टन को उन्होंने रिपवान विकल की कहानी का एक बड़ा मजेदार किस्सा सुनाया। इस किस्से को सुनाते वक्त वे यह जरूर ध्यान रखते रहे कि मेडोरा ऊबे नहीं, इसलिए उसे बराबर प्यार करते रहे।

क्रम कई दिन चलता रहा। एल्स्टन ने रिपवान विकल की पूरी

कहानी सुनी, राबिन्सक्रूसो के दुस्साहस की घटनाएं सुन-सुन कर ताज्जुब प्रकट किया और डॉन क्विग्जोट का एक अध्याय भी सुन डाला। पर वह देखता था कि मेडोरा पहले तो जाने के वक्त हतोत्साह ही हो जाती थी, बाद में कतराने लगी। दो-एक दिन बाद फिर उसे काफी कोशिश से जाने के लिए राजी करना पड़ता। इसके बाद सहसा एक दिन मेडोरा ने टीचर के यहां जाने से एकदम इनकार कर दिया। एल्स्टन की कुछ भी समझ में नहीं आया। वह समझाता रहा, नाराज भी हुआ, पर मेडोरा जाने के नाम पर हिली तक नहीं। आखिर एल्स्टन ही अकेला गया। टीचर ने जाते ही पूछा—"मेडोरा कहां है, तबीयत तो उसकी ठीक है ?"

एल्स्टन डॉन क्विग्जोट की पूरी कहानी सुन डालने के मूड में था, इसलिए उसने सिर्फ इतना ही कहा—"बस यों ही नहीं आयी। कुछ काम था।"

पर एल्स्टन ने देखा कि आज टीचर अपनी कुर्सी पर सीधे नहीं बैठ पा रहे थे। कभी नौकर को पानी लाने के लिए चिल्लाने लगते थे और कभी सिगरेट लाने के लिए। एक बार तो ऐन जिस वक्त डॉन क्विग्जोट सरकस के शेर से मुकाबिला करने जा रहा था और एल्स्टन दम साध कर नतीजे का इन्तजार कर रहा था, टीचर साहब आधा वाक्य बोल कर ही अपना कान खुजलाने लगे। फिर दो-तीन बार एल्स्टन के यह पूछने पर कि आगे क्या हुआ, वे जरा उकता कर बोले—"अच्छा अभी जरा मुझे कुछ काम है, अब बाकी कल सुनना।"

एल्स्टन बड़ा बेचैन रहा। मुश्किल से दूसरी शाम आयी। मेडोरा उस दिन भी नहीं गयी और एल्स्टन को टीचर ने बिना आगे का किस्सा सुनाए लौटा दिया यह कहकर कि वे कहीं जरूरी काम से जा रहे हैं। तीसरे दिन भी मेडोरा नहीं गयी। एल्स्टन उस पर बहुत नाराज हुआ। कुछ देर गुस्से में भरा खड़ा रहा, फिर मेडोरा के गाल पर एक तमाचा जड़ दिया। मेडोरा रो पड़ी। एल्स्टन को भी रुलाई आने लगी। वह मेडोरा को बहुत प्यार करता था। रोते-रोते उसने कहा—"लेकिन फिर तुम वजह क्यों नहीं बताती हो कि क्यों नहीं जाओगी ?"

मेडोरा ने हिचकी लेकर कहा—"तुम्हीं आखिर क्यों मुझको जबर-

दस्ती ले जाना चाहते हो ?"

पढ़ने के लिए ! पढ़ने में तेज हो जाओगी तो तुम्हें सब कोई प्यार करेगा।"

"मैं पढ़ने में तेज नहीं होना चाहती। प्यार की भी मुझे कोई खास जरूरत नहीं है।"

"लेकिन यह तो मूर्खता की बात है।"

"लेकिन, लेकिन मैं नहीं जाऊंगी। मुझे वहां मत ले जाओ। तुम अकेले जाया करो।"

"मेडोरा तुम समझती नहीं हो!"—एल्स्टन ने आजिज होकर कहा।

"क्या ? क्या नहीं समझती हूं ?"

"तुम नहीं जाती हो, इसलिए टीचर ने मुझे डॉन क्विक्जोट की बाकी कहानी नहीं सुनायी।"

मेडोरा चुप हो गयी। थोड़ी देर बाद धीरे से बुदबुदायी - "लेकिन मुझे वहां जाना अच्छा नहीं लगता। देखो न राबर्ट···"

मेडोरा आधी बात कहकर रुक गयी। एल्स्टन ने जब बार-बार आग्रह को दुहराया तो उसने सिर झुकाकर फ्रॉक की स्मॉकिङ् को खुरचते हुए एल्स्टन से बताया कि मेडोरा टीचर को पसन्द नहीं करती। टीचर गंदा दीखता है। वह उसके होंठों में एक दिन बोसा ले रहा था। बच्चों को कहीं होंठ पर बोसा लेते हैं ? और फिर यही नहीं वह···वह—मेडोरा ने और ज्यादा संकोच के साथ बताया- वह एक सख्त चीज उसके कूल्हों में चुभाता है।

"वह क्या ?"—एल्स्टन ने ताज्जुब से पूछा।

मेडोरा ने और कुछ नहीं बताया। आंखों में फ्राक लगाकर भाग गयी। एल्स्टन भी फिर टीचर के यहां नहीं गया। जाने से कोई फायदा नहीं था। पर उसके जेहन के सामने अकेले होने की धुन्ध फिर छा गयी। सेण्टाक्लाज उसके लिए सपनों की सौगात लाते-लाते फिर रुक गया। इसीलिए एल्स्टन ज्यादा पढ़ भी न पाया।

लेकिन वह सारा दिन घर में रहता तो उसकी मामा उसे बहुत तंग

करती थी। वह उससे एक बार कसाई की दूकान से रान का गोश्त मंगाए और रान का गोश्त ले आने पर चिड़चिड़ाती कि वह चाप क्यों नहीं लाय और फिर दुबारा एक आने का प्याज लाने भेज देती। प्याज भी वह ले आता तो वह उससे आधा सेर आलू लाने को कह देती। एक दिन चूल्हे में एक बाल्टी नहाने के लिए चढ़ाया गया पानी जब बाथरूम पहुंचाने का हुक्म उसे मिला तो उसने वही पानी चूल्हे में उलट दिया। लेकिन चूल्हे से इतनी ज्यादा भाप उड़ी की उसका जांघों तक का हिस्सा भाप से बुरी तरह जल गया। एल्स्टन को बुखार आ गया। एक महीने तक वह फफोलों में कराहता रहा।

जार्ज नार्थ बच्चों की इस स्थिति को देखते तो चुपचाप बाहर निकल जाते। यों भी वे मामा के डर से प्रायः घर कम ही आते थे। नार्थ के साथ न जाने कौन सा दुर्भाग्य था कि उन्हें कोई नौकरी एक दो साल से ज्यादा टिका ही नहीं पाती थी। कभी अखबार में सब एडीटरी करते हुए दिन में सोते, रात को नौकरी बजाते और एक दिन अखबार के दफ्तर की छंटनी में वे बेकार हो जाते। कभी सीजन के वक्त किसी बुकसेलर के यहां किताबें निकालने-रखने का काम मिल जाता और सीजन बीत जाने के बाद वे फिर मामा के तानों का शिकार होते रहते। जब नार्थ बेकार होते, मामा घर में इतनी जोर-जोर से झाड़ू लगाती कि नार्थ को घर से बाहर ही जाना पड़ता और नौकरी मिल जाती तो मामा बेहद धीरे-धीरे झाड़ू देती, धीरे-धीरे नहाती और दफ्तर की जल्दी की बात नार्थ के मुंह से निकली नहीं कि वह गरज पड़तीं—काम करते-करते उनकी तो हड्डियां टूट जाती हैं और जरा से दफ्तर के पीछे नार्थ नाहक उनकी जान लेने को तुले हैं!

नार्थ इस इल्जाम को कभी-कभी बिना पूरा सुने भी दफ्तर चल पड़ते थे, बिना कुछ खाये ही। प्रायः वे समय से बहुत जल्दी ही दफ्तर चल दिया करते थे ताकि इस बात की नौबत ही न आये। लेकिन दोपहर को उन्हें या तो डबल रोटी खरीद कर चाय के साथ निगलनी पड़ती थी या चार केले खाकर पानी पी लेना पड़ता था। इस पर कभी-कभी और ज्यादा हाय-तौबा मचती थी। मामा को तनख्वाह में से केन्टीन के बिल

के बीस-पच्चीस रुपए कम मिलते। ऐसी स्थिति में मेडोरा और एल्स्टन चूहों की तरह इधर-उधर दुबकते फिरते थे और मामा अकारण ही जहां-तहां झाड़ू पटका करती थी। वैसे यह बहुत गनीमत की बात थी कि प्राय: जब नार्थ बेकार हो जाया करते थे मामा थोड़े दिन झीख-झल्ला कर अपने घर चल देती थीं, ताकि परिवार के आर्थिक कष्ट से वे बची रहें।

नार्थ शलजम का सूप और होटल की रद्दी डबल रोटी का इन्तजाम कर सकने लायक पैसे हमेशा पास रखते थे। कभी-कभी मामा को इस पर शक हो जाता; पर इस मामले में नार्थ बड़े कट्टर थे।

लेकिन इस सब का नतीजा? एल्स्टन प्राय: सोचता कि उसकी पैदाइश चांदी का चम्मच मुंह में लेकर नहीं मामा की झाड़ू पीठ पर लेकर हुई है। इसलिए एल्स्टन ने जिंदगी में कभी क्रोध नहीं प्रकट किया। क्रोध ही नहीं, उसे हंसी भी शायद ही आती हो।

नार्थ ने एक दिन मामा कि अनुपस्थिति में टमाटर का सूप तैयार किया, ताजी डबल रोटी मंगायी और दो अण्डों को भी उबाला। एल्स्टन के लिए यह खासी दावत का सामान था। और फिर पापा ने बताया कि जिस बुकसेलर के यहां उन्होंने दो महीने पहले काम छोड़ा है वह अपनी दुकान में एक अंग्रेजी पढ़-बोल सकने वाला छोकरा रखना चाहता है, अगर एल्स्टन कर ले तो यह स्थायी आमदनी बनी रहेगी। पैंतीस रुपए महीने देगा।

एल्स्टन ने उस दिन सोने से पहले पूरे आध घंटे ईशु मसीह को शुक्रिया अदा किया और दुहराया कि वह हर चीज में विश्वास करता है, सर्वशक्तिमान ईश्वर में, ईश्वर के पुत्र में, पवित्र आत्मा में, कुमारी मरियम में . हर एक में विश्वास करता है।

एल्स्टन विश्वास करता है इसीलिए उस बुकसेलर की दुकान धीरे-धीरे बड़ी होती गयी। पहले वह एक दुकान के चबूतरे पर किताबें लगाता था और अब चार दूकानें उसके अपने चबूतरे पर लगने लगीं। एल्स्टन विश्वास करता था, इसीलिए वह उस दूकान का स्थायी कर्मचारी बना रहा। उसने मेडोरा को शार्ट हैण्ड और टाइपराइटिंग पढ़ने की सलाह दी। मेडोरा ने किचेन से थोड़ी फुरसत लेकर टाइपराइटिंग का स्कूल देखना

शुरू किया, उसकी मामा इस बार पढ़ाई में विशेष नाराज नहीं दिखी। वह शायद मन ही मन इस बात पर खुश भी हों कि एल्स्टन की तरह मेडोरा भी अब कुछ कमाने लगेगी।

महायुद्ध की आफत के बाद जब मामा अपने घर जाने लगी तो उसने एल्स्टन को सख्त हिदायत कर दी थी कि मेडोरा की पढ़ाई कतई नहीं बंद होनी चाहिए (गोकि स्कूल बंद हो चुका था) और एल्स्टन को खुद मेडोरा का ख्याल रखना चाहिए क्योंकि वह उससे बड़ा है। मिस्टर नार्थ जो अब तक बाकायदा हम्टी-डम्टी बन चुके थे अपनी पतलून की बगल में हाथ रगड़ते हुए छज्जे पर चले गये, नीचे मुह करके ढेर सा थूक डालने की कोशिश करने लगे। मगर नीचे जो उनकी निगाह गयी तो थूक ही नहीं उनका खून भी सूख गया—मामा कानों पर रूमाल चढ़ाए धपाधप छज्जे के ठीक नीचे से सड़क पर लपकती हुई रिक्शे को आवाज दे रही थीं। नार्थ जानते थे कि मामा को गंदगी से नफरत है। थूक मे गंदगी के कीटाणु रहते हैं। गन्दगी को झाड़ू मारे बिना रहा नहीं जा सकता इसीलिए··· लेकिन ऐसी कोई हरकत करने से पहले ही वे छज्जे को छोड़कर अन्दर आ गये। इस वक्त आकस्मिक हमले से सुरक्षा वाला मनहूस साइरन सहसा बजाकर किसी बुरे वक्त के लिए लोगों को अभ्यस्त कराया जा रहा था।

5

ईश्वर ने धरती बनायी और स्वर्ग बनाया। सैलाब था सिर्फ जिसके ऊपर घने अंधेरे में ईश्वर की आत्मा टहलती थी। तब ईश्वर ने कहा: रोशनी हो जा, और उजाला हो गया। उसने दिन और रात को अलग-अलग कर दिया। फिर उसने घास, झाड़ियां, पौधे और दरख्त बनाये। उसने देखा, अब काफी अच्छा हो गया था। उसने पशु-पक्षी भी बना दिए। फिर धूल लेकर इन्सान बनाया, ठीक अपने जैसा ही। ईडेन के पूरब में उसने एक बाग बनाया और इन्सान को उसी में रख दिया; ताकि वह बाग की देखभाल करता रहे। इन्सान से उसने यह भी कहा कि इस बाग का हर फल तुम खा सकते हो। लेकिन अच्छे और बुरे के ज्ञान का फल खाना उसे मना था। खाने पर वह मर जायगा, ऐसा ईश्वर ने कह दिया था।

फिर ईश्वर ने ही सोचा कि इन्सान अकेला रहे। यह ठीक नहीं। इसलिए एक दिन वह गहरी नींद में सो गया, ईश्वर ने उसकी एक पसली निकाल ली और उसी पसली से ईव बना कर मनुष्य को दी। ईव को देख कर इन्सान ने कहा कि वह उसे औरत कहेगा। और कहते है कि वे दोनों नंगे थे और शरमाते नहीं थे।

शर्म से भर कर अंजीर की पत्तीयों का तहमद उन्होने तब पहना, जब उन्होंने अच्छे-बुरे ज्ञान के फल को खा लिया।

विल्सन का मन नहीं लगता इस कथा में। विल्सन का मन किसी धर्म कथा में नहीं लगता; क्योंकि धर्म-कथाएं उसकी जरूरत नही थीं और ईसाइयत भी उसकी जरूरत नहीं थी। पर अब वह फिर अपनी ईसाइयत को बदल ले, ऐसी जरूरत नहीं समझता क्योंकि यह परिवर्तन भी उसे उतना

ही बेजरूरत लगता है जितना किसी का स्वीकार। इसीलिए वह धर्म कथा को प्रायः यों देखता है जैसे बैल अपनी पीठ पर बैठे कौए को देखता है। यों उसे यह किस्सा गलत भी लगता है। उसे नहीं लगता कि अच्छे-बुरे के ज्ञान का फल खा लेने पर इन्सान को शर्म लगने लगी। इन्सान की हया गायब हो गयी है, उसका खयाल है।

वह रोजी को जानता है, रोजी की बहन ईसाबेला के बारे में सुन चुका है जो दिल की बीमारी में चल बसी। रोजी हर इन्सान को देख कर हसती है जबकि कथा कहती है कि फल खाने के बाद औरत को सिर्फ पति के लिए ही मुस्कराने का अभिशाप मिला था। विल्सन प्रायः रोजी की मुस्कुराहट से दबता है। उसे लगता है कि रोजी यों मुस्कराती है जैसे उसे किशमिश के दाने की तरह मसल देगी। मसल कर फेंक देगी। रोजी के गाल क्रीम जैसे मुलायम और चाकलेट जैसे स्वादिष्ट हैं। होंठ काटती है तो लगता है अंगूर का दाना फूट जायेगा। मगर रोजी की नाक लम्बी मोमबत्ती जैसी है जिसे विल्सन सुलगाने को कसमसाने लगता है।

रोजी उसके रेस्त्रां की सबसे अच्छी आमदनी है। वह शाम को कभी-कभी दो-तीन ट्रिपें भी कर लेती है। किसी ग्राहक को साथ लेकर आती है। दो जगह खाना वगैरह खाया जाता है, रात भर के लिए कमरे में ठहरने की एण्ट्री की जाती है; जिसमें रोजी श्रीमती अमुक लिखी जाती है और दो घण्टे बाद जब रेस्त्रां-होटल छोड़कर रोजी जाने लगती है, तो बिल की स्लिप वापस कर देती है। उस स्लिप पर विल्सन "कैन्सिल्ड" की मुहर लगाकर रखता जाता है। ऐसा ही मालिक का कहना है। विल्सन कारण जानता है—इन्कम टैक्स से बचत होती है। विल्सन का मालिक चालाक है। वह डबल फ्लूक कभी नहीं खेलता। रेस्त्रां में लड़कियां नहीं रखता। बस इतने भर की ही गुंजाइश उसने कर रखी है कि लड़कियां अपने गाहक बाहर से लेकर आयें, रात भर का आठ रुपया, दस रुपया कमरा भाड़ा दें और आठ-दस रुपए का खाएं-पिएं। वह रुपये-दो रुपए कभी-कभी किसी मुतवातिर आने वाली लड़की को कमीशन भी दे दिया करता है।

वार टाइम से परिस्थितियां कुछ टेढ़ी हो गयीं इसलिए रोजी भी

युद्ध पसन्द नहीं करती। रेस्त्रां के लिए ग्राहक ही नहीं मिलते। रोजी युद्ध के दिनों को बहुत नफरत से याद करती है। जिस दिन वह खाली होती है, और प्राय: ड्राइ-डे को वह बिल्कुल खाली रह जाती है जैसे कोई टैक्सी जिसका मीटर सारा दिन नीचा न किया जाय, तब वह रेस्त्रां में बैठ कर विल्सन से गप लड़ाती है। वह उसे वार पीरियड के वे किस्से सुनाती है जब एक सैनिक उसे जबरदस्ती घसीट कर किसी गली में ले गया था और रोजी को सिर्फ लिपटा कर, चूम कर और उसके शरीर को टटोल कर ही छोड़ दिया था। रोजी को सैनिक के इस ढंग पर बेहद ताज्जुब हुआ था। वह समझती थी कि सैनिक उसके साथ जरूर बलात्कार करेगा। रोजी ने उसे रोक कर आखिर पूछा ही कि उसने बिना कुछ किए ही रोजी को यों क्यों छोड़ दिया। सैनिक ने जवाब दिया था कि उसने सुना है युद्ध के समय हिंसा ही नहीं बढ़ जाती; बल्कि भयानक रोगों के कीटाणु भी बढ़ जाते हैं और वह सिर्फ जापानियों से लड़ने आया है सिफलस के कीटा-णुओं से नहीं।

रोजी ने कहा : "पर मुझे तो यह रोग कभी नहीं हुआ!"

"सैनिक ने उसे हटाकर उसका ब्लाऊज लौटाते हुए कहा : "हम सैनिक लोग विश्वास नहीं, निर्णय के आदि होते हैं।"

रोजी बुरी तरह हंस-हंस कर दुहरी हो गयी। विल्सन के कन्धे पर थाप मारकर उसने कहा : "कितनी मूर्खता से भरा हुआ निर्णय करते हैं सैनिक।"

लेकिन विल्सन रोजी की हंसी में पूरा साथ नहीं दे पाता क्योंकि उसका मन उस केकड़े की तरह हरकत करता है जिसकी सब टांगें टूट गयी हैं और जो अब अपनी ठठरी भी नहीं बदलना चाहता इस डर से कि नयी ठठरी में भी उसके सारे के सारे पैर उगा सकने की ताकत नहीं होगी। विल्सन सिर्फ हीं-हीं कर सकता है। रोजी उसे कुछ और किस्से सुनाना शुरू कर देती है। उस छाबड़ी वाले पंजाबी का किस्सा जो अब टैक्सी चलाता है और एक दिन उससे कह रहा था कि टैक्सी में जोड़े बैठा कर वह दस-पांच रुपए लेकर रेड रोड चला जाता था और वहां टैक्सी में ही जोड़ा एक दूसरे से जब लिपटने लगता तो वह टैक्सी रोक कर उतर जाता।

जोड़ा अपना काम खत्म करके जब उसे आवाज देता तो वह अपना पैसा ले लेता और टैक्सी पर ही उन्हें किसी बाजार में छोड़ आता। एक बार वह जब पैसे लेने के लिए जोड़े के पास लौटा तो उसने पाया कि आदमी के साथ जो औरत है वह पंजाबन है और खुद उसी की बीवी है। उस दिन से उसने अपना घर उजाड़ दिया और आगे से जोड़े बैठाकर रेड रोड पर एकस्ट्रा आमदनी करने का धन्धा छोड़ दिया।

विल्सन ये किस्से सुन-सुन कर बहुत झल्लाता है; क्योंकि वह अपने को ऐसा केकड़ा महसूस करता है जिसके सब पैर टूट गये हैं।

"तुमने विली कभी किसी को प्यार किया है ?"—रोजी उससे पूछती है।

"मैंने एक बार एक केकड़ा खाया था !"

"क्या मतलब ? मुहब्बत और केकड़े से क्या लेना-देना ?"—रोजी ने हैरत से पूछा। हैरत में आने पर रोजी अपने कन्धे कुछ इस तरह समेटती है कि उसका ब्लाउज आगे से ढीला हो जाता है और उसकी छातियों के बीच की संधि ताजी बनी सफेद सीमेंट की टनेल जैसी लगने लगती है।

विल्सन ने उसी सादगी से टनेल की तरफ से अपनी नजर हटाते हुए कहा—"केकड़ा खाने से सबको जहर फैल गया था।"

"लेकिन केकड़ा खाने से मुहब्बत का क्या सम्बन्ध है ?" रोजी ने एक दबीज डिबेटर की तरह अपनी हथेली मेज पर पटकी।

"मुहब्बत भी उतनी बदसूरत होती है जितना केकड़ा। मुहब्बत भी उतनी ही लजीज होती है जितना छिले हुए केकड़े का गोश्त ! और कभी-कभी मुहब्बत भी उसी तरह जहरीली होती है जैसे कोई-कोई केकड़ा !"

"तुम्हारा मतलब मुहब्बत भी सिर्फ केकड़ा होती है ?"

"हां कभी-कभी जहरीला केकड़ा।"

"केकड़ा ! लेकिन यह तो काफी मजेदार बात है।'

"हां मुहब्बत के बारे में हर बात उतनी ही मजेदार होती है जितनी चाकलेट !"

"क्या तुम्हारा बेयरा मेरे लिए चाकलेट ला सकता है ?"— रोजी

ने ललचाते हुए पूछा।

"नहीं। चाकलट सामने की सिगरेट वाली दुकान पर मिलती है। मेरा बेयरा सिर्फ एक प्लेट मुहब्बत ला सकता है।"

"एक प्लेट मुहब्बत ?"

"हां मेरा मतलब एक प्लेट केकड़े का गोश्त !"

"हो हो ! बॉय !"—रोजी कुर्सी पर उछल कर चिल्लायी।

पेट से ट्रे चिपकाए बेयरा न जाने किस कोने से फौरन बरामद हो गया।

"बॉय एक प्लेट मुहब्बत लाओ !"—रोजी ने हुक्म दिया।

बेयरा सभ्य लोगों की तरह बिना मुस्कुराए खड़ा रहा। विल्सन ने उसे केकड़े का गोश्त और नान लाने का कह दिया।

"विली, मोहब्बत अकेले नहीं खायी जाती !"—रोजी ने कहा।

"केबिन में चलो मैं आता हूं।" विल्सन ने व्यस्त होकर जवाब दिया।

रोजी ने विल्सन के चेहरे पर झुक कर देखा, मुस्कुरायी और उठकर अपने कूल्हे जोर-जोर से झटकती हुई केबिन के अन्दर चली गयी। विल्सन बेमन बिल की कापियां वगैरह कुछ देर इधर-उधर उलटता-पुलटता रहा, फिर वह भी केबिन में चला गया। रोजी दोनों पैर टेबल पर रखकर मजे से बैठी गुनगुना रही थी। विल्सन ने कहा : "रेस्त्राँ में बैठने का यह तरीका नहीं है।"

"इस वक्त रेस्त्राँ में कोई तरीका नहीं लागू है।"

विल्सन खामोश बैठा रहा।

रोजी ने फिर कहा : "तुम इतने ज्यादा निरीह क्यों हो ?"

"हूं ?"—विल्सन चौंक पड़ा।

"यह महज छल है। तुम सिर्फ मक्कारी कर रहे हो। वरना क्या यह जमाना ऐसा है कि कोई ईमानदारी से किसी बात पर गंभीर हो सके ?"

"मैंने तो कभी नहीं कहा कि मैं मक्कारी से अलग हूँ।"

"तुम मक्कार नहीं हो, प्यारे विली, यही तो मुश्किल है। तुम मक्कार कतई नहीं हो, मक्कार जैसे दिखना चाहते हो !"

"वह एक ही बात है।"

बेयरा बाहर खांसा। रोजी ने आवाज देकर अन्दर बुला लिया। दो सफेद रूमाल, प्लेटें, पानी वगैरह सजाकर बेयरा चला गया।

"तुम्हारा प्यारा आ गया!" रोजी ने हँसकर कहा, "क्या हम दोनों खायें इसे?"

विल्सन नहीं जानता कि ऐसे वक्त पर क्या हो जाता है। उसे लगता है जैसे कहीं उसकी जिल्द पर खाज हो रही है पर कहाँ, यह उसे पता नहीं लग पाता और वह उलझता रहता है। रोजी रोटी खाती जाती है और अपना घुटना विल्सन के घुटने से रगड़ती जाती है। रोजी खाते खाते भी बहुत बोलती है। थोड़ा खा चुकने पर वह अपने तंग ब्लाउज के बटन खोल लेती है ताकि पेट अच्छी तरह भर सके। खाने के बाद वह चाहती है कि विल्सन उसे प्यार करे। पर विल्सन एक बारगी ही अपनी खारिश की खोज से परेशान अपने आप से ही भागने की कोशिश करता है जैसे घोंघा अपने खोल से निकल कर भागना चाह रहा हो। वह महसूस करता है, जैसे वह पिछड़ रहा है, पिछड़ रहा है। फिर लगता है जैसे वह किसी खोई हुई खाज की नहीं, किसी खोए अंग की तलाश कर रहा था और न मिलने पर डर कर भाग रहा है जैसे किसी की कीमती क्राकेरी तोड़कर नौकर भाग रहा हो।

रोजी गरम पानी की प्याली में उँगलियाँ धोती रहती है और विल्सन भाग खड़ा होता है। ताज्जुब में भरकर रोजी की सीमेण्ट वाली टनेल और गहरी हो जाती है। वह 'विल्सन' 'विल्सन' चिल्लाती हुई बाहर आ जाती है। मालूम होता है कि अब विल्सन किचेन के कुक को सुबह का मीनू समझाने में व्यस्त है।

विल्सन धर्म कथा में विश्वास नहीं करता। खाने के बाद उसको शर्म नहीं लगती बल्कि उसकी हया का पर्दा टूट जाता है। यही नहीं बल्कि ईव बुद्धि के फल खाकर पाप करने के बजाय केकड़े का गोश्त खाकर पाप करने पर आमादा होती है। इसीलिए विल्सन धर्म-कथाओं को बड़ी तुच्छ निगाह से देखता है।

लेकिन एल्स्टन प्रायः अपने को स्पिरिचुअलिस्ट मानता है। इसीलिए

उसका दावा यह भी है कि वह मैंडेलीन से स्पिरिचुअल प्यार करता है। मैंडेलीन को यह काफी अच्छा भी लगता है कि वह लेटी रहे और एल्स्टन उसे बाइबिल के अंश पढ़-पढ़ कर सुनाता रहे, टामस एक्वीनास के तर्क समझाता रहे। मैंडेलीन कभी-कभी सोचती है कि शायद ईश्वर के शाप का परिणाम है कि दुनिया में इतने कष्ट हैं। पर फिर वह खुद ही अपनी बात का मजाक उड़ाती है। वह जानती है कि जब वह सुखी हो जाती है, उसकी नजर में टेस्टामेण्ट गलत हो जाता है। मैंडेलीन कभी-कभी यह भी कहती है कि बाइबिल की बात सही भी है और गलत भी है; क्योंकि खुद उसकी जिन्दगी में मोजेज की पहली किताब सही भी है। गलत भी है। मैंडेलीन कहती है कि उसे साँप ने नहीं, खुद हजरत आदम ने वर्जित फल खिला दिया था।

वह महज चौदह साल की लड़की थी जो हफ्ते में तीन बार भाई की गाड़ी में बैठकर बीस मील दूर से आती थी बैले सीखने। उसका भाई कागज की मिल में बड़ा ओवरसियर था। नदी के किनारे मिल के पीछे के हिस्से में एक लम्बे चौड़े लान पर उन्हें कम्पनी की तरफ से एक बंगला मिला हुआ था। मैंडेलीन शाम को प्रायः लान में पड़ी बेंच पर लेट जाती और घंटों पानी की सतह पर तैरते आसमानी रंगों की परछाइयां देखती रहती। रात के वक्त बाएं छोर पर दो बड़े बड़े क्रेनों की लम्बी लम्बी भुजाएं उसे बड़ी आकर्षक लगती थीं और मैंडेलीन प्रायः ऐसे कोण चुनकर बैठती थी जहां से क्रेन की भुजा से लटकती जंजीर के सिरे पर पूरा चांद गुथा हुआ दिखाई दे। मैंडेलीन को लगता, जैसे कोई डूबे हुए चांद को क्रेन से निकाल रहा है।

उसके बंगले की खिड़कियों के रंगीन शीशों से रोशनी छनने लगी और क्राइसेन्थमम के फूल सांवले पड़ गए तो आया ने उसे पुकारा। वह अपनी धुन में डूबी हुई हंस की तरह अंगूठे के बल हौले-हौले दौड़ती हुई बंगले की सीढ़ियों पर सहसा ठिठक गयी। सीढ़ियों के सिरे पर कोई उसे रास्ता देने के लिए एक बगल होकर खड़ा था। मैंडेलीन को देखकर वह मुस्कराया। मैंडेलीन भी मुस्कुरायी और तेजी से अन्दर चली गयी।

मैंडेलीन अब कभी उसका नाम नहीं लेती और शायद उस शाम उसके बंगले की सीढ़ियों पर मिला, वही अकेला नवयुवक है जिसका नाम मैंडेलीन कभी नहीं लेती। कोई उसका नाम नहीं जानता। इसी-लिए उसे फिलहाल टॉम भी कह लिया जा सकता है।

मैंडेलीन उस व्यक्ति के निकट कैसे आयी और फिर कैसे उसने उसका नाम जुबान पर न लाने का फैसला किया यह कभी स्पष्ट नहीं होता। खुद मैंडेलीन के सामने भी स्पष्ट नहीं है क्योंकि मैंडेलीन टाम को महज एक ऐसा ख्वाब मानती है जो बदहज्मी की हालत में अधूरी नींद के बीच देखा गया था।

टॉम—या कोई भी नाम लिया जा सकता है उसका। वह मिल के चोटी के अधिकारियों का कोई दूर का रिश्तेदार था। इसीलिए वह इस मिल में महज एक लम्बी सी तनख्वाह देकर भेज दिया गया था। कोई विशेष काम उसे न आता था। वह खुद यह भी न जानता था कि मिल में वह किन के लिए अफसर बनकर आया है और किन्हें अफसर मानने के लिए आया है। इसीलिए मिल में आने के चौथे दिन ही उसने जब एक बुजुर्ग फोरमैन को, जो मजदूरों को बड़ी अदा से डाट रहा था, बाकायदा सलाम किया और सर कहकर सम्बोधित किया तो मैंडेलीन का ओवर-सियर भाई टॉम को अपने बंगले पर शाम को लिवा लाया। टॉम से उसने चाय की टेबल पर बैठकर पूछा कि वह किस किस्म का काम सीख कर आया है तो टाम अपनी स्टील जैसी आंखों को झुकाकर खामोश हो गया। मालूम हुआ कि वह माउथ आर्गन बजाता है और महज लन्दन यूनीवर्सिटी के आर्ट्‌स का ग्रेजुएट है।

मैंडेलीन के भाई ने फिर पूछा कि वह यहां किस पद पर काम करने के लिए आया है? इस पर भी टॉम ने कहा कि वह कुछ भी ठीक-ठीक नहीं जानता।

"तब किस सिर-फिरे ने तुम्हें अकारण यों परेशान किया और हम सबके लिए भी एक समस्या खड़ी कर दी?"

"वे बहुत बड़े बड़े लोग हैं। बोले, तुम्हें अब काम पर लग जाना चाहिए, जिम्मेदार बनना चाहिए और फिर मुझे यहां भिजवा दिया।

मुझे बचपन से आश्रय दिया है इसलिए मेरी हिम्मत ही न पड़ी कि कुछ पूछूं !"—टाम ने अपने सुर्ख होंठों में भुनभुनाकर कहा।

"क्या सिर्फ इसीलिए कि तुम हर फोरमैन और जमादार को सलाम करते फिरो ?"

"लेकिन मुझे पता क्या कि मेरे कौन अफसर हैं कौन नहीं ।"

"यही तो समस्या है। जब तक तुम्हारा काम और पद निर्धारित न हो तब तक तो कुछ काम नहीं बन सकता। फिर यही नहीं, अगर तुम टेकनिकल काम नहीं जानते तो हर फोरमैन और कारीगर तुम्हारे पीछे हंसेगा, तुम्हारी बातों का अनुशासन मानना तो बहुत दूर की बात। पर आखिर तुमने भी तो कुछ न कुछ सोचा ही होगा।"

"मैं क्या सोचता ? मैंने समझा कि थोड़े दिन रहते-रहते खुद-ब-खुद थोड़ा बहुत काम समझ में आ जाएगा।"

"भई, यही तो उलझन की बात है। खुद-ब-खुद समझ में आ जाएगा, लेकिन आखिर कौन-सा काम ? फैक्ट्री में एक सौ तरह के काम हैं। रसायन है, मशीनें हैं, लकड़ी की छटाई है, पल्ला है, कागज की फिनीशिंग है, व्यवस्था है, इतनी तमाम चीजों के अलग-अलग विभाग हैं। हर विभाग की अपनी-अपनी जिम्मेदारियां हैं। तुम्हारे जैसा नया आदमी विभाग में लेने से पहले हर विभाग सोचेगा कि अगर कहीं तुम्हारी वजह से कोई भूल हो गई तो विभाग बदनाम होगा। बिना किसी विभाग में पैठे कैसे कोई काम समझ मे आएगा ? फिर तुम्हारी योग्यता भी तो, माफ करना टेकनिकल क्षेत्र की तरफ कुछ स्पष्ट नहीं है। तब किस क्षेत्र का चुनाव करोगे ?"

इतना लम्बा भाषण सुनकर टाम के होश उड़ गए। वह समझता था कि कागज के कारखाने का काम तो है ही, उसे शायद कोई सुपरवीजन करना पड़े जो वह बखूबी कर सकेगा। शायद एक तरफ कोई कच्चा माल ढोकर मशीनों में डाला जाता होगा, दूसरी तरफ एक आदमी बना बनाया कागज इकट्ठा करता जाता होगा। वैसे इंग्लैंड में वह उम्दा से उम्दा कागज लिखने के लिए इस्तेमाल करता था। कारखाने पहुंचते-पहुंचते वह अपने द्वारा इस्तेमाल किए सैकड़ों किस्म के

खूबसूरत कागजों को अपने मन में याद कर चुका था और कल्पना कर रहा था कि वह जाते ही काम करने वालों का निरीक्षण करेगा और दूसरे दिन से ही वह लोगों को इस किस्म की हिदायतें देगा कि मशीनों से खूब पतला, मजबूत, चिकना और सफेद कागज निकले, जैसे बत्तख का पंख। वह एकाध अंग्रेजी कागज का नमूना कारखाने वालों के सामने पेश करके उन्हें चकित कर देगा। ऐसे कागज भला हिन्दुस्तान में कहां देखने को मिलते हैं। फिर वह उससे भी बेहतर कागज बनाकर मालिकान को चकित कर देगा।

पर कारखाने के गोदाम में जाकर तो वह दंग रह गया। सारा का सारा कागज बिल्कुल एक ही किस्म का खुरदरा, मटमैला, फुसफुसा, देखते-देखते फट जाने वाला—देखने पर लगे जैसे चूहे की खाल हो। उसने हैरत से पूछा : "बस यही कागज? अच्छे किस्म का कागज दिखाइए न।"

दिखानेवाला ताज्जुब में आ गया।

टाम ने थोड़ा झल्लाकर कहा : "भई, अच्छी किस्म का जो सबसे उम्दा कागज मिल में बनता है, वह दिखाओ।"

दिखाने वाले ने मन ही मन सोचा, या तो यह इन्सान गावदी है या बहुत घाघ है। उसने बहुत नम्रता से कहा "आज-कल हमारे यहां ऐसा ही कागज बन रहा है।"

गनीमत हुई कि टॉम ने आगे यह भी उससे नहीं कह दिया कि कल से कारखाने में आफसेट प्रिंटिङ् बनाना होगा, वरना दिखाने वाला उसे पागल भी समझता।

अब उसने यहां जो इतनी विस्तार की बातें सुनीं तो उसका मन डगमगाने लगा। कागज की अच्छी किस्में बनाने वाली बात अभी भी उसके मन में घूम रही थी। गोदाम आदि के अनुभव बताने के बाद टाम ने अपनी यह बात भी मैंडेलीन के भाई से बतायी कि वह मिल के कागज के स्तर को योरोपीय कागजों से बेहतर करना चाहता है। टॉम की बात पर मैंडेलीन के भाई को बेहद हंसी आयी। उसने कहा : "यह भी समझने में तुम्हें अभी समय लगेगा कि हमें सिर्फ यही कागज बनाना चाहिए, बेहतर किस्म का

कागज नहीं। बल्कि इसी सीमा में अगर इससे भी घटिया किस्म का कोई कागज बन सके तो और अच्छा; क्योंकि इस मिल का कागज पैकिङ वगैरह के काम लाया जाता है।"

"लेकिन हिन्दुस्तान में कागज, छपायी और लिखाई वगैरह के काम भी तो आता है। यहां के चित्रकार भी तो कागज पर तस्वीरें बनाते हैं और कागज इंग्लैंड का बना खरीदना पड़ता है।"—टॉम ने चिन्ता से कहा।

"वह तो सही है!"—मैडेलीन के भाई ने कहा: "लेकिन उन छपी हुई किताबों के बण्डल और रंगी हुई तस्वीरों के पैकेट लपेटने के लिए भी तो कागज की जरूरत पड़ती है और फिलहाल चित्रकारी के काबिल कागज के बजाय चित्रों को लपेटकर बाजार तक सुरक्षित पहुंचा सकने वाला कागज हिन्दुस्तान के लिए ज्यादा जरुरी है। दरअस्ल हैसियत को देखते सही भी वही साबित होता है।"

टॉम खामोश रह गया। मैडेलीन के भाई ने उससे कहा कि अगर टॉम उन्हीं के फिनिशिङ्-डिपार्टमेण्ट का काम सीख डाले तो बुरा नहीं रहेगा। तब से टॉम प्रायः रोज शाम को मैडेलीन के यहां आने लगा और उसने पाया कि फिनिशिङ् का काम वह काफी जल्दी सीख रहा है। मैडेलीन का भाई भी टॉम के लिए काफी मेहनत करता था। काम की एक-एक बारीकी टॉम को यों समझाता था, जैसे कक्षा में मास्टर सिखाए। फिर जब मैडेलीन का भाई दो-तीन हफ्ते के अन्तर से हेडक्वार्टर्स चला जाता था तो टॉम मैडेलीन को क्रेन की चांद निकालने वाली बांह के नीचे बैठ कर माउथ आर्गन सुनाता था और मैडेलीन उसे इटैलियन टेरेण्टेला नृत्य की खूबियां समझाती और बड़ी बारीकी से बताती कि किन-किन मुद्राओं से जहरीली मकड़ी के डसे हुए व्यक्ति का दर्द व्यक्त किया जाता है।

फिर दोनों चांदनी की चर्चा करते। मैडेलीन लहरों के जज्बात की बात करती और टॉम नदी के उस पार चमकती रोशनी का जिक्र करता। मैडेलीन चिड़िया बन कर क्रेन की बांह की जंजीर से लटकते चांद के चारों तरफ चक्कर काटना चाहती और टॉम इंग्लैंड के सपनों में खो जाता। टॉम ग्लासगो की रातों का जिक्र करके उदास हो जाता और मैडेलीन

खामोश हो जाती। टॉम फलों के बाग में काम करने वालों के लिए दिन भर सींक पर लटका कर भूने जाने वाले हिरन के गोश्त की याद करके दुबारा उस गोश्त की गंध के लिए इंग्लैंड लौटने की हविस जाहिर करता और मैंडेलीन चौंक कर पूछ बैठती : "क्या तुम्हें यह जगह पसन्द नहीं है ?"

"यह जगह किसी भी इन्सान के रहने लायक नहीं है !"

"क्यों ? '—मैंडेलीन टॉम की ऐसी बात से बहुत दुःखी हो जाती थी। वह उसे अच्छा-सा बंगला, हल्की चांदनी, ठण्डी हवा, नदी का पानी दिखाती।

पर टॉम उससे कहता कि : "इस बंगले में दस गुना ज्यादा सजा-धजा तो ग्लासगो की लैण्डलेडी का वह कमरा ही था, जिसमें मैंने दो साल गुजारे। फिर वहां के क्लब, ओह ! वह जिंदगी यहां कहां है। वहां तो हर मजदूर दिन भर काम करता है और रात भर क्लब में ढपली लेकर जिप्सी नाच नाचता है। सारी रात, मैं कहता हूं बिना रुके हुए। यहां के मजदूरों को देखो !"

"क्यों, तुम यहां नये-नये आये हो, वरना यहां के मजदूर भी गाते-बजाते हैं। मुझे नहीं पता, दो-तीन दिन से क्या बात है वरना उधर नदी के किनारे एक साधू बैठता है। रोज शाम को उसे ही तुम देखते, कितना अच्छा गाता है !"

"क्यों, ? क्या हुआ तीन दिन से उसे ? क्या वह कोई नौजवान है ?"

मैंडेलीन इस व्यंग से बहुत नाराज हो जाती। वह आगे बात भी नहीं करती और बंगले में लौट जाती। पर दूसरे दिन फिर उसी बेंच पर आ बैठती, जिस पर बैठकर वह रोज टॉम का इन्तजार करती थी।

कभी-कभी मैंडेलीन सोचती कि टॉम उसे चिढ़ाने के लिए बात करता है, फिर वह सोचती कि शायद सचमुच इंग्लैण्ड बहुत खूबसूरत जगह हो। वह सोचती, एक बार वह अपने भाई से कहेगी कि वह उसे इंग्लैंड की सैर करा दे। इंग्लैण्ड जाकर वह एक-एक चीज देखेगी, फलों के खेतों में भुनते हुए हिरन भी, लन्दन यूनिवर्सिटी के कुंज भी, ग्लासगो की लैण्डलेडी का वह कमरा भी और वे क्लब भी, जिसमें रात-रात भर लोग जिप्सी डान्स

किया करते हैं।

भाई को जाने की फुरसत शायद अभी न मिले। शायद टॉम ही जल्दी जाय; पर टॉम —क्या टॉम के साथ वह इंग्लैण्ड जा सकेगी ? फिर टॉम ही उसे ग्लासगो की लैण्डलेडी के पास भी ले जायगा ? क्या पूछेगी लैण्ड-लेडी मैडेलीन को टॉम के साथ देखकर ? मैडेलीन कहेगी कि वह नृत्य की विशेषज्ञा है। इंग्लैण्ड के नृत्यों का अध्ययन करने आयी है। नृत्यों का अध्ययन—यह तो बड़ी अच्छी बात होगी ! मैडेलीन जरूर अपने भाई से कहेगी कि इंग्लैंड के लोक-नृत्यों का अध्ययन करने के लिए उसे इंग्लैण्ड ले चले।

टॉम ग्लासगो की रातों की याद के बावजूद काम सीखता रहा। मैडेलीन अपने नृत्य में उन्नति करती गयी; लेकिन योरप जाकर नृत्यों का अध्ययन करने की बात उसकी कल्पना में ही दब गयी। उसकी आकांक्षाओं को कुछ बिल्कुल दूसरी कल्पनाओं ने दबा लिया। वह टॉम के जीवन के साथ बड़ी गहरायी से डूब गयी। उसकी बर्थ डे पार्टियों में टॉम की हाजिरी मुख्य होने लगी और गप्पों में टॉम के चुटकले स्थान लेने लगे।

टॉम बड़ा हंसोड़ निकला। मैडेलीन उसके जीवन की संवेदनाओं को अपने में संजोकर पहले से कहीं ज्यादा अपने को समृद्ध देखने लगी। मैडेलीन···

लेकिन मैडेलीन जब घटनाओं को याद करती है तो चाहती है कि वे चाक से लिखी हुई इबारत की तरह बीच-बीच से मिट कर गड़बड़ हो जायं। मुमकिन है कि मैडेलीन को आज की इस स्थिति का आभास पहले ही हो गया हो। वैसे यह कोई बड़े ताज्जुब की बात नहीं। मैडेलीन अपनी उम्र की लड़कियों में बहुत चालाक समझी जाती थी, शायद इसलिए भी कि वह भाई के अलावा बिल्कुल अकेली थी। उसने अपनी मां को भी नहीं देखा, अपने पिता को भी नहीं देखा था। मैडेलीन यह जरूर समझती थी कि बहुत सी मुहब्बत की कहानियां प्रायः एक ही तरह से खत्म होती हैं।

न जाने कैसे मैडेलीन की कल्पना कुछ ऐसी भी थी कि वह टॉम के साथ अपने रिश्ते को मुहब्बत में बदलने नहीं देगी। लेकिन कभी-कभी उसे

मिल गया। मैंडेली अब सत्रह साल पूरे कर चुकी थी। मैंडेलीन का हर तर्क उसके भाई ने बड़ी आसानी से काट दिया और मैंडेलीन भी अपने भाई के साथ बहुत लम्बी-चौड़ी विदाई की भूमिका के बाद स्याम चली गयी। एक साल स्याम में बराबर वह टाम के ख्यालों में व्यस्त रही और हर रोज टाम को एक खत लिखती रही। फिर दूसरे साल न जाने कैसे सहसा वह बुजुर्ग हो गयी। खत उसके बहुत गम्भीर होने लगे। उसकी अपनी बातचीत, रहन-सहन, खत-किताबत, यहां तक कि उसकी आंखें भी अचानक यों गम्भीर हो गयीं जैसे वह स्कूल मास्टरनी हो गयी हो। तीसरे साल उसके भाई का झगड़ा हो गया। उसने फौरन इस्तीफा दे दिया और अपने पुराने मालिकान को तार दिया। वे अपने मिल में इस वक्त जर्मनी से आयी बिल्कुल नयी मशीनों का प्रयोग करने की योजना बना रहे थे। मैंडेलीन के भाई का तार पाकर हवाई अड्डे पर उसका स्वागत करने भी जा पहुंचे।

मैंडेलीन टॉम से मिली। पर मैंडेलीन ने इस बार शायद किसी दूसरे टॉम से भेंट की। मैंडेलीन अकेले में लौटकर बहुत रोई कि टाम ने किसी खत में यह जिक्र नहीं किया कि अपने आश्रयदाताओं की गृहस्वामिनी के मजबूर करने पर उसने एक लड़की से शादी कर ली। टॉम ने उससे कहा कि अगर वह खत में मैंडेलीन को शादी की बात लिखता तो मैंडेलीन उसे गलत समझती।

"मैं गलत नहीं समझती। क्योंकि अभी जो समझी हूं, वही तब सम-समझती।" —मैंडेलीन ने कहा।

"नहीं लीनी! अभी तुम कुछ नहीं समझी हो। सिर्फ यह जान लेना कुछ समझना नहीं हुआ कि मैंने शादी कर ली।"

"तुमने शादी कर ली सिर्फ इतनी बात ही वह आखिरी बात है जिसको सुनने के बाद किसी लड़की को कुछ समझना बाकी नहीं रहता।"

"मैंडेलीन तुम बातें सचमुच बहुत गहरे स्तर की करती हो, इसमें शक नहीं। पर लीनी, अगर तुम सिर्फ एक बार, सिर्फ एक बार मेरी मजबूरियों की स्थिति में खड़ी होकर देखो, तुम्हें सारी बात तुरन्त स्पष्ट हो जायगी।"

निहायत रूमानी स्केट्स पर चढ़कर खयालों के चिकने फर्श पर नाचने लगी।

पर अचानक एक बार मैंडेलीन को लगा जैसे वह किसी गलत रास्ते पर दौड़ रही है। उसने टॉम को थाम कर पूछा : "क्यों, तुम जिस विद्रोह की बात करते थे उसका क्या हुआ ? आखिर तुम किस किस्म का विद्रोह चाहते थे और मुझसे उसमें क्या मदद होनी थी ?"

"मैं दरअस्ल बन्धनों के खिलाफ लड़ना चाहता हूं।"

"लेकिन तुम ठीक ऐसे दिखते हो, जैसे फौजी वर्दी पहनकर कोई पादरी खड़ा हो जाय। तुम्हारी किसी हरकत से ऐसा नहीं लगता कि तुम कोई क्रान्तिकारी काम कर सकते हो।"

टॉम ने बहुत प्यार से मैंडेलीन को समझा दिया था कि वह उपयुक्त समय का इन्तजार कर रहा था। समय आने पर वह किसी भी स्थिति के लिए कमजोर नहीं।

फिर एक दिन मैंडेलीन ने घुमा कर पूछा : "पर तुम करना क्या चाहते हो ?"

टॉम एक बार चौंक-सा गया, फिर उसने मुस्कुरा कर कहा : "मैं तुम्हें प्यार करना चाहता हूं।"

"लेकिन मैं इस निरर्थक प्यार से ऊब गयी, थक गयी।"

"तुम कितनी भोली लड़की हो ! तुम्हें नहीं मालूम कि प्यार खुद क्रान्ति होता है।"

पर मैंडेलीन इतनी रूमानी जिन्दगी में यकीन नहीं करती थी अब। उसने छूटते ही कहा : "लेकिन तुमने मेरे स्याम जाने से पहले भी कहा था कि तुम मुझे प्यार करते हो। वह प्यार क्या क्रान्ति नहीं था ? अगर था तो फिर किस क्रान्ति का इन्तजार है तुम्हें ?"

और इसके बाद मैंडेलीन ने टॉम से यह स्वीकार करा लिया कि वह दरअस्ल अपनी वर्तमान बीवी को तलाक देकर मैंडेलीन से शादी करेगा और सामाजिक परम्परा के मुंह पर ही तमाचा मार देगा। लेकिन मैंडेलीन की समस्या फिर अटक गयी। मैंडेलीन को एक हठ भी होने लगा कि वह शादी कब करेगा। महीनों बीतते रहे और मैंडेलीन के लिए टॉम नये-नये

बहाने गढ़ता रहा और अन्ततः एक बार मैंडेलीन ने जबरदस्ती टॉम को कोर्ट में ले चलने की जिद पकड़ ली।

मैंडेलीन टॉम के व्यक्तित्व को भी शायद इसीलिए याद नहीं करती थी कि वह टॉम को व्यक्ति नहीं; पिण्ड मानती है। टॉम के रीढ़ नहीं है जैसे केंचुआ हो। ऐसे जीने का आदी था टॉम।

मैंडेलीन के किसी विश्वास को झेलने के लिए वह आगे नहीं आया। मैंडेलीन ने फिर खुद ही टॉम की बीवी से सारी स्थिति स्पष्ट करने की सोची। उसका खयाल था कि अगर टॉम की बीवी इस घटना को लेकर टॉम को तंग करेगी तो टॉम निश्चित ही उत्तेजित होगा और उत्तेजित होकर शायद उसके बाजुओं में कुछ जोर आ जाये। लेकिन मैंडेलीन उस स्थिति के आने से पहले ही यह सुनकर दंग रह गई कि मात्र सवा साल में ही टॉम एक बच्चे का बाप हो चुका है और दूसरे की राह देख रहा है।

अब मैंडेलीन तिक्त होने लगी। उसे लगा, यह महज धोखा है और इतने पर भी मैंडेलीन धोखा खा गयी। जैसे कोई किसी ऊंची दीवार पर खड़ा होकर नीचे बहुत गहरे खड्ड में झांककर सोचे कि उसे संभल कर खड़ा होना चाहिए वरना गिर जायगा और इतना सोचते ही सोचते वह लड़खड़ा कर खड्ड में जा गिरे। मैंडेलीन की तिक्तता का एक साल और बीता और टॉम तीसरे बच्चे का बाप होने की उम्मीद के बाद एक दिन मैंडेलीन से बोला कि वह अपने को इतना मजबूत पा रहा है कि किन्हीं बन्धनों का विरोध खुलकर कर सके। मैंडेलीन उसकी बात सुनकर जोर से हंसी। उसके बाद टॉम ने उसके सामने बहुत लम्बा-चौड़ा इकबाल किया और यह विश्वास दिलाया कि अगर मैंडेलीन अभी तुरन्त शादी के लिए तैयार हो तो वह गिरजाघर चल सकता है। मैंडेलीन ने शंका की कि बिना पहली बीवी से डाइवोर्स लिए यह कैसे मुमकिन होगा? इस पर टॉम ने अपना सीना फुलाकर उससे कहा कि व्यवस्था से संघर्ष करने के साहस की परीक्षा वह यहीं, इसी बात पर तो देगा।

मैंडेलीन ने अपनी सारी जिन्दगी का उत्साह समेट कर एक बार फिर टॉम को गहराई से चूमा और अपनी किशोर-सुलभ उत्तेजना से उफनते

हुए अपने भाई को टॉम के वेयरा के हाथ एक खत भिजवाया जिसमें उसने नये अभियान का जिक्र करते हुए कहा था कि जिन्दगी के इस प्रयोग को वह अपने लिए एक ललकार के रूप में स्वीकार कर रही है और इस परीक्षा में बिलकुल अकेली ही प्रवेश करना चाहती है।

परीक्षा, प्रयोग, जिन्दगी के मूल्य आदि की कुछ ऐसी बातों का सैद्धान्तिक तजकिरा भी था जिसे पढ़कर उसका भाई अपने खेद के बावजूद मुस्करा पड़ा। फिर उसने एक छोटी-सी स्लिप लिखी ताकि वह वेयरा के हाथ भिजवा सके, पर उसे फाड़ दिया और बेयरा से कहलाया कि मैंडेलीन तुरन्त एक बार उससे मिल ले। लेकिन मैंडेलीन ने अपने घटनाक्रम को जैसे एक बारगी ही तेजी से घुमाकर आकाश में उछाल दिया था। वेयरा उसे खोज नहीं पाया। वह शादी कर चुकने के बाद नया कमरा तलाश कर रही थी।

उसने मुझे क्या दिया ?

मैंडेलीन हर पहलू से सोचती रही और उसने पाया कि शायद कुछ सोचते भर रहने के अलावा वह बिल्कुल निरुपाय हो चुकी है। टॉम मिल में अपनी व्यस्तता के बहाने अपना चेहरा छुपाने लगा। मैंडेलीन को पता लगा कि पहली पत्नी ने उसे वश से बाहर न होने देने की कसम खा ली है। कुछ अरसे तक मैंडेलीन हर शनिवार को टॉम का इन्तजार करती रही। टाम शनिवार को आता और सोमवार की सुबह चला जाता और उसके बाद फिर—

उसके बाद फिर मैंडेलीन की कहानी के कुछ अस्त-व्यस्त संकेत भर ही मिलते हैं, जिनसे शायद उसकी कहानी की कड़ियां भी पूरी नहीं होतीं। यहां से घटनाएं मैंडेलीन के अन्तर्मन में तिरोहित होकर बहती हैं।

एक वाक्य उभरता है कि मैंडेलीन गर्भवती हो गयी थी। दूसरा वाक्य है कि मैंडेलीन ने ज़हर खा लिया था। तीसरी बात यह उभरती है कि टॉम की पहली बीवी ने ही कोई दवा मैंडेलीन को धोखे से पिला दी। मैंडेलीन का बच्चा गिर गया। उसके बाद एक दिन बहुत ही नाटकीय तरीके से मैंडेलीन को एक विचित्र बात मालूम हुई कि टॉम और उसकी

पहली बीवी में खूब कलह हुई और उसने टॉम के अभिभावकों के पास जाकर शिकायत की। अभिभावकों ने टॉम को मजबूर किया कि वह मैंडे-लीन से भी सन्तान न पैदा कर डाले इस सावधानी के लिए आपरेशन करा डाले। टाम हमेशा की तरह फिर मजबूर हो गया।

यह सही-सही मैंडेलीन नहीं कह सकती कि वह टॉम से सन्तान चाहती थी; लेकिन उसको लगा कि इससे बड़ा अपमान टॉम उसका और कुछ नहीं कर सकता।

इसलिए मेडेलीन उस ईडेन में कभी न लौटने की प्रतीज्ञा कर लेती है जिसमें आदम की तनहायी के लिए ईव पेश की गयी थी। क्योंकि ईव आदम की तनहायी दूर करने के बावजूद खुद तनहायी की जहरीली मकड़ी का शिकार हो गयी। मैंडेलीन मकड़ी के जहर से पीड़ित नृत्य—इटैलियन टेरैण्टेला की अनुभूति में अपने को डुबाकर कोशिश करने लगी कि वह अपने को टॉम की पहचान से दूर खींच ले जाय। उसने अपना मकान भी बदल लिया और दो बड़ी-बड़ी जगहों पर चुपचाप नृत्य सिखाने के ट्यूशन करने लगी।

लेकिन उसकी तनहायी ?—मैंडेलीन को याद आता है कि ईश्वर ने ईव को ईडेन से पृथ्वी पर भेजते हुए कहा था कि वर्जित फल खाने के दंड स्वरूप वह ईव के दुःखों को कई गुना बढ़ा देगा। यह बात सही है ईश्वर की। पर एक बात बिल्कुल गलत है, सरासर गलत है। उसने कहा था कि वह ईव के गर्भ को कई गुना बढ़ा देगा और दुःख के बीच ईव हमेशा खूब बच्चे पैदा करेगी। लेकिन ऐसा तो नहीं होता। दुःख के समय आदम आपरेशन करा लेता है कि मैंडेलीन को बच्चे पैदा न हो सकें।

न जाने क्यों कभी-कभी मैंडेलीन को बाइबिल की वह बात गलत होते देखकर बहुत कष्ट होता था। कभी-कभी मैंडेलीन की इच्छा होती है कि वह टॉम के द्वारा मिटाए जाते इस दैवी विधान की रक्षा करे। टॉम की कुकृति को वह खुद अपने ऊपर झेल ले और टॉम के लिए खुद प्रायश्चित करे, ताकि विधि का निर्देश दुबारा गलत करने का दुहरा पाप किसी को देखना न पड़े।

लेकिन मैंडेलिन का यह इच्छा धीरे-धीरे धूप में पड़े हुए रंगीन कागज

की तरह बेरंग हो जाती है और मैंडेलीन देखती है कि उसकी इच्छाओं की सतह, जिस पर से पुराने रंग उड़ गये हैं बिल्कुल अजीब रंग की होकर चमक रही है। कोई स्पष्ट रंग न होकर उसकी इच्छाएं शायद पहले से ज्यादा सहज भी हो गयी थीं और इसीलिए मैंडेलीन ने एक बार जब अपना नृत्य-स्कूल खोलने की कल्पना की तो उसने पाया कि उसकी अपनी तनहायी भी शायद कोई रंगीन कागज भर ही थी, जिसका रंग उड़ गया और वह भी पहले जैसी नहीं बची।

स्कूल के उद्घाटन के दिन उसने स्टेज पर मैंडेलीन और पारफीरो का नाट्यरूपक पेश किया और जो पारफीरो था उसे भी उसने अपने स्कूल में ही शिक्षण-कार्य करने के लिए रख लिया। लेकिन वह पारफीरो किसी विचित्र रोग का शिकार होकर कहीं भाग गया। मैंडेलीन को बाद में बहुत अरसे तक हंसी आती रही कि पारफीरो मैंडेलीन को नहीं; रोग को लेकर भागता है। अगले साल दर्शकों में फिर उसी नृत्य-रूपक की मांग हुई और मैंडेलीन को नये पारफीरो की जरूरत पड़ी।

यह पारफीरो महज किराए का था। वाई० एम० सी० ए० के स्टेज पर एमेच्योर अभिनेताओं में से था और उसकी बहुत सी मैंडेलीनें थीं। इसके बाद एक अरसे तक वही पारफीरो बनता रहा; लेकिन मैंडेलीन बहुत सी मैंडेलीनो से अपने को विशेष साबित न कर सकी। इसीलिए पारफीरो जब चौथी बार मैंडेलीन के स्कूल में वेरायटी प्रोग्राम में आया तो उसके साथ उसकी नौजवान खूबसूरत बीवी थी।

फिर मैंडेलीन किसी भीड़ में खो गयी। यहां से आगे मैंडेलीन को कुछ याद नहीं। बहुत से पारफीरो, बहुत-सी मैंडेलीनें और मैंडेलीन ने पाया कि दरअस्ल वे बहुत-से पारफीरो नहीं थे; बल्कि किसी एक पारफीरो के ही अलग-अलग अंश थे, जैसे कोई पारफीरो की आंख था, कोई उसकी भुजा था, कोई पारफीरो का सिर्फ सीना भर था और कोई उसकी आवाज; और मैंडेलीन ने देखा कि उसके समय में सेण्ट एग्नीस की रात किसी सम्पूर्ण पारफीरो की छवि पर मोहित होने के बजाय उसके इन्हीं आंशिक सत्यों पर मोहित होना होता है क्योंकि वह प्राय: क्लबों या रेस्त्राओं में बैठकर कहती थी : "ओह डियर, तुम्हारी आंखें मुझे बरबाद

कर देंगी"—अथवा—"ओह डार्लिङ, तुम्हारे इतने चौड़े सीने पर सिर रख कर मैं सो जाना चाहती हूं"—अथवा···

मैडेलीन इसीलिए अपनी तनहायी को देखकर उदास होने लगी—लेकिन शायद अपनी उदासी भी उसने तह करके रख दी; क्योंकि उसके चारों तरफ पारफीरो नहीं पारफीरो के अलग-अलग विछिन्न अंग ही मुस्कराते थे, जैसे ईडेन के दरख्तों को किसी ने बुरी तरह काट डाला हो और कहीं टहनी हिलती दीखे, कहीं सिर्फ फूल; और कहीं तना लुढ़क रहा हो और कहीं जड़ें ऐंठ रही हों—मैडेलीन समय के इस विकृत नाटक के बीच बेहद तनहा महसूस करती थी और इसीलिए जब एल्स्टन पूछता था: "आज क्या फिर तुम वहीं गयी थीं ?" तो वह चुभने वाला जवाब देती थी: "मैं रोज वहां जाती रहूंगी ताकि तुम रोज मुझसे यही एक सवाल पूछते रहो। रोज···"

6

विल्सन को मैडेलीन के बारे में सबसे बड़ा कुतूहल इसी बात को लेकर पैदा हुआ कि आखिर एल्स्टन मैडेलीन को कहां जाने से मना करता है। किस जगह मैडेलीन एल्स्टन की धमकियों का तिरस्कार करके भी जाना नहीं छोड़ती ? इसी जिज्ञासा से भरकर वह छुपे-जुपे मैडेलीन पर नजर रखता हुआ भटकने की सोचता है। फिर एक बार भटका भी; पर नतीजा कुछ हाथ नहीं आया। मैडेलीन या तो अपने स्कूल चली जाती है या बार में बैठकर खूब पीती है और फिर घर लौट आती है। विल्सन मैडेलीन का रहस्यात्मक पीछा करने के बाद जब बिना किसी नतीजे पर पहुंचे महज एक पेग शराब पीकर ढेर से नशे का अभिनय करता हुआ घर लौटता है, तो उसकी उलझन ज्यादा जटिल हो जाती है।

दो-तीन दिन से विल्सन को एक प्लास्टिक का खिलौना बहुत परेशान कर रहा है। न जाने कौन बच्चा उसे उसके बरामदे में छोड़ गया था। खिलौना खूब गंदा और बदशक्ल-सा हो गया था। अनजाने ही विल्सन की ठोकर से वह उसी के कमरे में आ घुसा। विल्सन को उस खिलौने से खास तौर पर नफरत होने लगी। लेकिन उसने महज उसे ठोकर मारकर ही छोड़ दिया। फिर वह मैडेलीन के रहस्यों के खयाल में डूब गया। लेटे-लेटे कभी-कभी वह बेतरह झुंझला उठता था। जब अचानक मैडेलीन के खयाल उसी बदशक्ल गुड़िया में बदल जाता है।

विल्सन के लिए यह असह्य है। इसीलिए वह एक बार गुड़िया को उठाकर दबा देता है, मींज डालता है। पर गुड़िया दुबारा धीरे-धीरे सिमटती फैलती अपना पुराना रूप ले लेती है। चिढ़कर विल्सन ब्लेड से

गुड़िया की गोली-नुमा छातियां काट कर फेंक देता है। छातियों की जगह दो सुराख बच रहते हैं। अब दबाने पर गुड़िया के दोनों सूराखों से फक् से हवा निकल जाती है। विलसन गुड़िया की नाक, आंख और फिर कान भी कुतर डालता है और उसके बाद चारों तरफ ब्लेड फिराकर उसे दो पल्लों में बांट देता है। काफी मजा आया। विलसन क्रिकेट के खिलाड़ी की तरह थकावट और जीत का सन्तोष लिए चारपाई पर लेट जाता है। उसे अच्छी नींद आ जाती है।

एल्स्टन बाइबिल पढ़ते-पढ़ते समझता है कि मैंडेलीन सो गयी। वह मैंडेलीन की उंगलियों पर हल्का सा चुम्बन लेकर धीरे-धीरे कमरे से लौट जाता है। पर मैंडेलीन सोती नहीं। एल्स्टन को कनखियों से जाते हुए देखती है। उसे लगता है कि नशा उसे उठाकर सिर के बल खड़ा करने की कोशिश कर रहा है। वह मुस्कराती है और नशे को छूट दे देती है कि वह उसे उल्टा खड़ा कर दे। सहसा एक खयाल कौंधता है—उलट कर अगर मैंडेलीन सिर के बल खड़ी हो जाय तो कहीं उसके पेट के पारफीरो को तकलीफ न पहुंचे! कहीं वह उलट जाय! इस खयाल के आते ही वह नशे का विरोध करने लगती है। नशे को झटकती है और कोशिश करती है कि नशा उसके साथ यह हरकत न करे। पर उसे लगता है कि कभी-कभी वह अपने संघर्ष में थक जाती है और नशा करीब-करीब उसे उठा ही लेता है। मैंडेलीन बहुत डर जाती है। वह सोचती है कि अपने पारफीरो के लिए उसे शराब कम करनी पड़ेगी, शायद छोड़ ही देनी चाहिए। पर अभी? मैंडेलीन अपना खयाल बदलने की कोशिश करती है। एल्स्टन कितना भोला है?—वह सोचती है एल्स्टन कभी-कभी मैंडेलीन को सताने की कोशिश करता है। उसकी इस चेष्टा पर मैंडेलीन को सुख मिलता है, इसीलिए वह एल्स्टन को और ज्यादा चिढ़ाती है। कितनी रोचक चिढ़ है यह कि एल्स्टन उसे बार-बार रोके और वह जाय!

दरअस्ल मैंडेलीन जाती कहीं नहीं! एल्स्टन उस दिन मैंडेलीन को पिक्चर ले जाना चाहता था। दोपहर का शो देखने के बाद जब वह बाहर निकली तो उसने एल्स्टन से कहा कि वह अब एक खास जगह जाना

चाहती है, इसलिए एल्स्टन अकेला घर लौट जाय। एल्स्टन बेहद हताश दिखा। मैंडेलीन को वह इस सूरत में बड़ा रोचक लगा। इसीलिए उसने मुस्कराकर एक हल्का सा मजाक एल्स्टन के साथ इस तरह किया, जैसे किसी बच्चे को लालीपाप पकड़ा रही हो। उसने कहा कि युद्ध के समय में एक रात जो उसके पापा के पास सैनिक आया था जब मेडोरा डरकर उसके कमरे में भाग आयी थी, उसी सैनिक से उसका अरसे से पत्र-व्यवहार है। आज वह यहां आया है। उसी से मिलने जाना है। एल्स्टन बुत की तरह उसे घूरता रहा।

मैंडेलीन ने उसे बहलाते हुए कहा : "जा। बच्चों जैसा मुंह फुला लिया!"

एल्स्टन बिना कुछ कहे मुड़कर धपड़-धपड़ चलता हुआ भीड़ में खो गया। मैंडेलीन मुस्कराती हुई ऊन खरीदने चली गयी। दुकान पर उसे याद आया कि एल्स्टन भी बिल्कुल बच्चों जैसा है। उसे उसके लिए भी ऊन खरीद लेना चाहिए। उसने एल्स्टन के लिए भी खूब मुलायम-सा भूरे रंग का ऊन खरीदा।

घर लौटी तो उसे मालूम हुआ शायद एल्स्टन अभी भी बाहर से लौटा नहीं है। अगले दो दिनों तक मैंडेलीन ने उसकी सूरत नहीं देखी। वह घर लौटकर या तो कुछ पढ़ता रहता था या चुपचाप सो जाता था। मैंडेलीन उसकी इस हरकत पर मुस्कराती रही। अगले दिन मैंडेलीन कुछ जल्दी घर लौटी तो एल्स्टन से सीढ़ियों पर मुलाकात हो गयी। मैंडेलीन को देखते ही वह कतराया।

मैंडेलीन ने आहिस्ता से सामने आते हुए कहा : "ऐली, क्या अब दुबारा मुझसे बिल्कुल नहीं बात करोगे ?"

"मैं कोशिश यही करूंगा।"

"कोशिश ? नहीं राबर्ट, निश्चय की बात करो। कहो कि निश्चित रूप से अब तुम दुबारा मुझसे नहीं मिलोगे। और अगर तुम्हारा निश्चय कमजोर है, अगर तुम्हें अपने ऊपर शक है कि तुम कभी न मिलने का हठ निभा नहीं सकोगे तो तोड़ दो ऐसे कमजोर हठ को एल्स्टन! देखते नहीं राबर्ट, कमजोरी ही तो प्यार होती है। अगर तुममें कमजोरी है तो

प्यार भी है और प्यार अभी है इसलिए यह भी सही है कि ऐसा कुछ नहीं हुआ जो प्यार को चोट पहुंचा सके। तब अकारण ही क्यों प्यार में आहत होने का अभिनय करते हो ?"

"यह शायद सच है कि मैं अभिनय करता हूं। पर तुम जैसा अभिनय…"

"कह डालो एली ! तुम्हीं अच्छी लगती है।"

पर एल्स्टन ने आगे कुछ नहीं कहा। भारी निगाहों से मैडेलीन की तरफ देखता कुछ पल खड़ा रहा और फिर एक बारगी ही जैसे मैडेलीन को चीरता हुआ निकल गया।

कमरे में पहुंच कर मैडेलीन को लगा, वह बहुत थकी है और उसका सर भारी है। उसे लगा जैसे उसके मन में कहीं एल्स्टन को यों अलग-अलग महसूस करने का खेद भी है। उसने सोचा कि ऐसा होने देना शायद बेजा है। जहां तक बन पड़े, वह एल्स्टन से सद्भाव बनाए रखे।

यों एल्स्टन खुद भी अपने को मजबूर पाता है। अपने हठ से वह डरता है। मैडेलीन से कतरा कर उसे लगता है कि उसका मुंह जरूरत से ज्यादा बदजायका हो रहा है। लेकिन वह चाहता है कि मैडेलीन ही पहल करे। मैडेलीन अपराधी है इसलिए वही झुके। यह अच्छी बात है कि मैडेलीन में हठ नहीं है। वह हर बार पहल करती है। एल्स्टन धीरे-धीरे समझौते को स्वीकार कर लेता है। इस समझौते के अलावा शायद समय ने एल्स्टन के लिए दूसरी राह भी नहीं छोड़ी है। जो जितना है उतना ही होकर गनीमत है। सम्पूर्णता कहां प्राप्य है ? ताजे फल नहीं मिलते, इसलिए प्रायः दागी फलों पर गुजारा करना होता है, शुद्ध मक्खन नहीं मिलता इसलिए वेजिटेबल आयल मिला कर बनाए मक्खन से ही टोस्ट बनाना पड़ता है, फिर शुद्ध मुहब्बत न मिलने पर इन्सान सन्तोष न करे तो क्या करे ?

एल्स्टन मैडेलीन के लिए फिर रात को प्रार्थना पढ़ना शुरू कर देता है—ओ प्रभु, खास तौर से आज ही तुम्हारे कारण मुझे सुख मिला, उसके लिए मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं। आज के दिन मैंने क्या-क्या पाप किए यह देख सकने योग्य रोशनी दो और मुझमें साहस दो कि मैं उनके लिए खेद प्रकट कर सकूं ! ओ प्रभु, मुझे बहुत अफसोस है कि मैंने तुम्हें चोट

पहुंचायी···

एल्स्टन मैंडेलीन की तरफ आर्द्र निगाहों से देखता है। उसे ताज्जुब होता है कि ईश्वर के प्रति कही यह बात मैंडेलीन के लिए कैसे साबित हो जाती है। मैंडेलीन को चोट पहुंचायी है एल्स्टन ने, ऐसा एल्स्टन खुद महसूस करने लगता है और उसे अपने पर पश्चाताप होता है। मैंडेलीन उसकी इस आत्मग्लानि पर खिन्न होकर विषय बदलना चाहती है। वह उससे किन्हीं आध्यात्मिक तत्वों पर बात करना शुरू करती है। एल्स्टन रम जाता है।

एल्स्टन अपने को स्पिरिचुअलिस्ट समझता है। वह पाप की बड़ी अच्छी व्याख्याएं करता है। व्याख्याएं करते-करते वह 'मिथ' पर उतर आता है। रहस्य और पुराण की तमाम कहानियों का खासा बौद्धिक विवेचन वह कर डालता है। टैंटेलस की कहानी सुना कर वह साबित करता है कि टैंटेलस आज भी जीवित है, सचमुच जीवित है और हर इन्सान टैंटेलस है।

···टैंटेलस, एक राजा की कहानी। देवताओं के लिए उसके दिल में इतना प्यार था कि उसने अपने अजीज बेटे को जिबह करके उसका पका हुआ गोश्त देवताओं को खिलाया था। देवता उसके विश्वास से खाते रहे पर सहसा एक प्लेट में बच्चे की उंगली निकली। देवता रहस्य जान गये। कटी हुई उंगली धोखा दे गयी। देवताओं का शाप मिला टैंटेलस को। शाप मिला कि टैंटेलस युगों तक जीता रहकर घुटने भर पानी में खड़ा रहेगा और उसके सिर पर अंगूरों की डाल लटकती रहेगी, पर प्यास लगने पर अगर पानी पीने वह झुकेगा तो पानी सूख जायगा और भूख लगने पर अगर वह अंगूर तोड़ने को हाथ उठाएगा तो अंगूरों के गुच्छे उसकी पहुंच से बाहर उठ जायंगे।

भूखा और प्यासा टैंटेलस—जिसने देवताओं की मुहब्बत निभाने में कटी उंगली से धोखा खाया।···इन्सान ही टैंटेलस है, एल्स्टन का विश्वास है। प्लेट में उंगली निकलने से देवता की मुहब्बत रूठ जाती है। मैंडेलीन की जिन्दगी के साथ सैनिक प्रेमी का किस्सा निकल पड़ता है तो एल्स्टन की मुहब्बत दर्द में बदल जाती है। लेकिन एल्स्टन क्या करे?

अभिशप्त है वह ! गायब हो जाने वाला घुटने भर पानी या अंगूर का गुच्छा हाथ में न आने पर भी छोड़ना मुमकिन नहीं। टैंटेलस भूखा रहे, प्यासा रहे, पर इससे भी तो कुछ न कुछ फर्क पड़ता ही है कि वह पानी में खड़ा है, अंगूर की शाख उसकी पेशानी पर झूलती है, कम-से-कम रेगिस्तान में तो वह नहीं है। इसीलिए वह दुबारा मैडेलीन को प्यार करने लगता है। दो दिन के बाद मैडेलीन जब तीसरे दिन फिर देर से घर लौटती है तो वह कुछ नाराज दीखता है। मैडेलीन उसे बहुत प्यार से मनाती है। वह पूछता है : "पर तुम कहां गयी थीं।"

मैडेलीन मुस्कुराकर कहती है : "कहीं।"

एल्स्टन बहुत नाराज होकर सहसा मैडेलीन को झिझोड़ देता है : "लेकिन क्यों ? क्यों ?"

"प्यारे राबर्ट ! अच्छे बच्चे !"

थोड़ी देर बाद राबर्ट लड़-झगड़ कर उसके साथ चाय पीने बैठ जाता है। अगले दिन भी राबर्ट को मैडेलीन इसी तरह चिढ़ा देती है जैसे टैंटेलस अंगूरों के लिए बांह फैलाए तो अंगूरों की शाख झूल कर टैंटेलस को चिढ़ाती हुई ऊपर चली जाय। मैडेलीन कहीं नहीं जाती। कभी-कभी यों ही देर हो जाती है पर एल्स्टन के सामने वह भेद को खोलना नहीं चाहती।

हम्टी-डम्टी—जार्ज नार्थ शायद उस टैंटेलस से भी ज्यादा बड़े गुनाह से अभिशप्त है ! इसीलिए उनकी पेशानी पर अंगूर की शाख भी नहीं और टखनों पर पानी की लहरें भी नहीं हैं। इसीलिए अंगूर की शाख के बजाय जब उन्हें अपनी पेशानी पर झाड़ू लटकती दिखायी देती है तो वे काफी कष्ट पाते हैं !

मेडोरा को पीटने-पाटने के बाद जब खूब अच्छी तरह पानी को हिलकार कर मामा नहा चुकी तो उसे याद आया कि सुबह गुस्से के मारे उसने छज्जे पर तो झाड़ू दी लेकिन कमरा गन्दा ही छोड़ दिया। झींखती हुई मामा ने अपनी नाक पर उगा मस्सा जोर-जोर से खुजलाया और दुबारा झाड़ू लेकर जुटी।

"अजीब बत्तमीजी है !"—झाड़ू पटककर वह बड़बड़ाई और फिर नाक का मस्सा खुजाने लगी। मस्से में भी कम्बख्त इसी मौके पर खुजली होनी थी जब झाड़ू ढीली होकर साइबेरिया की कतरी हुई घास की तरह सारे फर्श पर बिखर गयी ! मामा ने निश्चय किया कि यह सारा दोष जार्ज नार्थ का है कि वे नयी झाड़ू की जरूरत समझ कर भी ईसाबेला के पोर्ट्रेट के पीछे पड़े हैं इसीलिए यह टूटी झाड़ू दरवाजे पर इस तरह लटकानी चाहिए कि मिस्टर नार्थ के अन्दर घुसते ही उनके माथे पर झाड़ू से बकायदा कंघी हो जाय।

नतीजा साफ था। जैसे ही नार्थ ने ब्लूबेल की लतर से अपनी गर्दन बचाकर अपने धड़ को चुपचाप कमरे में दाखिल करना चाहा, उनकी गंजी चांद पर छपाक से झाड़ू बजी। डरकर वे गड़ाप से फिर बाहर आ खड़े हुए। उन्हें भय हुआ कि शायद आज बहुत गुस्से के कारण मामा (उनके बच्चों की !) दरवाजे के पास झाड़ू लेकर छुपी हुई उनकी राह देख रही है। वे कुछ देर हाथ मलते हुए बाहर खड़े रहे, इस इन्तजार में कि शायद मामा झाड़ू हाथ में लिए बाहर निकले। पर मामा झाड़ू लेकर बाहर नहीं आयी, लिहाजा वे बहुत आहिस्ता से कमर झुकाकर धीरे-धीरे दरवाजे की ओर बढ़े। उनके दोनों हाथ भी करीब-करीब इसी अदा से थोड़ा फैले हुए थे कि किसी भी क्षण आ टूटने वाली झाड़ू से खोपड़ी को बचाने की कोशिश करें।

दरवाजे पर पैर रखने के पहले वे फिर ठिठके। झुके-झुके आहट ली। फिर हिम्मत करते हुए बहुत चुपके से एक पांव अन्दर दाखिल किया। दाखिले के साथ ही उनके दिल में सनसनी हुई कि शायद अब झाड़ू पड़ी। पर झाड़ू नहीं पड़ी। हिम्मत करके उन्होंने झुके-झुके ही दूसरा पैर भी अन्दर किया। झाड़ू फिर भी नहीं पड़ी।

हम्टी-डम्टी टांगें मोड़े-मोड़े एक वारगी लपक कर कमरे के बीच में जा पहुंचे। झुके-झुके ही रुक कर आहट ली। फिर धीरे-धीरे कमर सीधी करने लगे। कमर पूरी तरह सीधी कर चुके और झाड़ू से फिर भी मुलाकात नहीं हुई तो वे ताज्जुब से चारों ओर देखने लगे। इस वात से उन्हें बड़ी शान्ति मिली की कमरे में एक चूहा भी कहीं नहीं था। तव

उनकी नजर मामा द्वारा दरवाजे के चौखट पर लटकाई झाड़ू पर पड़ी जो ब्लूबेल की पत्तियों की वजह से बाहर से दीखती नहीं थी। झाड़ू के पास जाकर उन्होंने गौर से देखा। मामा की कारगुजारी पर उन्हें बेहद गुस्सा आया। आखिर यह क्या उल्लूपन है ? मामा की बत्तमीजियां तो अब हद से गुजरती जा रही हैं ! बहुत अच्छा। इतना सब तो किसी की बर्दाश्त से बाहर है। सहसा उन्हीं के करीब कोई बहुत जोर से खांसा। हम्टी-डम्टी ने समझा बस मामा की झाड़ू पड़ी। बिदक कर वे दरवाजे से चिपक गये।

पर यह मेडोरा थी। नार्थ के बाप के बाप द्वारा कभी खरीदे पियानो के पीछे बैठी खांस रही थी। डर छोड़कर नार्थ उसकी पीठ सहलाने लगे। इसी समय उन्होंने सुना, मामा शायद किचेन से आवाज लगा रही थी : "तुम आखिर कहां बैठे थे इस वक्त तक ?"

नार्थ होंठ सिकोड़ कर खामोश रह गये।

मामा फिर उसी तरह चिल्लायीं। नार्थ ने फिर कोई जवाब नहीं दिया। मामा ने तीसरी बार वही बात दुहरायी। नार्थ इस बार थोड़ा हिले; लेकिन खामोश रह गये। मामा इस बात से बहुत नाराज हुई। लद्धड़-लद्धड़ चलती हुई वह कमरे में आयी। नार्थ के ठीक पीछे कमर पर हाथ रखकर जा खड़ी हुई, बोली : "तुमने क्या मुझे पागल समझा है ?"

"जो पागल नहीं होता वह ऐसे सवाल नहीं पूछता।"

"क्या ? क्या तुमने मुझे पागल कहा है ?"

"तुम मुझसे लड़ाई करने पर आमादा हो !"—नार्थ ने फिर बड़े धीरे से कहा।

"तुम दोजख के शैतान हो। तुमसे नजात पाने के लिए खुदा मेरी मदद करे !"—मामा ने छत की ओर देखते हुए कोसा।

"ठीक है, मैं दोजख का शैतान ही सही। मेरा पीछा छोड़ो !"

"अरे तुम आदमी हो ? क्यों मुझे सताने पर कमर कसे हो ! आखिर टूटी झाड़ू देखकर क्या तुम्हें जरा भी शर्म नहीं आती ?"

"झाड़ू नयी मंगा लो !

"तो तुम किस मर्ज की दवा हो ?"

"मैं किसी मर्ज की दवा नहीं हूं। मुझे खुद दवा की जरूरत है।"

मामा नार्थ के बाप-दादों तक को कोसने लगी। मेडोरा उठकर दूसरे कमरे में चली गयी। नार्थ छज्जे पर लटक कर सड़क देखते रहे और मामा चीख-चीख कर फिर नहाने लगी। गुस्सा उतरने के बाद वह जरूर नहाती है। कभी-कभी वह नार्थ के ऊपर इसलिए भी बेहद चीखती है कि नार्थ दो-तीन दिन तक नहाने का नाम नहीं लेते। एक बार चौथे दिन भी न नहाने पर मामा ने उन्हें टेबुल पर खाना नहीं खाने दिया।

नार्थ सचमुच अब किसी दवा की जरूरत बुरी तरह महसूस कर रहे थे। अशांति की दवा क्या हो? रोज-रोज की इस मुसीबत से छुटकारा कैसे मिले?

छुटकारा? सचमुच छुटकारा नसीब नहीं होता। मामा सताती है तो मेडोरा को लगता है जैसे मामा ने मच्छर उड़ाए हैं कहीं से, जो झुण्ड के झुण्ड मेडोरा की तनहायी का दर्द बनकर उससे चिपट रहे हैं! मेडोरा तिलमिला कर भी छुटकारा नहीं पाती। इसी छुटकारे की तलाश में वह दोपहर को छुट्टी के दिन मैडेलीन, एल्स्टन और विल्सन के साथ शहर के बाहर पिकनिक करने गयी थी। पिकनिक से वह लौटी तो भी वे मच्छर उसे बुरी तरह डंस रहे थे। उसे लग रहा था जैसे उसका सारा शरीर सूज आया हो।

छुटकारा कहीं नहीं। जैसे दुनिया में सहसा हवा न रह जाय ठीक वैसी ही स्थिति महसूस होती है। पिकनिक के लिए चारों निकलते हैं तो लगता है कहीं से किसी को दफ्न करके लौट रहे हों। शायद हर रोज उनकी जिन्दगी जब अपने में वापस लौटती है तो किसी मातमपुर्सी से थक-कर ही। एल्स्टन का खयाल है कि वह अपनी जिंदगी की ही मातमपुर्सी करता है। विल्सन शायद यह माने कि वह अपने मृत पुंसत्व की रोज-रोज उभरने वाली उन हसरतों की मातमपुर्सी करता है; जिन्हें वह रोज घोंट देता है। न जाने क्यों, उसका पुंसत्व मर गया, पर उसकी नफ्स अभी यों बढ़ती है जैसे मुर्दे के नाखून! मैडेलीन शायद···लेकिन मैडेलीन मातम-पुर्सी में शिरकत नहीं करती। वह मातमपुर्सी के लिए जुटी तमाम दुनिया

को देखती है और कभी-कभी सबसे पीछे सिर झुकाकर सीने पर हाथ बांधकर वह एक हलकी और बे-जरूरत दुआ मांगती है।

शायद इसीलिए रास्ते भर सब खोए-खोए रहे हों। अगर सहसा एक खास घटना न हो जाती तो शायद यह खोए-खोए रहने की स्थिति कभी न टूटती। मैंडेलीन ने एक रास्ते की तरफ इशारा करते हुए एल्स्टन से कहा कि उसका सैनिक-प्रेमी इसी तरफ रहता है। जवाब में न जाने कैसे आज छूटते ही एल्स्टन के मुंह से निकला : "अरे इधर ही तो उसके दफ्तर की स्टेनो रहती है।"

"तुम्हें कैसे मालूम ?"—मैंडेलीन ने उचट कर कुतूहल से पूछा।

"उसके घर आ चुका हूं कई बार, अकेली ही रहती है बेचारी।"

मैंडेलीन बेतहाशा हंसी। विल्सन और मेडोरा उनसे कुछ कदम पीछे चल रहे थे। अभी तक बातें कोई विशेष न होने पायी थीं और दोनों ही खामोशी तोड़ने के बहाने की तलाश में थे। मैंडेलीन की हंसी पर विल्सन ने आवाज देकर पूछा : "क्यों, क्या हुआ ?"

"अरे एल्स्टन साहब एक ही निकले,"—मैंडेलीन ने हंसी को जारी रखते हुए कहा : "इन्होंने अपनी सगाई कर रक्खी है। अब भेद खुला। बोल रहे हैं हजरत कि इसी रास्ते पर उसका यानी भावी श्रीमती एल्स्टन का घर है !"

"क्या ?" मेडोरा चौंकी।

मैंडेलीन ने अपने मजाक को व्यंग में बदल दिया। उसने एल्स्टन से चुपके से कहा कि वह एल्स्टन की बात का झूठ पहिचानती है। चूंकि उसने सैनिक प्रेमी की बात कही; इसीलिए एल्स्टन ने स्टेनो-प्रेमिका की धमकी दी है। "पर आओ हम दोनों इस संयोग का मजा लें !"—मैंडेलीन ने आखिर में जोड़ा।

खामोशी की परत शायद टूटी। विल्सन और मेडोरा ने उसी चर्चा को मजाक के साथ आगे बढ़ाना शुरू किया। मैंडेलीन एल्स्टन से ज्यादा चालाक है। वह बातों के रस को ज्यादा पहचानती है। उसने कहा कि प्यार की दुनिया में वन-वे-ट्रैफिक का तरीका कामयाब नहीं होता। वन-वे-ट्रैफिक का नियम वहां होता है; जहां लोगों को दुर्घटनाओं से बचाना हो।

प्यार तो दुर्घटना है। पर दुर्घटना के लिए जान हथेली पर लेकर जो चल सके, वह एल्स्टन जैसा नौसिखिया ड्राइवर नहीं होता।

एल्स्टन विल्सन या मेडोरा के सामने मैडेलीन की इस बात का जवाब देने से हिचकता है; इसीलिए खामोश रह जाता है। मैडेलीन यह जरूर समझती है कि उसकी बात ज्यादा जमती नहीं; लेकिन वातावरण की खामोशी जरूर भंग हो जाती है; इसीलिए वह हंसकर मेडोरा को छेड़ने लगती है। मेडोरा अनावश्यक उत्साह के साथ रेकार्ड-कीपर लड़की की सूरत और उसके नाम आने वाले टेलीफोन की बात सुनाने लगी। मेडोरा के आफिस की बात उठी तो एल्स्टन ने कहा कि उसकी फर्म दूसरे शहर में अपना हेड-आफिस खोल रही है और एल्स्टन ने निश्चय कर लिया है कि वह भी हेड आफिस चला जायगा।

"लेकिन तुम तो कह रहे थे कि तुम यहीं के स्थानीय दफ्तर में काम करोगे! पापा को भी नहीं बताया तुमने।"—मेडोरा ने चिन्ता प्रकट की।

एल्स्टन के कुछ बोलने से पहले ही मैडेलीन ने कहा: "अरे राबर्ट को जाना कहीं नहीं है, यों ही एक शोर मचाने के लिए ऐसा कह रहा है।"

एल्स्टन ने कहा: "समय साबित कर देगा कि मैं जाता हूं या नहीं।"

"अरे तो तुम सचमुच चले जाओगे?"—मैडेलीन ने पूछा।

"जरूर।"

"खैर, वैसे बीच-बीच आते तो रहोगे ही।" मैडेलीन के इस वाक्य को सुनकर एल्स्टन को फिर तिलमिलाहट हुई। मेडोरा एल्स्टन के जाने की बात को लेकर कुछ चिन्तित सी लगी तभी विल्सन ने कहा: "भाई, पिकनिक की सीमा तो लगता है शुरू हो गयी। क्या अच्छा न होगा कि हम लोग पिकनिक का मजा लेने की तैयारी करें?"

"बेशक-बेशक!" मैडेलीन ने तुरन्त बात मोड़ दी, बोली: "एल्स्टन भारी-भरकम अध्यात्मवादी बातें कर सकता है, मेडोरा हल्की-फुल्की कविताएँ गा सकती है, मिस्टर विल्सन—मिस्टर विल्सन रेस्त्राँ के मैनेजर की हैसियत से तमाम तरह की खट्टी-मीठी बातें कर सकता है और मैं सारे कार्य-क्रम का संचालन कर सकती हूं। चलो पहले कोई बैठने की जगह

खोजी जाय। फिर कार्य-क्रम शुरू हो!"

"पर यहाँ बैठने की जगह कहाँ मिलेगी?" मेडोरा ने चिन्ता प्रकट की।

सड़कें प्रायः पगडंडियों में बँट गयी थीं और गन्ध वाले पीले-लाल फूलों की झाड़ियों के बीच-बीच केले के दरख्तों से घिरे खपरैल के मकानों के दरवाजों से कहीं-कहीं बच्चे या औरतें ताज्जुब की निगाह से देख रहे थे। चारों उनकी स्थिति के प्रति कुछ जरूरत से ज्यादा सचेत होकर रास्ते पार करने लगे। आगे बाँसों का एक घना झुरमुट देखकर वे ठिठक गये। जगह बड़ी सुहानी लगी। सलाह हुई कि यहीं बैठा जाय। हल्की-हल्की धूप कभी-कभी बाँस की शाखों से छनकर चमक जाती थी। विल्सन ने हरी पत्तियों का तम्बू जैसा देखा। देखते-देखते ही जैसे उसकी सुदूर यादों का कोई कोना चमक उठा। विल्सन ने अपने स्वप्न को तोड़ देना चाहा। बाँस की एक पतली टहनी पकड़कर उसने जोर-जोर से कई बार उसे खींचा। खड़खड़ाहट के साथ लम्बी दुमों वाले बहुत से पक्षी चीख-चीख कर उड़ने लगे। मैडेलीन अभी भी खपरैलों में रहने वाले उन 'प्राणियों' की बातें कर रही थी जो उन्हें देखकर चौंके थे। विल्सन नया ईसाई था (कम से कम जन्म-जात नहीं ही था) इसलिए वह और सबकी अपेक्षा ज्यादा जोर देकर हिन्दुस्तानितों के पिछड़े होने के दावे करने लगा।

एल्स्टन ने उसकी बात का समर्थन नहीं किया। मैडेलीन ने दोनों के बीच की बात कहकर एक हल्का सा समझौता करा दिया। मेडोरा को यह समझौता काफी अच्छा लगा। मगर जैसे ही वह एक झाड़ी से कतरा कर दूसरी के पास कूद कर जाने लगी, बाँस की झरी हुई सूखी पत्तियों पर उसका पैर फिसल गया। विल्सन ने संभाल लिया; वरना काफी चोट लग जाती। विल्सन उसे बताने लगा कि वह जहाँ तक हो, पत्तियों से बची रहे वरना कभी-कभी इन पत्तियों में ऐसे कीड़े भी होते हैं जो बेहद खाज पैदा करते हैं।

कोई बहुत लम्बी दुम वाली चीज रेंगती हुई तेजी से बांस की टहनियों पर चढ़ गयी। मेडोरा इतनी जोर से डरी कि विल्सन हंसने लगा। उसने बताया कि यह एक किस्म की जंगली छिपकली मात्र है। काटती नहीं।

मौसम के अनुसार रंग बदलती है।

"कृपया अब कीड़ों की चर्चा का विषय भी बदलिए मिस्टर विल्सन। मैंने चादर बिछा दी है।"—मैंडेलीन ने आवाज दी।

सचमुच मैंडेलीन ने झाड़ियों के बीचों-बीच पत्तियों की गद्दी पर सफेद चादर बिछा दी थी जैसे किसी ने उतने हिस्से में दूध से भरा टब रख दिया हो और बीचों-बीच भूरी बत्तख की तरह मैंडेलीन अपना फ्राक फैलाकर बैठी। एल्स्टन के सामने कण्डी से कागज की थैलियां निकाल-निकाल कर रख रही थी। थैलियों में वह बिस्कुट और केक लायी थी। एल्स्टन के कन्धे पर चाय का थर्मस अभी भी पड़ा था।

लेकिन तब तक विल्सन की नजर किसी चिड़िया के घोंसले पर पड़ी। मैंडेलीन को जवाब देकर वह मेडोरा के साथ घोंसले से चूजे उतारने की कोशिश में जुट गया। कन्धों पर बांस की कंटीली शाखों के खोंचे लगा कर जब वह घोसले तक पहुंचा तो मालूम हुआ, घोंसला अभी तैयार ही किया जा रहा है, चूजे क्या अंडे भी नहीं हैं। तभी ऊपर से उसने देखा, बंसवाड़ी की दूसरी तरफ काफी विशाल तालाब है और उसमें जंगली बत्तखें तैर रहीं हैं। वह नीचे उतर आया। विल्सन की सलाह पर मेडोरा भी तालाब तक जाने को राजी हो गयी।

बांस की झाड़ियों और तालाब के बीच मिट्टी इकट्ठा करके शायद कभी कोई दीवार बनायी थी जो धंस कर ऊंचे-ऊंचे ढेरों का रूप ले चुकी थी। मेडोरा के सैण्डिल बुरी तरह फिसलने लगे। वह चिल्लायी। मैंडेलीन ने घूमकर उधर देखा। हल्की-सी झलक मिली, शायद विल्सन मेडोरा की बांह पकड़ कर मिट्टी के ढेर को पार करा रहा था।

एल्स्टन के होंठ संकुचित हो गये, मैंडेलीन ने देखा। मुस्कुराते हुए वह बोली: "डाह करना ठीक नहीं होता।"

"कुछ भी हो, पर मुझे यह शख्स कुछ अजीब लगता है। शायद मुझे वह पसन्द नहीं है।"

"अकारण नफरत के भी कोई मतलब होते है?"

"मुझ तो इसमें भी शक है कि यह जन्मजात ईसाई है।"

"जन्मजात...मैंडेलीन ने वाक्य पूरा भी नहीं किया था कि किसी

चिड़िया ने एल्स्टन के माथे पर ढेर सी बीट गिरा दी। मैडलीन जोर-जोर से हंसने लगी, बोली : जरूर तुम्हारी बात गलत है वरना चिड़िया भी तुम्हें यों अनायास दयनीय न बना देती।"

एल्स्टन ऊपर देखकर जरा खुले में खिसक कर माथा रूमाल से पोछने लगा। मैंडलीन ने उसके मन को छूते हुए गहरी निगाह से उसे देखा। एल्स्टन मैंडेलीन की इसी नजर से हारता है। उसे लगने लगता है जैसे मैंडलीन सहसा उसके माथे पर ठण्डे पानी की धार गिराने लगी हो। मुस्कुराकर उसने कहा : "राबर्ट मैं तुम्हें इस वक्त चूम नहीं सकती। उधर देखो दो-तीन बच्चे खड़े हमें घूर रहे हैं।"

पर बच्चों की नजर तालाब की ओर जाते हुए विल्सन और मेडोरा की तरफ चली गयी।

तालाब के एक तरफ जमीन ऊंची टीले जैसी थी, जिस पर ईंटों के भट्ठे की चिमनी लगी थी। चिमनी से धुएं की पतली-सी रेखा धुंधले-धुंधले आसमान पर आहिस्ता-आहिस्ता घुल रही थी। तालाब का दूसरा किनारा बहुत दूर था और उस पार खड़ी कुछ गायें सफेद धब्बों-सी एक दूसरे के साथ सींगें उलझा रही थीं। तालाब में ढेर सी बत्तखें पानी में दायरे बनाती हुई तैर रही थीं। विल्सन ने देखा। उससे थोड़ी दूर, जहां नाला जैसा तालाब से मिलता है, कुछ जलमुर्गाबियां मछलियोंपर घात लगा रही हैं।

"अगर बन्दूक होती तो जरूर मैं इनका शिकार करता।" विल्सन ने कहा।

मेडोरा ने हाथ में अनायास ही ईंट का एक टुकड़ा उठाया। विल्सन हंस पड़ा, बोला : "तुमसे तो ईंट वहां तक पहुंचेगी भी नहीं !"

मेडोरा ने झिझक कर ईंट बांसों की तरफ उछाल दी।

"खैर, देखो मैं अब ईंट से ही शिकार की कोशिश करता हूं। शायद निशाना बैठ जाय।"—विल्सन ने तीन-चार ढेले चुने और जोर-जोर से मुर्गाबियों की तरफ फेंकने लगा। पानी में अकारण ही ढेले फेंकने के बाद विल्सन निरर्थक हंसी हंसा।

"अगले रविवार को मैं इधर फिर आऊंगा और तब मुर्गाबियां मारने

के लिए एयर-गन लाऊंगा।"

"क्या तुम्हारे पास है ?"—मेडोरा ने पूछा।

"है तो नहीं; पर खरीदूंगा।"

"मैं भी एक मुर्गाबी का निशाना लूंगी !"

"तुम ? हा-हा ! तुम्हारा तो खुद ही हार्ट फेल हो जायगा बन्दूक हाथ में लेकर !"—विल्सन ने खोखला सा मजाक किया। दरअसल यह मजाक एक पर्दा था। विल्सन के मन में सहसा जो बात उभरी, उसे न कह पाने की कायरता को छुपाने का पर्दा मात्र था यह ओछा मजाक। वह कहना चाहता था कि मेडोरा तो खुद ही एक खासी अच्छी मुर्गाबी है, जिसका गोश्त बहुत लजीज होगा, वह क्या किसी मुर्गाबी का शिकार करेगी। विल्सन ने मन की बात को दबा देने के बावजूद देखा जैसे वह कोई गुनाह करते-करते छुप रहा है। छुपाव को और ज्यादा मजबूती देते हुए उसने एक चिपटा सा किसी मिट्टी के बर्तन का टूटा टुकड़ा उठाया और झुक कर पानी की सतह पर तेजी से फेंका। टुकड़ा दूर तक पानी पर छप-छप करता तितली की तरह दौड़ गया। मेडोरा को इस खेल में बहुत मजा आया। उसने भी टुकड़े फेकने की कोशिश की; पर वे पानी में जहां पड़े, वहीं डूब गये। विल्सन ने बड़े मर्दाने ढंग से दो-तीन टुकड़े और फेंके; लेकिन इस बार वह बिल्कुल असफल रहा। झेंप कर और टुकड़ों की तलाश में मुड़ा। भाग्य से टुकड़े और मिले ही नहीं। घास पर वह रूमाल बिछा कर बैठ गया। मेडोरा ने भी रूमाल बिछा लिया।

"तुम बन्दूक से अच्छा निशाना लगा सकते हो !"—मेडोरा ने पूछा।

"अगर अच्छी बंदूक हो तो मैं दौड़ते हुए खरगोश का निशाना भी आसानी से लगा सकता हूं।"—विल्सन झूठ बोला।

"खरगोश ? लेकिन खरगोश का शिकार कोई भला काम नहीं लगता; क्योंकि खरगोश बहुत खूबसूरत होता है।"—मेडोरा ने आपत्ति की। विल्सन फिर सही जवाब देते हुए हिचक गया। उसके मन में आया कि खूबसूरत चीज के शिकार में ही तो विशेष आनंद होता है; पर न जाने क्यों उसे लगा कि इस बात को मेडोरा अपने लिए समझ कर अपमानित महसूस करेगी। वह हस भर दिया।

मडेलीन ने बच्चे को उसकी हथेली पर रखना चाहा तो वह चीख कर अलग हो गयी। मैंडेलीन बच्चे में फिर व्यस्त हो गयी।

विल्सन ने कुछ याद करते हुए कहा : "निश्चय तो शायद कुछ ऐसा हुआ था कि मेडोरा का गाना सुनने को मिलेगा। लगता है वह बात हम लोग भूल गये।"

"नहीं जी, भूले क्यों? आप दोनों मौसम का मजा लूट रहे थे, इसलिए उस कार्यक्रम की गुंजाइश ही नहीं थी"—मैंडेलीन ने चीं-चीं करते हुए चिड़िया के बच्चे की खुली चोंच में थोड़ी सी चाय टपकाते हुए कहा।

मेडोरा अकारण ही प्रतिवाद करने लगी : "आनंद क्या लूट रहे थे! मिस्टर विल्सन मुर्गाबियों के शिकार की बात कर रहे थे फिर···"

"शिकार जमा नहीं?"—मैंडेलीन ने पूछा।

"जमता क्या! मिस्टर विल्सन ने कहा कि अगली बार वे एयरगन लेकर आयेंगे।"

"तुम भी आओगी?"

"मैं ही क्या, मेरा खयाल है हम चारों आएंगे।" मेडोरा ने जवाब दिया।

मैंडेलीन ने यों ही मजाक करते हुए कहा : "मिस्टर विल्सन तो जबरदस्त शिकारी हैं। निशाने से जरा संभलकर रहना।"

बात बिल्कुल सीधी सी थी। मैंडेलीन महज इतना ही कहना चाहती थी कि अनभ्यस्त शिकारी निशाना एक चीज का लगाता है, मार बैठता है दूसरी चीज; पर अगर वही बात मेडेरा के लिए व्यंग और विल्सन के लिए उद्घाटन का कड़वा रूप ले ले तो इसमें उनका क्या दोष? विल्सन चौंक गया और मेडोरा तुनक गयी। तुनक-मिजाजी से मैंडेलीन को चिढ़ है। मेडोरा से उसने बात बदलने के लिए आग्रह किया कि वह कोई गीत सुनाए। मेडोरा ने गीत याद न होने का बहाना किया। मैंडलीन ने फिर आग्रह किया तो उसने कहा कि मन ठीक नहीं लगता, सीने में कुछ दर्द भव हो रहा है। मैंडेलीन चिड़िया के बच्चे को चाय पिलाकर निबट चुकी थी। मेडोरा का यह जवाब पाकर उसने छेड़ना चाहा : "अरे मेरी प्रिय नाइटिंगेल, गाओ भी!"

"सचमुच तबियत ठीक नहीं !"

"पर जब तबियत खराब होती है तभी तो गीतों में जिन्दगी आती है।"

"जी नहीं, जब तबियत खराब होती है तो खांसी आती है।"—मेडोरा ने जवाब दिया।

"लेकिन फिलामीला की कहानी जानती हो ? तुम्हें पता है रावर्ट, फिलामिला का संगीत तो तभी फूटा जब उसकी जवान नहीं रही। विल्सन तुम्हें पता है न फिलामीला की कहानी ?"—मैंडेलीन के हाथ का बच्चा फिर अपने झिल्लीदार भद्दे डैने कंपा कर चीं-चीं करने लगा।

"पर हर कोई फिलामीला क्यों हो !"—मेडोरा ने बात को एकदम काट देने की गरज से टोका।

मेडेलीन ने बच्चे की तरफ से आंखें उठाकर मेडेरा को देखा, फिर बहुत आहिस्ता से बोली: "शायद तुम ठीक कहती हो। फिलामीला हो पाना मुश्किल ही है; क्योंकि आज का मनुष्य फिलामीला के दुर्भाग्य से इतना बुरा नहीं रह गया कि उसके साथ बलात्कार करके उसकी जवान काट ले और कटी जवान से अपना दर्द गाती हुई फिलामीला उड़ती फिरे। आज का इन्सान किसी के साथ बलात्कार नहीं कर सकता। वह महज मुर्गाबियों के शिकार की कल्पना कर सकता है !"

"क्या मतलब ?"—एल्स्टन अचानक इस बात पर बुरी तरह चौंक कर उठ बैठा।

"मुझे बहुत अफसोस है"—मैंडेलीन हथेली के बच्चे को देखती हुई बोली: "पर यह तो मर गया ! अरे यह तो मर गया ?"—मैंडेलीन चिड़िया के बच्चे को लेकर सहसा सहम गई। बच्चा उसकी हथेली पर बेजान पड़ा हुआ था। वह एकबारगी ही चीखने लगी: "लेकिन इतनी जल्दी इसे हो क्या गया ?"

एल्स्टन झुंझला गया। वह समझा कि अपनी हमेशा जैसी आदत के अनुसार मैंडेलीन तीखी बात बोलकर बातों को पलटना चाहती है। लेकिन मैंडेलीन बच्चे को लेकर बेहद व्याकुल हो उठी: "रावर्ट ! रावर्ट ! विल्सन ! प्लीज !"

मैंडेलीन का आग्रह इतना गहरा था कि सहसा एल्स्टन अपने आप को भूलकर पानी के लिए तालाब की तरफ दौड़ पड़ा। लेकिन चिड़िया के बच्चे में कुछ नहीं था। विल्सन ने कहा कि चाय ने उसके लिए जहर का काम किया है। इस पर मैंडलीच ने बहुत परेशान होकर कहा : "लेकिन चाय का जहर क्या मकड़ियों जैसे कीड़े-मकोड़ों से ज्यादा होता है, जो ये चिड़ियां रोज खाती रहती हैं !"

मैंडेलीन उस बच्चे को घर ले जाना चाहती थी। उसके मर जाने से उसे बेहद अफसोस हुआ। उसने कहा कि वह रोने-रोने को महसूस कर रही है।

एल्स्टन भीगा रूमाल लेकर लौटा तो मेडोरा और विल्सन चिड़िया के बच्चे के लिए कब्र खोद रहे थे। मैंडेलीन अपने नन्हें रेशमी रूमाल में लपेट कर बच्चा लिए बैठी थी। बांस की जड़ों के करीब चाय के चम्मच से एक छोटी कब्र तैयार की गयी। एल्स्टन ने मृत के लिए प्रार्थनाएं पढ़ीं और नन्हें पक्षी का रेशमी रूमाल में लिपटा छोटा-सा ताबूत कब्र में रख दिया गया। मिट्टी को मिट्टी—कहते हुए एक-एक मुट्ठी मिट्टी डालने के बाद कब्र अच्छी तरह बन्द कर दी गयी। विल्सन ने बांस की एक टहनी तोड़ कर उसका छोटा सा क्रास बनाया और कब्र के ऊपर गाड़ दिया। फिर चारों ने हाथ बांध कर मृत के लिए प्रार्थना की। मेडोरा और विल्सन खामोश खड़े रहे, मैंडेलीन की आंखें चुप-चाप गीली हो गयीं और एल्स्टन जोर-जोर से पढ़ता गया, सुबह से रात तक इसराइल को प्रभु की प्रतीक्षा करने दो··· उन्हें अनंत विश्रांति दो प्रभु, उन्हें असीम प्रकाश से उद्भासित करो···प्रभु उन्हें शांति मिले—आमीन···

मृत के लिए प्रार्थना समाप्त कर उन्होंने सर ऊपर उठाया तो दिन थक चुका था। आगे शायद किसी में दुबारा पिकनिक की बैठक जमा सकने का साहस नहीं था। मैंडेलीन ने अन-खाए बिस्कुटों आदि के पैकेट दुबारा कैण्डी में रखे, आहिस्ता से झाड़कर विल्सन ने चादर की तह की। एल्स्टन ने थर्मस कंधे पर लटका लिया और एक बार अच्छी तरह कब्र पर लगे ताजे हरे क्रास को देख कर बांसों के झुरमुट से लौट पड़े।

लौट कर मेडोरा को सचमुच लगा कि जैसे घुटन के मच्छर उसके

शरीर से चिपट गये हैं और घुटन का डंसा हुआ जहर उसके शरीर को सुजा रहा है। मैडेलीन ने जिस प्रसंग को छेड़ा था, उसे लेकर अगर वह अपनी तिक्तता जाहिर कर सकती तो शायद वे मच्छर एक बार उसकी चेतना की पेशियों की हरकत से डर कर उड़ने पर चिड़िया के बच्चे की मातम-पुर्सी से उसे दवा देते।

मातम-पुर्सी ने एल्स्टन को एकांत की जरूरत महसूस करने पर मजबूर किया। विल्सन को लगा कि उकताहट धोने के लिए उसे बाजार घूम आना चाहिए, घूमकर थककर लौटना चाहिए। लेकिन ऐसा सोचकर भी वह सबके साथ घर लौट आया। पर घर लौटकर वह और ज्यादा अस्थिर हो उठा। आखिर रात होते-होते वह बाहर निकल पड़ा।

मैडेलीन जो मातम-पुर्सी में जिंदगी के साथ शिरकत करने की आदी नहीं थी और कभी-कभी सिर्फ सबसे पीछे ठिठक कर दोनों हाथ सीने पर बांधते हुए एक दुआ भर मांगती थी, सहसा महसूस करने लगी जैसे उसने चिड़िया के बच्चे को नहीं बल्कि अपनी किसी हसरत को दफ्न कर दिया है और उसे सिर्फ दुआ ही नहीं मांगनी है; बल्कि कब्र को मिट्टी भी देनी है।

नहीं! मैडेलीन जिन्दगी को कब्र बनने नहीं दे सकती! यह उसके स्वभाव में ही नहीं है। इसलिए वह मृत के नाम पर आंसू बहाने के बजाय कोशिश करेगी कि उस कब्रगाह पर, जहां उसकी हसरतें दफ्न हुई हैं, कुछ दुलाव के खुशबूदार फूल लगाये जो महकते रहें। वह हमेशा हसरतों की कब्र पर फूल बो देती रही है चाहे टाम की मुहब्बत हो, चाहे पारफीरो का ख़ाब हो, चाहे नन्हें पक्षी की लाश हो—नहीं! मैडेलीन आंसू बहाए—यह नहीं! जो हसरत मर जाती है, उसके सरहाने एक खुशबूदार फूलों वाला पौधा वह लगाएगी जिसमें उसकी हसरत महक उठे···

घर लौट कर मैडेलीन अपने कमरे को नये सिरे से सजाने का निश्चय करती है। वह सोचती है कि अभी जहां उसने वीनस की मूर्ति रख छोड़ी है वहां पर एक खूबसूरत गुड्डा बैठाएगी, जिस रैक में उसने किताबें सजा रखी हैं उसमें वह तरह-तरह के खिलौने बैठाएगी, जहां अभी उसने डेस्क रख छोड़ी है वहां पर तो एक नन्हा सा पालना लगाना होगा। लेकिन बार-बार उस परिन्दे की कब्र क्यों याद आती है।

उसका मन करता है कि वह बाहर जाए और नन्हें-नन्हें फ्राक खरीद कर ढेर से इकट्ठे ले आये। लेकिन उस वक्त उसे वास्तविकता से सपना ज्यादा अच्छा लगता। सोफे पर लेटी-लेटी वह कमरे में खोई-खोई देखती रहती है। उसकी आंख एक तस्वीर पर अटक जाती है···कुमारी मेरी की तस्वीर, एक बड़े सीप पर खड़ी हुई, दैवी आत्मा उसमें आकाश से प्राण फूक रहा है···कुमारी मेरी गर्भवती हो गयी थी और उसने ईसा को जन्म दिया था···

दैवी आत्मा·नहीं शायद वह दैवयोग हो जिससे मैडेलीन को पारफीरो मिला। आकाश वाणी कहती है कि जो प्राणी कोख में है वह संसार को खोई हुई चीज प्राप्त कराएगा। ईसा के लिए आकाश वाणी हुई थी कि ईसा लोगों की खोई हुई आस्था को वापस दिलाएगा।

मैडेलीन की खोई आस्था दफ्न हुई हसरतें···मैडेलीन आकाश वाणी सुनने की कोशिश करती है कि उसकी दफ्न हुई हसरत से जो पौधा उगेगा उससे महक उठेगी—महक, जो हसरतों की प्यास के लिए तृप्ति का प्याला होगी। पारफीरो आयेगा उस महक के पर्दे पर झिलमिलाता हुआ जो मैडेलीन की खोई आस्था को वापस दिलाएगा···

मैडेलीन सोचती है कि वह कल जरूर एक खूबसूरत गुड्डा खरीद कर लाएगी, जिसे वीनस की मूर्ति की जगह सजा देगी और रैक पर··· डेस्क की जगह पर···

7

गली के मोड़ पर रंगाई के कारखाने के पास डेविड के टी-स्टाल के बूढ़ों में एक बड़ी रोचक बात पर बहसें होने लगीं। मेन रोड पर जहां गली मिलती है वहां बस स्टैण्ड है। बस स्टैण्ड पर इन्जार में खड़ी लड़कियों में से सहसा कोई चिहुंक कर चीख पुकार मचाने लगती थी और चारों ओर के लोग परेशान होने लगते थे कि माजरा क्या है; क्योंकि प्रायः लड़की की खुली गर्दन या उघड़ी बांह पर कोई जलती हुई नन्हीं-सी चीज आकर लगती थी और वहां फौरन स्याह दाग पड़ जाता था। आखिर यह रहस्य क्या है ? प्रायः सुबह ही ऐसी घटना होती है। कोई जान नहीं पाता कि क्या चीज है जो सिर्फ लड़कियों के शरीर पर ही चोट का निशान बनाती है, वह भी चुनकर कम उम्र की लड़कियों पर।

"अरे ! यह कुछ नहीं, महज आजकल की चंचल छोकरियों का नखरा है !"—रिटायर्ड गार्ड हप्पू बाबू ने फैसला दे दिया।

मिस्टर स्माल अपनी लम्बी-चौड़ी पतलून की हिप वाली पाकेट टटोलने लगे। जरा-सी देर में उनकी उंगलियों में कोई बहुत छोटी सी चीज दबी हुई बाहर आयी। जादूगर की तरह उसे इधर-उधर घुमाते हुए हप्पू की बात काट कर कहा : "लेकिन मैं कह सकता हूं कि यह गंभीर मामला है।"

"वह कैसे ?"

"ऐसे ही। इसी नन्हीं-सी चीज से ही प्रमाणित कर सकता हूं।"—स्माल ने आकस्मिक रहस्य से सारे टी-स्टाल को एकबारगी ही चौंकाते हुए कहा।

डेविड चाय का डिब्बा मेज पर ही पटक कर रुमाल की तरफ लपक आया। जो सज्जन टेनीसन और मिल्टन पर बहस मुक्केबाजी में करने के आदी थे और शायद किसी प्राइवेट स्कूल में अंग्रेजी पढ़ाते थे, रुमाल की उंगलियों में दबी चीज हाथ में लेने के लिए सारस की चोंच की तरह चुटकियां मारने लगे।

रुमाल ने वह चीज फौरन मुट्ठी में बंद कर ली। हप्पू को रुमाल की यह आदत बेहद नापसंद है। वह चिल्लाया : "रुमाल अगर तुम्हें कुछ पता है तो इस बात का इतना तमाशा बनाने की क्या जरूरत ?"

"तमाशा ? निश्चित रूप से यह एक तमाशा ही है। तुम सिर्फ हंसोगे, मैं कहता हूं सिर्फ हंसोगे।" —रुमाल ने कहा।

"लेकिन आपके हाथ में यह है क्या !"—टेनीसन पर मुक्केबाजी करने वाले बूढ़े ने पूछा।

"कुछ भी नहीं। बहुत ही मामूली-सी चीज। यह महज एक एयर-गन का नन्हा-सा छर्रा है।"—कहते हुए रुमाल ने अपनी मुट्ठी खोल दी। उनकी हथेली पर एक चमकीली धातु की गोली थी। हप्पू ने लपक कर उठा ली, इधर-उधर उलट कर देखा, पर समझ में कुछ न आया। झल्ला कर रुमाल की हथेली पर उसे वापस फेंकते हुए उन्होंने कहा : "इस वाहियात सी चीज का बस-स्टैण्ड पर खड़ी होने वाली लड़कियों की चोट से क्या ताल्लुक ?"

"बस यही तो सबसे सीधी-सी बात है। जानते हो, अभी-अभी मैं जब उधर से गुजर रहा था तो एक लड़की सहसा चीख कर फुदकने लगी। तभी मेरी नजर इस छर्रे पर पड़ी जो निश्चित रूप से मेरी आंखों के सामने उस लड़की से टकरा कर सड़क पर लुढ़क गया था। मैंने उसे उठा लिया। यही है वह छर्रा।"

"तो क्या मतलब, क्या कोई एयरगन की चांदमारी लड़कियों पर करता है। ऐसी फालतू बातें महज तुम्हारे दिमाग की ही उपज हो सकती है।"—हप्पू ने निर्णय देते हुए कहा और होंठ लटका कर अखबार पढ़ने लगे।

पर टेनीसन पर मुक्के बाजी करने वाले बूढ़े को रुमाल की बात काफी

गंभीर लगी। वह रमाल के सामने बैठता हुआ बोला, "पर आपकी इस बात से मुझे लगता है कि इसमें सच्चाई होनी चाहिये और इस तरह यह काफी गंभीर मामला है।"

ज़िसने पिछली बार टेनीसन पर बहस में तीन मुक्कों से मार खायी थी, वह पीछे से झुका हुआ दोनों की बात सुन रहा था। बात रोचक देख-कर वह सामने आ गया, बोला: "इसमें शक नहीं। बहुत मुमकिन है, वह कोई मानसिक विकार का रोगी हो जो लड़कियों को यों सताकर आनन्द लेता हो। पर तब इसकी तो गंभीरता से खोज की जानी चाहिए।

इसी वक्त दरवाजे पर नार्थ खड़े दिखे। वे शायद रमाल की ही तलाश में थे क्योंकि रमाल को देखते ही वे लपक कर स्टाल में दाखिल हो गये। रमाल ने उन्हें भी वही रहस्य की गोली दिखायी। पर नार्थ ने विशेष रुचि नहीं दिखायी। महज हां-हूं करके बात टाल दी। हप्पू नार्थ के इस रुख से बहुत चिढ़ा। दरअसल वह अपनी बेरुखी जरूर दिखा रहे थे, लेकिन ध्यान उनका इसी कहानी में अटका था। उनकी आदत ही यही थी; क्योंकि जिसमें उन्हें रुचि होती थी उसमें वे अकेले ही रमना चाहते थे। इसीलिए दूसरों से चिड़चिड़ाकर बेरुखी अख्तियार करने के बाद वे मजे में अकेले-अकेले बातों का मजा लिया करते थे। नार्थ ने उस कहानी में अरुचि दिखायी तो हप्पू चिढ़ गये; क्योंकि उनकी अपनी रुची उस कहानी में जरूर थी। उन्होंने नार्थ के लिए व्यंग किया: "आज फिर झाड़ू की दास्तान आपको परेशान कर रही है क्या?"

नार्थ दयनीय चेहरा बना कर चुप हो गये। टेनीसन पर बहस करने वाला बूढ़ा अपनी मेज पर जाकर 'सैडिस्ट' पागलों की कहानियां सुनाने लगा और रमाल ने गोली पाकेट के हवाले करते हुए नार्थ से धीरे से पूछा: "कोई खास बात?"

"कुछ नहीं।"—नार्थ ने और भी ज्यादा आहिस्ता से जवाब दिया।

रमाल को पता था कि नार्थ जब कुछ नहीं कहते हैं तो इसके मायनी होते हैं कि वे बहुत ज्यादा दुःखी हैं और बात करने की कोई भूमिका खोज रहे हैं, इसलिए वे चुप हो रहे; ताकि नार्थ कोई भूमिका खोज लें। नार्थ ने कुछ देर की खामोशी के बाद सचमुच एक भूमिका तलाश कर ली।

रूमाल से पूछा : "क्या आप किसी अच्छे वकील को जानते हैं ?"

रूमाल को यह भी पता था कि नार्थ का अच्छे वकील से मतलब सस्ते वकील से है। बोले : "हां मिल जायगा लेकिन किस लिए ?"

"भई किस लिए पूछते है आप ! आप से क्या मेरा कुछ छुपा हुआ है ?"—नार्थ ने बड़ी आजिज़ी से कहा।

"वह तो सही है पर एक दम अभी किस लिए ?"

"भई उनकी तो ज्यादतियां बढ़ती ही जा रही हैं।"

"किनकी ? तुम्हारी श्रीमती की ? फिर कुछ हुआ क्या ?"

"अरे, हां भई ! फिर कुछ होने की बात आप पूछते हैं ? अरे अब क्या नहीं होता ?"— नार्थ ने बड़े विस्तार के साथ धीरे-धीरे झाड़ू वाला सारा किस्सा सुनाया और बोले कि किसी ऐसे वकील से भेंट कराइए जो इनसे पीछा छुटा सके।

रूमाल ने कहा कि सभी वकील पीछा छुटा सकते हैं। तलाक ही चाहिए न ?"

"अजी यही तो मुश्किल है। उतनी दुर्दशा मैं नहीं चाहता। कुछ शांति पूर्ण तरीके से हो जाता तो बड़ा अच्छा था।"

हप्पू ने अखबार से गर्दन घुमाकर व्यंग किया : "भुख हड़ताल करो, भूख हड़ताल ! शांतिपूर्ण तरीका ! !"—वे फिर अखबार में मशगूल हो गये।

रूमाल हंसे, बोले : "मित्र यह भूख हड़ताल वाला तरीका तो काफी अच्छा मालूम होता है।"

नार्थ को लगा कि अब और ज्यादा बैठने से कोई लाभ नहीं क्योंकि रूमाल गंभीरता से उनकी बात समझने के लिए राजी नहीं दिखते इसलिए दो-चार मिनट इधर-उधर के हाल-चाल लेकर वे उठ खड़े हुए।

वे घर लौटे तो अजीब माजरा सामने आया। मकबरे के फाटक पर बीसों लोग जमा थे और भीड़ में पांच-सात पुलिस कांस्टेबलों के साथ पुलिस इन्सपेक्टर विलसन को घेरे हुए खड़े थे। विल्सन के हाथ में एक नन्हीं सी एयरगन थी और लोग बेतहाशा उसे गालियां सुना रहे थे।

मेडोरा विल्सन की हरकत पर नहीं; पुलिस पर ताज्जुब प्रकट करती है। उसे इस बात पर हैरत हो रही थी कि अगर विल्सन एयरगन लाया था तो इसमें उसका क्या अपराध था! पुलिस बिल्कुल सनकी है! यह भी अजीब स्थिति है कि लोग बिला सोचे समझे किसी को जलील करने के लिए भीड़ लगा लेते हैं महज तमाशा देखने के लिए। पुलिस विल्सन को एयरगन के साथ गिरफ्तार करती है तो लोग तालियां पीटते हैं, कल कोई और गुड़िया लिए हुए गिरफ्तार किया जायगा तो भी तमाशाई ताली पीटेंगे।

मैडेलीन मेडोरा की इस आलोचना को कुतूहल से देखती है। उसने मेडोरा से पूछा : "तुम्हें पता है विल्सन महोदय ने एयरगन किसलिए प्राप्त की ?"

"क्यों नहीं। मेरे ही सामने की बात है। जब हम लोग पिकनिक गये थे तो वहां पर ढेर-सी मुर्गाबियां थीं। मिस्टर विल्सन ने ईंटों से उनका शिकार करने की कोशिश की पर वे उड़ गयीं। तभी हम लोगों ने निश्चय किया कि अगली बार एयरगन लेकर शिकार खेलने आयेंगे।"

"तुम दोनों ने निश्चय किया था या मिस्टर विल्सन ने !"

"मेरा मतलब, मिस्टर विल्सन ने ही ऐसा ख्याल जाहिर किया था।"

"क्या तुम्हें ठीक पता है कि उन्होंने मुर्गाबियों के शिकार के लिए ही एयरगन खरीदने का निश्चय किया था ?"

"मान लीजिए, उन्होंने खेलने के लिए खरीदी; पर इसके लिए पुलिस का क्या काम !"

"नहीं; मैं तो मानती हूं कि मिस्टर विल्सन ने उन मुर्गाबियों के लिए खरीदी थी; लेकिन तथ्य तो कुछ और ही बताते हैं।"

"तथ्य !"—मेडोरा बचकाने ढंग से बुजुर्गियत जाहिर करते हुए झल्लायी : "यह बिल्कुल ऊटपटांग बात है कि एक निहायत मासूम सी बात पर तथ्य और सत्य की नाप-जोख की जाय और बिला वजह कुछ नहीं को तूफान बना दिया जाय।"

"यह तुम उन्हीं से क्यों नहीं पूछती कि क्यों इतनी जरा सी एयरगन

से सारे शहर के लिए एक सनसनी पैदा कर दी जाय !"—मैडेलीन ने अपनी छेड़वाजी को थोड़ा दबाते हुए कहा।

"एयरगन से सनसनी ! हुंह !"—मेडोरा ने कहा : "मैं कहती हूं हूं कि मुझे पता है। मुझे हर बात पता है, कैसे गन की बात चली, कैसे खरीदने और दुबारा वहीं पिकनिक पर आने का निश्चय हुआ और कैसे मिस्टर विल्सन ने मजाक किया—मुझे हर बात विस्तार से याद है..."

"क्या मजाक किया था ?" मैडेलीन ने उत्साह को बीच में ही टोक कर पूछा।

"मजाक !"—मेडोरा अचानक हकला गयी। एक पल में शायद उसने इधर-उधर भी देखा, बोली : "मजाक ! यानी..."

मैडेलीन मनोविज्ञान खूब समझती है। मेडोरा की इस हल्की सी हिचक को लेकर ही वह छेड़ बैठी : "अरे ! मजाक तो हमेशा बिल्कुल बेगुनाह होते हैं, उसमें इतना हिचकने की क्या बात ?"

"ओह ! आप बात बिल्कुल दूसरी तरफ ले गयीं, ऐसा कुछ नहीं था उस मजाक में !"

"मुझे भी पता है मेरी छोटी सी बच्ची ! सिर्फ इतना ही मजाक न, कि मिस्टर विल्सन ने तुम्हें भी मुर्गाबी समझ कर एयरगन से निशाना लेने को कहा होगा !"

मेडोरा सिहर गयी ! लेकिन यह सचमुच गुनाह है। साफ गुनाह है। फिर भी यह कितना अपरिहार्य है, कितना विचित्र कि अनायास ही मेडोरा ने भी ठीक वही कल्पना की थी; जिसने विल्सन के मन में उभरकर उसे अपने प्रति ही अपराधी बना दिया था। मेडोरा ने भी ठीक उसी क्षण सोचा था—शायद सोचा भी नहीं था, सिर्फ महसूस भर किया था। या महसूस भी नहीं किया था महज वह सिहर भर गयी थी कि अगली बार जब पिकनिक पर विल्सन एयरगन लाये तो कहीं मजाक ही मजाक खुद मेडोरा के ऊपर ही छर्रा न चला बैठे। मेडोरा को शायद अपनी नरम गर्दन पर पीछे देर तक किसी काल्पनिक छर्रे का स्पर्श महसूस होता रहा था। मुमकिन है, मेडोरा और विल्सन में से किसी ने भी इस अवांछित घटना की कोई स्पष्ट तस्वीर न देखी हो और दोनों के मन से परे ही कोई शरारती हस्ती आकर

विल्सन और मेडोरा दोनों के मन में एक ही स्पर्श के दो सिरे यों छुला गयी हो जैसे सोते हुए किशोर के गाल पर कोई शोख लड़की आहिस्ता से बाल की एक नोक फिराए और सोते ही सोते किशोर अपने गाल पर चपत मारे। सोते ही सोते—सचमुच, ठीक एक ही बात के दो सिरे मेडोरा और विल्सन को उनके अव्यक्त स्थान पर छू गये और बिना नींद तोड़े -- एक दूसरे पर बगैर कुछ जाहिर किए। उन्होंने अपने गालों पर अपराध की कल्पित मक्खियों के लिए चांटे मार लिए थे। इसलिए जब अनायास मैंडेलीन के मुंह से सोते में मारी गयी चपत का रहस्य साफ होकर सामने आया तो मेडोरा सिहर गयी। उसने बड़ी तेजी से प्रतिवाद किया : "नहीं नहीं ! ऐसा कुछ नहीं। ऐसा कोई मजाक नहीं किया था। दरअसल जो था, वह मजाक था ही नहीं।

मैंडेलीन हंस पड़ी : "च् च् ! क्या अजीब संयोग है !"

मेडोरा ने फिर प्रतिवाद की मुद्रा बनायी। मैंडेलीन मेडोरा की इस असहाय मनस्थिति को पहचान गयी। दरअस्ल वह सोचने लगी कि विल्सन मेडोरा से एक हल्का मजाक नहीं कर सकता और छुपकर लड़कियों पर एयरगन का निशाना लगाता है, यह कितनी दयनीय बात है ! मेडोरा ने समझा कि मैंडेलीन ने व्यंग किया है यह जाहिर करते हुए कि मेडोरा ने सही बात छुपा ली !"

"आपको यकीन नहीं होता !"—मेडोरा ने शिकायत भरी आवाज में मैंडेलीन से कहा।

मैंडेलीन सोफे से उठकर धीरे से खड़ी हो गयी, बोली : "यकीन ? प्यारी बच्ची, जहां सचाई नहीं होती वहां सिर्फ यकीन करके ही काम चलाया जाता है।"

मेडोरा बात का इशारा सही-सही न समझ कर अभी भी उसे यही समझ रही थी कि मैंडेलीन विल्सन के किसी अनुमानित मजाक पर व्यंग कर रही है। इसीलिए वह बोली : "सचाई हो या न हो; पर विल्सन ने कुछ नहीं किया !"

"यही तो दुर्घटना है, अनहोनी है बेबी कि आज विल्सन कुछ नहीं कर सकता। बेबी तुम्हें पता है फिलामीला की कहानी—मैंने उस दिन इशारा

भी किया था उसकी तरफ—"

"आण्टी, आप बिल्कुल बेजरूरत बात पर मुझे सता रही हैं !"

"नहीं बेबी, मैं सता नहीं रही। कोई सता नहीं सकता। यह सिर्फ समय है जो सताता है। बादशाह अपनी पत्नि नाईटिंगेल की बहन फिलामीला को लाने गया और रास्ते में उसके साथ बलात्कार करके उसकी जुबान काट ली ! उसने कोई एयरगन नहीं खरीदी थी और किसी कम-उम्र लड़की को उसका निष्प्रयोजन निशाना नहीं बनाया था। इन्सान बहुत अच्छा हो गया है। अब वह किसी कुमारी लड़की के साथ बलात्कार नहीं करता, सिर्फ छुपकर एयरगन से निशाना लेता है। कितना बेगुनाह ! कितना कोमल हृदय ! कितना···"

"लेकिन-लेकिन—" मेडोरा एक-ब-यक चिड़चिड़ा उठी ! यह तो हद है ! मैडेलीन आखिर उससे इस किस्म की बात करने का कैसे साहस कर रही है ! इतनी असंभव ! इतनी अश्लील ! मेडोरा सहसा उठकर पंजे पटकती हुई कमरे से निकल गयी।

मैडेलीन ने उसके व्यवहार पर ताज्जुब नहीं किया। हर किशोर हृदय ठीक इसी तरह सोचता है, यह उसे पता है। इसीलिए फिलामीला के इस दुर्भाग्य को मन से हटाकर उसने टेबल पर रखा नन्हें से स्वेटर का बार्डर उठा लिया। सहसा उसे कुछ महसूस हुआ, शायद एक आहट, शायद··· मैडेलीन के गर्भ के पारफीरो में अब जान पड़ गयी है। वह हरकत करता है। मैडेलीन के बाईं तरफ अपने पेट पर साफ महसूस होता है कि उसका पारफीरो जैसे कुछ टटोल रहा है। वह कल्पना करती है अब तो शायद—शायद क्यों जरूर ही उसकी नन्हीं नन्हीं हथेलियां भी बन गयी होंगी। नन्हीं-नन्हीं मुलायम हथेलियों की हरकत—वह झुककर अपने गर्भ को चूम लेने के लिए बेताब हो उठती है। हाथ की सलाइयों पर चढ़ा नन्हें ऊन का बार्डर रख कर वह उलट कर रखी बुनाई वाली किताब उठा लेती है, जिसमें उसी नमूने को पहने हुए एक खूबसूरत गुदगुदा बच्चा एक लम्बे चेहरे वाली औरत के कंधे को दोनों पंजों से भर-भर कर नोच रहा है। वह एकटक उसे देखती रहती है, सिर्फ देखती है, सोचती कुछ नहीं। फिर अकस्मात् मुस्कुरा कर स्वेटर के नमूने को पढ़ने लगती है—फि.पथ रो : के

फाइव, के टू टांग, फुल फारवर्ड के वन···

मैंडेलीन खो जाती है। किताब बन्द कर आंखें मूंद लेती है और देर तक खड़ी रहती है, काफी देर तक, फिर उसे लगता है कि ज्यादा देर तक वह खड़ी नहीं रह सकती, रानों में खिचाव महसूस होने लगता है। यों भी आराम करना ज्यादा अच्छा है शायद। वह बैठ जाती है। कितनी ही देर आंखें बंद किए बैठी रहती है ठीक जैसे ईव की रात मैंडेलीन अपने प्रिय पारफीरो की कल्पना करती हुई लेटी थी और फिर उसे लगता है जैसे कोई आहट हो रही है, कोई पदचाप सुन पड़ी है इसी तन्द्रा में। बहुत धीरे-धीरे सिर घुमाकर वह आंख खोलती है– नहीं पारफीरो फिर भी नहीं ही है। यह एल्स्टन है।

मैंडेलीन चौंक जाती है। उसे लगता है जैसे उसकी किसी बहुत प्यारी सिम्फनी के बीच प्यानों के रोडों पर अचानक कोई कटा हुआ हाथ आ गिरा हो और सिम्फनी स्वर भंग करके चीख पड़ी हो। कटा हुआ हाथ लगता है एल्स्टन—शायद पारफीरो का। मैंडेलीन ने कभी सोचा था और शायद वह सही था कि इस युग में पारफीरो कहीं नहीं। समय ने पारफीरो के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं और पारफीरो के बजाय मैंडेलीन का महबूब कभी सिर्फ पारफीरो का बाजू मात्र होता है, कभी उसकी आंखें, कभी उसका पुट्ठा कभी···फारफीरो के बजाय फारफीरो का कटा हुआ हाथ सिम्फनी पर गिरता देखकर मैंडेलीन भय से चौंक जाती है। चौंक कर वह खीजती है; क्योंकि वह जानती है कि ऐसी कल्पनाएं प्रायः उसके गर्भस्थ शिशु पारफीरो के लिए खतरनाक हो सकती है।

"ओ तुम ?"—उसने एल्स्टन से पूछा।

"क्या मतलब ?"

"मतलब, तुम तो कह रहे थे कि तुम फर्म के हेड आफिस जाने वाले हो !"

हां, मैं वही कहने आया था कि आज रात ही चला जाऊंगा।"—एल्स्टन ने जवाब दिया।

"अच्छा प्रिय, खत देना, बाई-बाई !"

एल्स्टन ठिठका खड़ा रहा और फिर एकदम घूम कर जाने लगा।

मैंडेलीन पीछे से हंसी : "सुनो मुझे खेद है। इधर आओ !"

एल्स्टन ने वहीं ठहर कर पूछा : "क्या है ?"

मैंडेलीन मुस्कुराती हुई उठी और बढ़कर उसने एल्स्टन के दोनों कंधे पकड़ लिए। पता नहीं, एल्स्टन को सिहरन हुई या उसने कन्धे छुड़ाने चाहे कि उसके कंधों ने हल्की सी जुम्बिश खायी।

"इधर देखो !" मैंडेलीन ने आहिस्ता से कहा।

एल्स्टन ने गर्दन घुमायी।

"एक दयनीय अभिनेता जो अपनी भूमिका के समय खूब-खूब कमाल दिखाता है और फिर उसकी बात भी नहीं सुन पड़ती !" मैंडेलीन ने शेक्स-पीयर की प्रसिद्ध कहावत बड़े अन्दाज से दुहरायी, फिर बोली : "प्यारे राबर्ट, इतने व्यस्त-जीवन के थोड़े से फुरसत के क्षण यों नाहक खराब नहीं किये जाते। उधर चलो, सोफे पर बैठो। मैं तुम्हें अच्छी सी काफी पिलाने का इन्तजाम कर रही थी।"

एल्स्टन खामोश, सोफे पर आकर बैठ गया। बैठने के बाद मैंडेलीन ने गम्भीर होकर पूछा : "तुम सचमुच जा रहे हो ?"

"झूठ ही जाने की कोई तुक नहीं।"

"सचमुच जा रहे हो ?"

"सचमुच !"

"सचमुच जा रहे हो ?"

"हां।"

"पर क्यों ?"

"वहां अच्छा भविष्य है।"

"पर भविष्य तुम्हारे लिए क्या·· अच्छा जाने दो। मैं स्थिति को और ज्यादा अप्रिय नहीं बनाना चाहती।"—मैंडेलीन ने उठकर गरम पानी काफी डिस्टिलर में डाला और प्याली में चीनी निकालने लगी। एल्स्टन मैंडेलीन के बढ़े हुये पेट को खोया-सा, लेकिन एकटक देखने लगा। मैंडेलीन ने ध्यान देकर भी कुछ कहा नहीं। वह शायद तेजी से कुछ सोच रही थी। आखिर क्यों यह असाधारण तिक्तता उभरकर वातावरण को उदास कर जाती है माहौल इस तरह पटरियों से उतरी हुई रेल की तरह क्यों निरुपाय

हो जाता है ? क्या उसकी भी कहीं गलती हो सकती है ? क्या माहौल को एक सिरे से उधेड़ कर दुबारा सही तौर से बुना नहीं जा सकता ? पर लगता है, कि वह सिरा भी जैसे खो गया है कहीं, जिसे लेकर गलत माहौल उधेड़ा जा सके। मैडेलीन अपनी कल्पना के पारफीरो के लिए जो माहौल बुनना शुरू करती है उसकी शुरुआत के ही कुछ फन्दे शायद गलत हो जाते हैं और फिर माहौल गलत बुनता चला जाता है। पर आखिर कब तक ? या तो यह गलत माहौल उसे एकदम छोड़ ही देना पड़ेगा या फिर उसे उधेड़ना होगा—उसे उधेड़ना होगा !

"रावर्ट ! एक बात पूछूं ? पूछना क्या कहना ही है। तुम जा रहे हो; पर इतना अप्रिय और उदास वातावरण छोड़कर, इतनी उकताई मनःस्थिति लेकर जाने से क्या फायदा ?"

"फिर !"

"फिर—फिर यही तो समस्या है।"—मैडेलीन काफी की तैयारी करती रही और बोलती गयी : "लेकिन—अच्छा रावर्ट, यों क्यों न हम दानों मिलकर इस वातावरण की दीवार को तोड़ दें !"

"यानी !"

"पिरेमस और थिस्वी की कहानी तुमने पढ़ी होगी, परिस्थितियों के भय से दोनों ने अपने घरों को एक-दूसरे से अलग करने वाली बीच की दीवार में एक छेद कर रखा था, जिससे वे आपस में बात करते थे। आओ हम दोनों भी आपस की कटुता की दीवार में एक छेद कर लें !"

एल्स्टन चुपचाप बैठा रहा। मैडेलीन थोड़ा रुक कर फिर कहने लगी : "अच्छा, हम दोनों न सही; आओ मुझे ही अकेले इस माहौल को तोड़ने दो।

"कैसे ?"

"हां, यह जरूर समस्या है। पर इसका भी हल हो सकता है। यह निश्चित है कि किसी गलती के लिये प्रायश्चित करने से गलती धुलती है। मैं प्रायश्चित करूंगी एल्स्टन ? क्या तुम मेरी मदद करोगे ?"

"पर मैं जा रहा हूं।"

"मुझे पता है, पर इसी तरह तुम मदद कर सकते हो तुम। जाओ

और जाते-जाते मुझे एक गहरा दर्द दे जाओ। पर राबर्ट वह दर्द तल्खी में नहीं होता। किसी चीज को तोड़ कर दर्द नहीं होता, वह हमें विवश करके टूट जाय तभी दर्द होता है। तुम जाओ तो यों जाओ कि हमारा यह सम्बन्ध हमें विवश करके टूटे। अगर अपने मन के इस आक्रोश से तुमने खुद इसे तोड़ा तो इसमें दर्द नहीं रहेगा। जानते हो एल्स्टन, जब⋯ जब⋯" आगे मैंडेलीन रुक गयी। खामोश होकर वह काफी केतली में डालने लगी। जब टॉम गया था तो कुछ जान बूझकर मैंडेलीन ने तोड़ा था अपने और उसके बीच। मैंडेलीन ने उसकी कायरता के लिए उसे अविश्वासी मान कर उसके प्रति अपना अनुराग खुद काट कर फेंक दिया था। इसीलिए मैंडेलीन फिर तिक्त हुई थी, पर दर्द उसमें नहीं था इसीलिए मैंडेलीन में ठहराव भी नहीं था। फिर उसकी कल्पना के कितने पारफीरो आये, पर वे दर्द को सोच कर तो नहीं ही गये बल्कि उस दर्द की जड़ों को कहीं न कहीं चोट ही पहुंचाकर गये जो कभी मैंडेलीन को शायद आत्म-विश्वास और शायद आस्था और शायद कोई ठहराव भी देता। लेकिन मैंडेलीन को शब्द नहीं मिले। उसने प्यालों में काफी डाल दी। एल्स्टन ने खुद सोफे पर आगे खिसक कर प्यालों में चीनी मिलायी और दूध डाला। मैंडेलीन ने देखा, शायद एल्स्टन के हठ की एक परत उघड़ गयी थी।

"एली, इधर देखो!"

एल्स्टन ने आंखें ऊपर उठायीं। मैंडेलीन ने अपनी उंगलियों से धीरे से उसकी पलकें बन्द करते हुए कहा: "मेरी तरफ मत देखो राबर्ट। मुझे पता है कि इतने दिनों में हमने सहज होकर बहुत कम बातें की हैं; पर शायद इसी तरह एक दूसरे की तरफ आंखें उठा कर शायद बहुत कुछ कहा-सुना है। आओ आज हम तुम कहें कुछ नहीं; सिर्फ देखें। तुम जिस तरह देख रहे थे उस तरह आंखें कुछ कहती हैं। आंखों से भी कुछ कहो नहीं, देखो!" मैंडेलीन ने उसकी पलकें फिर खोल दीं।

"एली, शायद आंखें खामोश नहीं रह सकतीं यह मजबूरी है। लो काफी लो!"

एल्स्टन ने कप उठा लिया। दो-तीन बार चुस्कियां लेने के बाद नीचे देखता हुआ धीरे से बोला: "मामा भी जायगी!"

"हां, ठीक बात! ज़ुबान सिर्फ इसी तरह की सूचनाओं का उच्चारण कर सकती है। प्यार सिर्फ आंखें करती हैं। ज़ुबान समझी जाने वाली बातें कहती है, प्यार महसूस की जाने वाली चीज है, स्पर्श की चीज है। सिर्फ एक हल्का-हल्का स्पर्श है प्यार। जानते हो एली..."

काफी देर के बाद अब शायद एल्स्टन ने अपने को स्थिर महसूस किया, बोला : "यह समय इस कविता के लिए जरूरत से ज्यादा गद्यात्मक हो गया है।"

"गलत बात !"—मैडेलीन ने कहा : "यह समय गद्य के लिए जरूरत से ज्यादा गद्यात्मक है और कविता के लिए जरूरत से ज्यादा काव्यात्मक ! हम लोग अतिवादी हो गये हैं। इसीलिए तो जितने सहज ढंग से लोग पहले प्यार कर लेते थे उतने साधारण ढंग के प्यार से किसी को सन्तोष नहीं देता। कुछ न कुछ असाधारण होना चाहिए !"

"प्यार प्यार ! लीनी मैं बहुत बार कह चुका हूं कि मैं प्यार को कुछ नहीं मानता।"

"मैं भी बहुत बार कह चुकी हूं फिर उदास किसलिए रहते हो ?"

"मुमकिन है कि किसी चीज के अभाव पर।"

"किसके अभाव पर ?"

"बहुत सी चीजें हैं !"

"नहीं, सिर्फ एक चीज है, सिर्फ एक, वह है अपनी कीमत की पहचान का अभाव। उसी के लिए चाहा जाता है कि जब तुम कहीं जाने लगो तो तुम्हें कोई विदा दे और विदा में भी तुम सोच सकते हो कि विदा देने वाले की आंखों में तुम्हारे बिछुड़ने का कितना दुख है। एली तुम्हें आज विदा देनी है। आओ एली, इधर आओ, एक लम्बे अरसे के बाद एक दूसरे को देख पाने की हसरत लेकर मुझे एक चुम्बन लेने दो एली—"

एल्स्टन अचानक सोफे पर पीछे खिसक गया। मैडेलीन आगे बढ़ी। वह उठकर खड़ा हो गया। मैडेलीन भी उठी, एल्स्टन घूम पड़ा दरवाजे की तरफ।

"एली—यह तुम्हें क्या हुआ?"

पर एल्स्टन ने जोर से सांस खींची और नीचे का अपना होंठ दांतों में भींच लिया। मैडेलीन ने उसके दोनों कन्धों पर बल देकर उसे अपनी ओर घुमाया। वह चौंक पड़ी। एल्स्टन की बड़ी-बड़ी पूरी खुली आंखों में बिना टपकी आंसुओं की घनी कतार झलझला रही थी। मैडेलीन ने उसे हिलाकर पूछा : "यह क्या राबर्ट ? राबर्ट !"

एल्स्टन होंठ भींचे चुपचाप खड़ा रहा।

"यह क्यों, एली ! मैंने तो तुम्हें ऐसा कोई सदमा नहीं पहुंचाया एली, मेरे प्यार ! यह नहीं एली-एली—"

एल्स्टन ने होंठ छोड़ दिया। होंठ छूटते ही पलकों से टूटकर एक साथ

आंसू की बूंदें टपक पड़ीं।

"मैं बहुत कमजोर हूं एली !"—मैंडेलीन ने बहुत मन्द स्वर में कहा और उसकी बांह को अपने धड़कते हुए सीने से सटाते हुए बुदबुदायी: "ऐसे मुझे बहुत तकलीफ होगी राबर्ट ! इस तरह मत जाओ एली—"

"लेकिन मैं दरअसल जाना नहीं चाहता हूं !"

"क्या ! ईश्वर के लिए फिर कहो ! फिर कहो।"

एल्स्टन ने आगे कुछ नहीं कहा। मैंडेलीन से छुड़ाकर वह तेजी से बाहर निकल गया। मैंडेलीन सहसा अस्थिर हो गयी, लगा जैसे एल्स्टन अपनी इस अन्तिम बात से उसे मथ गया हो। वह थक कर बैठ गयी।

एल्स्टन रोता है। मेडोरा खांसती है। नार्थ ब्लू वेल की लतर ठीक करने का बहाना किये मुंह छुपाते हैं और मामा अपनी नाक पर उगे मस्से खुजा-खुजा कर सारे घर में भागती फिरती है। मामा का कहना है कि एल्स्टन को नयी जगह रहने-सहने में असुविधा होगी, इसलिए मामा का भी साथ जाना जरूरी है। एल्स्टन को उसने आधा घंटा भाषण देकर यह समझाया है कि कैसे वह नई जगह की मालकिन से पेश आये कि वह खुश होकर उसके साथ मेडोरा को भी अपने यहां बुला ले। एल्स्टन के लिए उसने सारी तैयारियां कर ली हैं। बिस्तर भी करीब-करीब बंध चुका है इसीलिए नार्थ थोड़ा शांति पा सके हैं, वरना हर दूसरे मिनट मामा सुबह से किसी न किसी चीज के छूट जाने के बारे में चिंघाड़ रही हैं।

एल्स्टन मजबूर है, पर वह खुद नहीं जानता कि उसकी मजबूरी क्या है ? महज मैंडेलीन को चौंकाने के लिए ही उसने हैड आफिस चले जाने की बात उठायी थी। उसने भी सोचा था कि पूरी तैयारी की धूमधाम कर लेने के बावजूद वह अन्तिम समय कह देगा कि बास ने उसे यहीं रहने को कहा है। पर मामा ने उसकी तैयारी में इतना उत्साह दिखाया कि उसे रोक लेने वाली मनस्थिति स्वयं कमजोर पड़ गयी। एल्स्टन को शायद यह आशा थी कि मैंडेलीन बलात् रोकेगी पर वह न हुआ। अन्ततः उसे खुद कहना पड़ा कि वह जाना नहीं चाहता था। यह महज एक खीज की अभिव्यक्ति थी कि वह जाने कि बात कह गया। मैंडेलीन ने उसे बुलाया पर वह सामने जाने का साहस न कर सका और बहाने में अनायास ही कह गया कि सफर कि तैयारी कर लेने के बाद ही मिल पायेगा। इसके बाद मैंडेलीन खुद मिलने आयी। पर वह किसी काम से तुरत बाहर चला गया। इसके बाद उसने जितना चाहा कि वह अपने को जाने के ख्याल से

मोड़ ले उतना ही जाने की वात पर निश्चित होता गया। जैसे कोई बहुत ऊंची जगह पर खड़ा होकर घाटी में झांके और जितना ही सोचे कि कहीं वह डगमगा न जाय उतना ही डगमगाता जाय। अन्त में अपने आपंको जव वह न जाने के लिए पूरी तरह विवश कर पाया उस समय बहुत देर हो चुकी थी और महज मेडोरा, मैंडेलीन और नार्थ के हाथों में रूमाल हिलते दीख रहे थे। नार्थ इस समय शायद सबसे ज्यादा भावुक हो रहे थे। अनायास संयोजित एल्स्टन के जीवन की यह घटना खुद-ब-खुद इतनी सघन सचाई बन गयी कि एल्स्टन बिल्कुल मजबूर हो गया। अंन्तिम बार उसके निश्चय ने उमड़ कर फिर चाहा कि वह चेन खींच कर किसी तरह गाड़ी रोक दे और रहस्य खोल कर गलत खिंची जा रही रेखा अभी भी मिटा डाले पर इस यथार्थ को यक-ब-यक तोड़ देने की हिम्मत अब उसमें न थी। मानसिक अस्थिरता ने सांसारिक वास्तविकता के बहाव में अपने को वेसाख्ता समर्पित कर दिया। एल्स्टन खुद हैरत में आ गया यह देखकर कि उसके द्वन्द्व ने न जाने किस संधि से धीरे-धीरे बाहर बह कर उसके मन को खाली कर दिया है और किसी बड़े प्रवाह के साथ चुपचाप बह चला है और अब सिर्फ बड़ा प्रवाह ही है, उसके द्वन्द्व का एक चुल्लू पानी कहीं नहीं, उसका निशान भी नहीं। जैसे किसी मरीज को जुलाब दे दिया जाय और उसका पेट साफ होकर इतना हल्का हो जाय कि मीठा-मीठा दर्द हो जाय, ठीक उसी तरह एल्स्टन को लगा कि उसका मन अब सिर्फ रिक्त है और रीते मन में एक दर्द भर है, बस !

मेडोरा का रीतापन बिल्कुल दूसरी तरह का है। उसे लगता है जैसे उसे बैठने की जरूरत है, बैठ कर कुछ समझने की जरूरत है, समझकर एक बार अपने चारों तरफ देखने की जरूरत है।

यह जरूरत नार्थ भी महसूस कर रहे थे। पर बैठने के बजाय उन्हें बाहर निकलना ज्यादा सही लगा। रुमाल की फिराक में डेविड की टी स्टाल पर पहुंचे। टी स्टाल में आज यह चर्चा बड़े जोरों पर थी कि विल्सन को मानसिक चिकित्सालय भेज दिया गया है पर उसका सुधार कहां तक सम्भव हो सकेगा। गार्ड हप्पू बाबू हमेशा की तरह झंडी हिला-कर ही चुप हो गये कि ऐसे एक विल्सन नहीं एक हजार और एक लाख विल्सन हिन्दुस्तान में पड़े हैं, किनका इलाज कहां तक कोई करेगा ! पर जान मिल्टन पर मुक्कों में बहस करने वाले मास्टर इस समय ज्यादा गहराई तक मंथन करने पर आमादा थे और मानव मनोविज्ञान की दो-

चार घिसी पिटी बातें बोल कर मुक्के पर मुक्का जमाये जा रहे थे।

उनसे मुक्के में मात खाने वाला बूढ़ा किसी नये आ पड़े ग्राहक से इस समय अन्तर्राष्ट्रीय तनाव पर इस अंदाज से बात कर रहे थे गोया वे इस समय बड़े मसलों पर सम्मति देने में रिटायर्ड चर्चिल से किसी तरह कम दबीज साबित नहीं होंगे। टेनीसन के बारे में मुक्कों से मात खाकर शायद वे बहस करने से बाज आ चुके थे। नया बूढ़ा शायद किसी जमाने में सरकारी शिक्षा विभाग में काम करता रहा था इसलिए वह लार्ड मेकाले की नीति का जिक्र बातों के बीच में दाखिल करके इंगलैण्ड के बच्चों वाले हैरी स्कूल की चर्चा कर रहा है; जिससे निकला हर विद्यार्थी कहीं न कहीं महान् प्रतिभा हुआ है।

यह उम्र का तकाजा है कि हर रिटायर्ड बूढ़ा हाथ-पैर कम चला सकता है, इसीलिए जुबान खूब चलाता है। दांत न होने की वजह से जुबान कटने का भी डर नहीं; इसीलिए बूढ़ा आदमी दुनिया की हर समस्या पर साधिकार बात कर सकता है।

सिर्फ मेडोरा है जो अपने बारे में भी साधिकार न कुछ कह सकती है और न सोच सकती है। दफ्तर की नकली बाल और नकली नाखूनों वाली रेकर्ड-कीपर लडकी रोज मजाक करती है कि मेडोरा उससे एक प्रेमी उधार ले ले। मेडोरा अब अभ्यस्त हो चुकी है। नयी थी तब तक वह तुनुक-मिजाज भी थी और बात-चीत में दब्बू। अब कभी मुस्कुराती भी है। एक बार तो उसने रेकर्ड-कीपर को यह कह कर जवाब भी देने की कोशिश की थी कि वह रिकर्ड-कीपर को ही प्यार करती है, लिहाजा किसी दूसरे प्रेमी की जरूरत नहीं महसूस करती। पर उस बात पर तो अचानक इतना ऊधम मचा था कि दुबारा उसने सिर्फ मुस्कुरा कर कतराते रहने में ही खैरियत समझी क्योंकि यह बात सुन कर रेकर्ड-कीपर, आपरेटर आदि सभी सहसा मेडोरा पर टूट पड़ीं और रेकर्ड-कीपर ने तो उसे इतनी जोर से खींच कर दनादन चूमना शुरू कर दिया कि अगर उसके नकली बाल अचानक ढीले होकर कौए की पुरानी दुम के पंखों की तरह नीचे न लटक जाते तो शायद मेडोरा का दम घुट जाता। बाल खिसक पड़ने से रोमांस का सारा मजा किरकिरा हो गया। झेंप कर रिकर्ड-कीपर जब अलग हुई तो मेडोरा ने देखा कि ऊधमबाजी में बेचारी टेलिप्रिण्टर वाली लड़की की एक छाती का पैड फ्राक के नीचे ही नीचे सरक कर जो तिरछा हुआ तो पसली पर उभर आया है। गनीमत यही हुई कि साहब का कोई गंभीर पैगाम आ पहुंचा।

पर इतनी नकली चीज़ें ? मेडोरा हैरत में रह जाती है कि कैसे इस सब के बावजूद वे हंस सकती हैं और मेडोरा हर सचाई की हकदार होने के बावजूद भी क्या इतना निरीह है ! निरीहता का एहसास उसे जब होता तो लगता है जैसे वह बहुत कमजोर खिलौना है और चारों तरफ से बहुत घनी हवा उसकी पसलियों पर दब रही है। शायद इसीलिए—बहुत मुमकिन है कि शायद इसी अनुभूति के कारण उसकी पसलियों में दर्द होता है और उसे खांसी होती है। पर उसकी खांसी किसी के बस की नहीं, एल्स्टन के बस की भी नहीं और एयरगन के बस की भी नहीं; क्योंकि एयरगन जिन हाथों में होती है उनकी निगाह गलत होती है और वह गलत निगाह किन्हीं गलत मुर्गाबियों पर छर्रे दागती रहती है और वह मुर्गाबी; जो किसी छर्रे से जख्मी हो चुकी है और जिसकी बांह पर उभरा एयरगन का निशान राहत दे सकता है, वह मुर्गाबी महज इन्तजार करती हैं, बेचैन होकर सिर्फ इन्तजार करती है। मेडोरा जब विल्सन के पागलखाने जाने की बात सुनती है तो उसे सुकून होता है कि ठीक हुआ। गलत मुर्गाबियों के शिकार में अपने को बरबाद करने वाले का यही नतीजा ठीक है।

नतीजा ठीक है लेकिन—मेडोरा क्या करे ? अकेले में वह प्यानो पर बैठती है। जरा देर रीडों पर पंजे गडाने के बाद वह प्यानो छोड़ देती है। एल्स्टन और मामा भी नहीं हैं इसलिए मकान में मेडोरा पहले से ज्यादा तनहा हो गई है। लगता है जैसे यह एकान्त नहीं बल्कि कोई नशा है या फिर कोई धन्धा है जिसमें वह जैसे उड़ी जारही है। वह घुटने दाब कर देर तक पंलग पर बैठी रहती है। इस तनहायी में वह कुछ अजीब सी हो गयी है। सोते वक्त उसे लगता कि वह ढीले कपड़े नहीं पहन सकती, कोई सनसनी सी उठती; नहाते वक्त कपड़े नहीं उतार सकती, एक दम एक हरारत-सी चढ जाती है उसे; आफिस जाते वक्त कपड़े नहीं बदल सकती, लगता है जैसे उसका शरीर कपड़े बदलते-बदलते अकड़ जायेगा, इस कदर टूटन होती है। इस टूटन से फुरसत देती है सिर्फ एक तेज खांसी जब उसका तार-तार हिल जाता है, जब वह जख्म पोंछती हुई रुई की तरह चिपकती उड़ती है जिस पर—

मामा की चिट्ठियों का मजमून एक ही होता है—पापा से नयी झाड़ू मंगवा लेना। घर खूब साफ रखना। सलीका सीखो। छोटी बच्ची नहीं हो। एल्स्टन खत नहीं लिखता।

विल्सन पागल खाने में हैं, मैडेलीन आजकल न जाने क्यों अस्पतालों

का चक्कर सबसे ज्यादा लगती है, फिर मामा के अलावा मेडोरा को चिट्ठी लिखे भी तो कौन ? मामा झाड़ू मंगाने की हिदायत देती हुई चिट्ठियां लिखती है पर झाड़ू का तजकिरा मुहब्बत की गुदगुदी तो नहीं ही पैदा कर सकता। और एक दिन उसे याद आता है कि वह आण्टी रोजी को तो भूल ही गयी। आण्टी रोजी से क्या बात करके मन को भुलाया जा सकता है ?

लेकिन आंटी रोजी बीमार है। अन्दर ही अन्दर उसे नहीं पता सहसा यह कब हो गया, पर वह बीमार हो गयी। उसकी अल्मीरा की सभी दवाएं नाकाम हो गयीं। उसे ताज्जुब होता है कि यह कौन सा रोग है जो यक-ब-यक बिना किसी भूमिका के इस तरह उभर आया। रोजी इस समय तो ठीक से चल भी नहीं सकती, चलती है तो पैर काफी फैला कर; यों जैसे कोई बीमार चल रहा हो। कभी-कभी बाथरूम में उसे इतनी तीखी तराश महसूस होती है कि वह होंठ काट कर चीख पड़ती है। एक डॉक्टर ने उससे ढेर से इञ्जेक्शनों का पैसा लेकर सिर्फ डिस्टिल्ड-वाटर देकर केस को बेकाबू कर दिया। रोजी बिस्तर पर लेटे-लेटे मरियम से माफी मांगती है और दरवाजे की तरफ देखती है। अरसे से वह रेस्त्रां नहीं गयी। अब तो वह इस स्थिति में है कि खुद अगर कोई उसके पास चलकर आये तो भी शायद वह निराश लौटा देगी। लेकिन लौटाने की भी एक हद हो जायेगी। किसी को लौटाने के बाद उसके दिन और निराश होते जायेंगे और फिर हो सकता है एक दिन वही आ जाय—वह—मलिकुल्मौत ! क्या उसे भी वह वापस कर सकेगी ? लेकिन हर गाहक तो उसके इस रोग से दूर भागता है तब क्या मलिकुल्मौत······।

मिस्टर नार्थ हैरत से रोजी का मुंह देखते रह जाते हैं। एक बार उन्हें लगता है कि वे रोजी की जुबान खींच लें; पर हमेशा तो वे खुद अपनी जुबान दांतों से काटते रहे हैं। लेकिन रोजी की इतनी हिम्मत आखिर कैसे हुई ? मेडोरा उनकी लड़की है। वे उसके पिता हैं, रोजी इतना समझते हुए भी यह बात कैसे कह सकी ?

"पर इसमें मुश्किल क्या है ?"—रोजी पूछती है।

"तुम्हारा साहस कैसे हुआ, यह बात कहने का !"

"साहस !"—रोजी पपड़ी पड़े होठों को बलात फैलाकर मुस्कुराती है : "आपका ही साहस इस तरह कैसे हुआ कि मेरे यहां अचानक इस तरह आ पहुंचे ?"

"तुम्हारा मतलब ?"

"आप मुझे चाहते रहे हैं, आज भी चाहत का सुबूत यह खूबसूरत पर्स लेकर मेरे पास आए हैं। मैंने अभी-अभी कहा कि मुझे इलाज का पैसा चाहिए। आप कहते हैं कि पैसा नहीं है आपके पास। शायद यह भी सोचते हों कि पैसा न होने पर भी मैं आपकी चाहत को सहारा दूं; क्योंकि चाहत पैसे पर तोली नहीं जाती। अभी मैंने बदले में यह राय जाहिर की कि आप मेडोरा को मुझे सौंप दीजिए; ताकि मैं कोई पैसे वाला उसके लिए प्रेमी बना कर तैयार करूं और अपनी दलाली में इलाज करालूं तो आप का पितृत्व इसे स्वीकार नहीं करता। अपनी चाहत को आप अहमियत भी देते हैं और साथ ही अपने पितृत्व की हिफाजत भी करना चाहते हैं। क्यों न मैं यही मानूं कि इस सीमा तक आपकी चाहत नहीं बढ़ी कि उसके लिए आप सब कुछ कर सकें। क्यों ?"

नार्थ ने सिर नीचे ढालते हुए कहा : "जैसा तुम समझ लो !"

"क्यों न मैं समझूं कि यह महज आप एक व्यवसाय भर करना चाहते हैं। जब व्यवसाय है तो आपके ही लिए क्यों, मेरे लिए भी क्यों नहीं ?"

"लेकिन रोजी जरा सोचो तो यह कैसा लगेगा ?"

"हुंह, कैसा लगेगा!"—रोजी ने सिर तकिए पर टिका लिया और छत की तरफ देखती हुई व्यंग से मुस्कुरायी।

देर तक कोई नहीं बोला। रेडियो सेट पर रखी गोल टाइमपीस जोर-ज़ोर से टक-टक करती रही। फिर अचानक नार्थ की तरफ चेहरा घुमाकर रोजी बोली : "अच्छा यह बताइए, आपको यह बात कैसी लगेगी अगर आपको पता चले कि मेडोरा आपकी लड़की नहीं है।"

"क्या?"—नार्थ ने चौंक कर कुर्सी के दोनों हत्थे यों पकड़ लिए जैसे कुर्सी उनके नीचे से खिसक जाने वाली हो।

"और यह भी कि एल्स्टन भी आपका बेटा नहीं!"

"लेकिन रोजी अब यह हद से ज्यादा हो गया। रोजी बहुत हुआ !" नार्थ बहुत बेकल होकर इधर-उधर देखने लगे।

"मेरे पास प्रमाण हैं, आपको शायद पता नहीं मेरे पास बिल्कुल सच्चा सुबूत है !"

"झूठ ! झूठ ! झूठ की हद है रोजी। मुझे पता है कि मैं अपने बच्चों का पिता हूं। रोजी हद हुई, मुझे जाना चाहिए अब !"—वे सचमुच तिलमिला कर उठ खड़े हुए।

"सुनिए ! "रोजी हड़बड़ा कर उठने की कोशिश करने लगी। नार्थ रुक गये। रोजी ने बहुत मुलायम आवाज में कहा : "सुनिए आप क्या मेरी

इस बात की पूरी सचाई जाने बिना ही चले जाना चाहते हैं ?"

"मेरे लिए ठहरना मुमकिन नहीं अब।"

"यह मत कहिए क्योंकि आपकी इस वक्त यह जिम्मेदारी हो गयी है कि अकारण ही मुझे झूठी मान कर न जायं। अगर थोड़ा सा आप रुकें तो मैं आपको ईसाबेला के वे खत दिखाना चाहूंगी जिसमें उसने इस सचाई का जिक्र किया है !"

"कौन सी सचाई ?"

"यही कि एल्स्टन और मेडोरा जिससे मिले, ईसाबेला का वह प्रेमी आपकी प्रतिद्वन्दिता में बहक कर ईसाबेला को ज्यादा से ज्यादा कुछ देता रहे इस बात के खुलासे के खत। ईसाबेला को आपकी कोई सचाई पता थी, फिर भी वह आपको एक सुरक्षा का साधन बनाये रही !"

"डाह ! डाह, रोजी मुझे और सुनने की जरूरत नहीं ?"—अपनी आदत के बरखिलाफ नार्थ कुछ तेजी से बोल गये और दनदनाकर दरबाजे के बाहर हो गये। अपनी धुन में वे जैसे ही चबूतरे की सीढ़ी से नीचे लपके उनका सिर किसी सामने आने वाले से टकरा गया। क्षोभ के ऊपर सहसा इस टक्कर ने उन्हें चकरा दिया। सामने आने वाले ने दोनों हाथों से नार्थ के कन्धे पकड़कर उन्हें साधा, मुस्कुराकर माफी मांगी और रोजी के दरवाजे में चला गया !

वह कौन है ? नार्थ अपनी चकराहट एकदम भूल गये। सोचा वे जाकर उसे देखें पर थोड़ा ठिठक कर न जाने क्या सोचते हुए जमीन पर थोड़ा सा थूक दिया और लौट आये।

सारा दिन वे अजीब बेचैनी से भरे रहे। सचाई शायद वे जानते थे। पर वे अपने आप से हीनता महसूस नहीं करना चाहते थे। इसीलिए जैसे उनका मन सारा दिन इस प्रयत्न में रहा कि किस तरह ज्यादा से ज्यादा वे एल्स्टन और मेडोरा के लिए अपना पितृत्व सिद्ध कर सकें। पुंसत्व की उपलब्धि नहीं; अपने पुंसत्व की ख्याति को ही लेकर वे अपनी बीवी पर हावी होते रहे हैं, शायद इसीलिए वे आज फिर किसी वास्तविकता को सिर्फ सिद्ध कर लेने के बाद सन्तुष्ट हो लेना चाहते थे।

शाम होने वाली थी। मकबरे के अहाते में रहने वाले बच्चे गली से गुजरते हुए 'गुड-ईवनिंग मिस्टर हम्टी डम्टी' कहते हुए अपनी आयाओं और नौकरों के साथ पार्क निकल गये। लेकिन नार्थ ने चाय अभी नहीं बनायी। वे आज मेडोरा का इन्तजार कर रहे थे, उसके हाथ की चाय पीने के लिए सहसा उनकी नजर नीचे गली की तरफ गयी। उन्होंने आंखें फैलाकर हैरत

से देखा, फिर हैरत ही एक चोट के रूप में बदल गयी और उन्हें लगा जैसे किसी ने उनके जिस्म की जिल्द को यक-ब-यक उधेड़ लिया हो। नीचे मेडोरा रिक्शे से उतरी और नार्थ ने देखा कि उसी रिक्शे में वह आदमी बैठा है, जो रोजी के दरवाजे पर उनसे सुबह टकरा गया था। उधड़ी चमड़ी की जलन लिए वे नीचे ही देखते रहे गो कि मेडोरा फाटक के अन्दर आकर उनकी नजर से ओझल हो चुकी थी।

सहसा वे चौंक गये कि उन्हें अपने कन्धों पर कोई स्पर्श महसूस हुआ। घूमे तो देखा मैडेलीन उनके कन्धे को पकड़े खड़ी थी। उसका चेहरा सांवला-सा हो रहा था। माथे पर शायद पसीना भी झलझला रहा था। वह नीचे वाला होंठ दांतों से दबाए थी।

बड़ी कठिनाई से उसने कहा कि उसके पेट में भयानक दर्द हो रहा है। जिसकी वह अरसे से मुन्तजिर थी शायद उसका वह पारफीरो आने वाला था। यह दर्द था जो उसके इन्तजार की सांकलें काट रहा था और कटती सांकलों की चोट से वह सांवली हो आयी थी। उसका पारफीरो आने वाला था। नार्थ किसी लेडी डाक्टर की व्यवस्था के लिए उठ खड़े हुए। ठीक उसी समय प्यानो की क्लिङ्-क्लिङ् उन्हें सुनायी दी। मेडोरा शायद बिना कपड़े बदले ही प्यानो पर बैठ गयी थी।

8

यहां से सारी कथा यक-ब-यक मैडेलीन में केन्द्रित हो जाती है और कहानी कुछ ऐसी हो जाती है जो लेखक को पसन्द नहीं। चरित्र जिन्दगी को वहन करते हैं और जिन्दगी वास्तविकताओं को आकलित करती है। इसीलिए कहानी में प्रायः चरित्र होते हैं, जिनकी जिन्दगी होती है, जिसमें वास्तविकता आकलित होती है। पर मैडेलीन की कहानी यहां से अनायास कुछ ऐसा रुख बदल लेती है कि उसमें या तो सिर्फ मैडेलीन रह जाती है या सिर्फ कहानी; और न जिन्दगी होती है और न जिन्दगी में आकलित वास्तविकताएं; क्योंकि इससे पहले की कहानी और आगे की कहानी के बीच एक हादसा ऐसा है जो मौत का बयान है। इसीलिए लगेगा जैसे पिछले कुछ और अगले कुछ के बीच एक अवांछित दरार है।

वह दरार कुछ ऐसी लगती है जैसे कोई आइना दो टुकड़े होकर भी फ्रेम में खड़ा हो और उसमें चेहरा देखने पर बीच का हिस्सा कहीं से गायब दीखे। मैडेलीन की कहानी में एक मौत की आकस्मिक दरार ने कुछ ऐसी ही असाधारणता पैदा कर दी है। इसीलिए उस कहानी को कहना अप्रिय है। अखण्डित आईने की परछाईं की तरह मैडेलीन की कहानी ऐसी ख्याति बन जाती है जिसकी वास्तविकता कुछ नहीं; जैसे किसी चेहरे का टूटे आईने में दीखता एक आंख वाला बिम्ब; जिसकी सचाई कुछ नहीं। वह ऐसा रंग है जिसे वहन करने वाला पदार्थ नहीं।

लेडी डॉक्टर ने बहुत देर की व्यस्तता के बाद मैडेलीन के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा था कि वह साहसी है और भाग्यशाली है वरना मरे हुए बच्चे को जन्म देने के साथ उसकी भी जान खतरे में थी। डॉक्टर

अपनी निगाहों में भरपूर आश्वासन भरकर मैडेलीन को उत्साह दिलाती है। मैडेलीन चिढ़ कर अपना चेहरा कम्बल से ढक लेना चाहती है पर निश्चेष्ट पड़ी रहती है।

वैनिटी आफ वैनिटीज !—सेथ प्रीचर; ऑल इज वैनिटी !—सब झूठा आडम्बर है !—मैडेलीन, डॉक्टर की आंखों से अवास्तविक प्रोत्साहन के भावों से चिढ़ कर आंखें मूंद लेती है। सिर्फ विज्ञप्ति भर है उसके साहस की बात, जिसकी आधार-वस्तु कोई नहीं क्योंकि वह अपने अन्तर के तार-तार को सहसा उधड़ते देख चुकी है। पारफीरो की कहानी का स्वेटर, जिसे उसने एक-एक फन्दा करके बुना था किसी एक फन्दे के छूट जाने से एकदम खुल गया।

"उसका क्या नाम रक्खोगी ?"—विल्सन पूछता है।

"अगर वह लड़का हुआ तो मैं उसे पारफीरो नाम दूंगी।"

"नहीं।"

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। पारफीरो मैडेलीन का प्रेमी था। मैडेलीन भी उसे बहुत प्यार करती थी। इसीलिए कि मैं अपने बच्चे को प्यार करूं और मेरा बच्चा मुझे, मैं उसका नाम पारफोरी रखूंगी। मेरा नाम मैडेलीन जो है !"—मैडेलीन कहती है।

"पर तुम्हारा वह बच्चा लड़की भी हो सकता है !"

"मैं चाहती हूं ! मैं चाहती हूं !—पर अगर वह लड़की ही हुआ…"

झूठ ! सब झूठ है ! वैनिटी अव् वैनिटीज—सेथ प्रीचर·· दाई सन्स एण्ड दाई डॉटर्स शैल बी गिवेन अण्टू एनदर पीपुल एण्ड दाइन आइज शैल लुक एण्ड फेल विद लांगिङ् फार देम ऑल दि डे लाङ् : ऐण्ड देयर शैल बी नो माइट इन दाइन हैण्ड !···तेरे बेटे और बेटियां तुमसे छिन जायेंगे—वे कहते हैं—और तेरी आंखें देखती रह जायंगी, असमर्थ, सारे दिन उनके लिए हसरत भरा इन्तजार करती हुई और तेरे हाथ बेवस होंगे···

मैडेलीन चाहती है कि डॉक्टर की आंखों के झूठे आश्वासन से बचने के लिए चेहरे पर कम्बल खींच ले, पर वह सिर्फ आंखे बन्द करके रह जाती जैसे हाथ बेबस हो गये हों। तेरे बेटे और बेटियां तुझसे छिन जायंगे और

तू देखती रह जायगी···मैडेलीन पारफीरो के शव को हसरत भरी आंखों से इन्तजार करती हुई सारा दिन देखती रहना चाहती है।

"मैं चाहती हूं! चाहती हूं!"—आई विश! आई विश···मैडेलीन ने विल्सन से कभी कहा था पर···

दाइन आइज शैल लुक एण्ड फेल विद लांगिङ्···हसरत की असमर्थता मैडेलीन के मन के एक-एक तार को पारफीरो के बुने हुए ख्वाब की तरह उधेड़ देती है···

बाई दि नाइट आन माई बेड आई सांट हिम हूम माई सोल लवेथ; आई सॉट हिम बट आई फाउण्ड हिम नॉट ·· रात को मैंने अपने बिस्तर पर उसकी तलाश की जिसे मेरी आत्मा प्यार करती थी पर वह मुझे नहीं मिला—तेरे बेटे और बेटियां मुझसे छिन जाएंगे—उसके पारफीरो का ख्वाब छिन गया!

मैडेलीन आंखें बन्द कर लेती है तो उसका दिल और ज्यादा बेचैन हो उठता है···आई स्लीप बट माई हार्ट वेकेथ; इट इज द वायस अव् माई बिलवेड दैट नॉकेथ, सेइङ्, ओपेन टु मी माई लव, माई डॅव···नींद में भी दिल जागता है, प्रिय, दरवाजे पर दस्तक देता है, कहता है, मेरे लिए दरवाजा खोल दो।

आई ओपेण्ड टु माई बिलवेड; बट माई बिलवेड हैड विड्रॉन हिम-सेल्फ एण्ड वाज गॉन···आई सॉट हिम बट आई कुड नॉट फाइण्ड हिम; आई काल्ड हिम बट ही गेव मी नो आॅन्सर···द सांग अफ् सांग्स ह्विच इज सालोमन्स!···लेट हिम किस मी विद द किसेज अव् हिज माउथ···

अपने प्रियतम के लिऐ मैंने द्वार खोल दिए लेकिन वह वापस लौट गया था···मैंने उसे खोजा, पर वह नहीं मिला, मैंने उसे पुकारा पर उसने कोई जवाब नहीं दिया·· सालोमन के गीतों का यह गीत···काश वह अपने होंठों से मेरा एक चुम्बन ले सकता···

लेकिन वह वापस चला गया। जिसे खोजा भी, पर वह मिल न स जो खो गया था टाम की कायरता के साथ, जो खो चुका था असमर्थता के साथ, वह वापस नहीं मिला।

आदम के बेटे ने अपने भाई की हत्या के एवज में

कर कहा था—माई पनिशमेण्ट इज ग्रेटर देन आई कैन बेयर···इसे मैं झेल न सकूंगी···

खामोश मैंडलीन आंखें बन्द किए लेटी रहती है, नार्थ छज्जे पर नीली घंटियों की लतर के पास टहलते रहते हैं। मेडोरा प्यानो पर कोई अधूरी सी सिम्फनी बजाने की कोशिश करती है, दूर से थकी-थकी सी आवाज—क्लिङ्-क्लिङ्—

सो विल आई स्ट्रेच आउट माई हैण्ड अपान देम एण्ड मेक द लैण्ड डेजोलेट या मोर डेजोलेट दैन वाइल्डरनेस···

नीली घंटियां स्तब्ध होकर इस भयानक अभिशाप को सुनती हैं।

दे शैल सीक पीस एण्ड देयर शैल बी नन !···

वह जो सुकून है उसकी तलाश करेगी मैंडेलीन; पर सुकून उसे नहीं मिलेगा ! नीली घंटियां साहसी हुई सिर हिलाती हैं, प्यानो की क्लिङ्-क्लिङ् निरर्थक भटकती है। दे शैक सीक पीस एण्ड देयर शैल बी नन···

जिसका इन्तजार था, जो उसकी जिन्दगी का सुकून था वह नहीं मिला। मैंडेलीन की खुशियों का जेरुसलम ढह गया। प्रभु ने शाप दिया था कि ईंट पर ईंट भी नहीं बचेगी। मैंडेलीन की जिन्दगी का तमाम महल उसके मृत शिशु की एक झलक से यों खाक हो गया जैसे टेरेण्टेला ने किसी चरवाहे को डस लिया हो और वह सहसा गाते-गाते निष्प्राण होकर गिर पड़ा हो।

यह क्या है जो इतना बेसहारा है ? यह क्या है जो इतना असहाय है ? यह क्या है जो महज एक मरे हुए बच्चे की पैदाइश की घटना भर से उजाड़ से भी ज्यादा हो जाता है ? पारफीरो का न आ पाना ही क्या इतना हैबतनाक हो सकता है ?

नहीं, इन सवालों का जवाब भी एक सुकून देता है और सुकून को उस देवता की वाणी ने इस दुनिया में रहने से वर्जित किया था।

आई विल ग्रेटली मल्टीप्लाई दाई सारो···तेरे दर्द को मैं बहुत बड़ा कर दूंगा—उसने कहा था और ईव को भी ईडेन से निकाल दिया था।

मैंडेलीन ने चाहा था—गलत चाहा था मैंडेलीन ने, ब्लू बेल इस सत्य को मानती हैं इसलिए वे अपनी जिन्दगी में कभी ऐसी गलती नहीं करतीं। घण्टियां होकर भी वे कभी बजने की कोशिश नहीं करतीं ! उसके दण्ड को

झुक कर झेलो और खामोश होकर इबादत करो, उससे दुआ मांगो कि वह गुनाहों को मुआफ करे। सिर्फ दुआ मांगो, पाने के लिए हाथ मत फैलाओ। इन्तजार करो, खामोशी से आखरत का।

मैडेलीन सब के मना करने पर भी अगले दिन बिस्तर से उठ पड़ी। नार्थ नाश्ता कर चुकने के बाद उसकी खैर-खबर लेने के लिए आ रहे थे, पर छज्जे पर ही ठिठक रहे। मैडेलीन को उठा हुआ देखकर एक बार उन्हें लगा कि मैडेलीन को मना करना चाहिए पर मैडेलीन ऐसी नाजुक स्थिति में खड़ी थी कि वे खामोश देखते रह गये। मैडेलीन की पीठ उनकी तरफ थी। उसके हाथों में नायलन वाली खूबसूरत गुड़ियों का जोड़ा था, जिनके बाल सुनहले रेशम के थे। वह देर तक एकटक ज्यों की त्यों खड़ी उन्हें देखती रही, फिर बहुत आहिस्ता से उन्हें आंखों से लगाकर घुटनों के बल बैठ गयी। फर्श पर सोफे के पास उसका सूटकेस रखा था। धीरे से उसका ढक्कन खोलकर दोनों गुड़िया उसने अन्दर रखीं, ढक्कन बन्द किया और बैठे-बैठे ही अल्मीरा की तरफ आंखें उठायीं। सहसा एक झटके के साथ वह सूटकेस पर झुक गयी और दोनों हथेलियों पर आंखें टिका लीं। नार्थ ने देखा कि एक क्षण के बाद उसके कन्धों में एक कम्पन हुआ और फिर एकदम सारा शरीर कांपने लगा। मैडेलीन रो रही थी।

नार्थ सहसा कोई निश्चय न कर सके। कमरे में आकर भी मैडेलीन से कुछ कहने का साहस न हुआ। उन्होंने चाहा कि वे एक बार उसकी पीठ थपक दें; पर उनसे दर्द का वह कम्पन छुआ न जा सका। मैडेलीन ने सिर नहीं उठाया। नार्थ बहुत देर खड़े रहे, पर मैडेलीन के दर्द का वह कम्पन बन्द न हुआ। नार्थ चुपचाप लौट आये।

यों कहानी सिर्फ इतनी ही नहीं है। कहानी आगे भी चलती रहती है, पर वह गैरजरूरी है। कम से कम इस एक जीवन-स्थिति की व्याख्या के लिए जरूर अनावश्यक है। नार्थ चाहते थे कि वे मैडेलीन के दर्द को बांट लें। वे उसे जीवन को झेलने में सहारा दें। वैसे इस बारे में वे अपने को बहुत ईमानदार पाते थे कि मैडेलीन के टूटे हुए मन को सहायता भर ही

देते; लेकिन मैंडेलीन ने उसे स्वीकार न किया। नार्थ इसीलिए निश्चय करते हैं कि वे रोजी की सेवा करें। मेडोरा उन्हें पैसे भी अपनी तनख्वाह के बड़ी निश्चिन्तता से दे देती है ताकि नार्थ उसके नवयुवक प्रेमी के लिए एतराज न करें। लेकिन जिस दिन नार्थ पहली बार रोजी के इंजेक्शन के नाम पर पचास रुपए देकर लौटते हैं वे देखते हैं कि मेडोरा बुरी तरह रो-रो कर खांस रही है।

मेडोरा की खांसी, जिसने इधर उसे थोडी फुरसत दे रखी थी, दुबारा उभर आयी है वह भी सिर्फ कुछ घंटों में ही; क्योंकि उसके प्रेमी ने जबरदस्ती उसके साथ सब कुछ कर डालने के बाद आज चेहरा भी नहीं दिखाया। मेडोरा, काफी इन्तजार करने के बाद उसके दिये हुए पते पर खोजने गयी तो मालूम हुआ कि उस नाम का कोई आदमी वहां नहीं रहता। मेडोरा खूब खांस रही है, शायद रात भर खांसेगी और मैंडेलीन अपने उसी सूटकेस के ऊपर एक बड़ी सी मोमबत्ती रख कर बाईबिल पढ़ने की कोशिश कर रही है।

ब्लू बेल की लतर में कई दिनों से एक भी फूल नहीं निकला। हल्की-हल्की रात की हवा में उसकी कँटीली पत्तियां झुर-झुरी लेकर उदास हो जाती हैं। उन्हें ऐसी कहानी पर खेद होता है जिनकी गवाह होकर उनके फूल नहीं खिलते। ब्लू बेल की लतर प्रतीक्षा करती है कि शायद मैंडेलीन बाइबिल का वह आखिरी हिस्सा पढ़ ले; जिसे ईशु ने लिखा है कि वह, जो मेरे उपदेशों की इस किताब से कोई अंश काट देगा, उसकी जिन्दगी से ईश्वर एक अंश काट लेगा। ब्लू बेल का खयाल है कि जरूर मैंडेलीन ने कहीं न कहीं पैगम्बर की वाणी में कुछ अवांछित विकार डाला होगा, तभी प्रभु ने उसकी कहानी को यों अनायास कुंठित कर दिया। न जाने कैसे यह भूल हो गयी। मुमकिन है यह भूल मैंडेलीन से न हुई हो, किसी और से ही हुई हो। ठीक तो है, भूल तो उसी दिन हुई थी जिस दिन पहले-पहले इन्सान ने वर्जित फल खा लिया था। उसने कहा था—इफ एनी मैन शैल टेक अवे फ्राम द वर्डस आफ द बुक आफ दिस प्रॉफेसी, गॉड शैल टेक अवे हिज पार्ट आउट आफ द बुक आफ लाइफ···वही हिस्सा, मैंडेलीन की कहानी का वही सुखान्त छोर उसने ले लिया। अब गनीमत है, अगर मैंडेलीन इस आखिरी अंश को पढ़ ले। ब्लू बेल प्रतीक्षा करती है कि वह इसे पढ़े; पढ़ कर अभिज्ञान को पूरा कर ले ताकि फिर नीली घंटियों में फूल फूल सकें। ग्रेस आफ जीसस क्राइस्ट बी विद ऑल—आमीन !

मुद्राराक्षस (ज० १९३३) इस समय सबसे अधिक उत्तेजक और समर्थ साहित्यकार के रूप में ख्याति अर्जित कर चुके हैं। उनका नाम अनेक रचनात्मक विधाओं में स्वयं एक मानक बन चुका है। एक भाषा सिद्ध शिल्प समर्थ और अत्यन्त संवेदनशील उपन्यासकार के रूप में उनका अपना अलग और महत्वपूर्ण स्थान है। उनके उपन्यासों में समय और समाज से उनकी सकारात्मक संलग्नता ने उनकी रचनाओं को साहित्य की बहुमूल्य धरोहर बनाया है।

मुद्राराक्षस के अन्य उपन्यास :

अचला एक मनस्थिति

भगोड़ा

शोक संवाद

मेरा नाम तेरा नाम

शान्तिभंग

प्रपंचतंत्र